THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180485

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY
Call No. H83|T24P Accession No. G.H. 911
Author चैंकर, इवान |
Title पुराना नौकर | 2012 V.S
This book should be returned on or before the date last marked below.

पुराना नौकर

मूल लेखक
इवान त्चैंकर

अनुवादक
रामपालसिंह

मोतीलाल बनारसीदास
बनारस : दिल्ली : पटना

प्रकाशक :
मोतीलाल बनारसीदास,
७८ चांदनी चौक,
दिल्ली

संवत् २०१२
मूल्य :
दो रुपए

मुद्रक :
सुरेन्द्र प्रिन्टर्स लि०,
डिप्टीगंज,
दिल्ली

EMBASSY
OF THE FEDERAL PEOPLE'S REPUBLIC OF
YUGOSLAVIA
NEW DELHI

मुझे हर्ष है कि युगोस्लाव साहित्य के एक अनुपम रत्न "बेलिफ यर्ने ऐंड हिज वस्ट्स" शीर्षक उपन्यास का, जिसके लेखक श्री इवान त्सैंकर हैं, "पुराना नौकर" शीर्षक से हिन्दी रूपान्तर प्रकाशित होरहा है ।

मेरी राय में यह कार्य बड़ा महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह प्रथम अवसर है जब एक युगोस्लाव उपन्यास भारतीय भाषा में प्रकाशित होरहा है । भारत और युगोस्लाविया के मध्य सांस्कृतिक आदान प्रदान के इस समारंभ पर मुझे प्रसन्नता है और आशा है कि इस सहयोग को व्यापक बनाने के प्रयत्न आगे भी जारी रहेंगे ।

जिन व्यक्तियों ने इस महान कार्य को सम्पन्न करने में हाथ बटाया है और इस दिशा में पहल की है, मैं उन सबको अपनी हार्दिक बधाई देता हूं ।

युगोस्लाव संघ जनराज्य के भारत स्थित
राजदूत

नई दिल्ली, ३० जनवरी, १९५९

सत्य का गायक :
इवान त्चैंकर

इवान त्चैंकर की गणना युगोस्लाविया के प्रमुख लेखकों में की जाती है। उनका जन्म स्लोवीनिया के एक गाँव में १० मई, १८७६ को हुआ था। ११ दिसम्बर, १९१८ को स्लोवीनिया की राजधानी ल्युबलियाना में उनका देहावसान हुआ।

त्चैंकर से जुदा हुए युगोस्लाविया की जनता को अभी मुश्किल से चालीस साल हुए हैं। लेकिन, कालचक्र उनके जीवन और उन परिस्थितियों को, जिनमें वह रहे, ऐसा प्रतीत होता है कि काफी पीछे छोड़ आया है। हाँ, उनकी कृतियां आज भी युगोस्लाव-जनता के निकट हैं।

१९-वीं शताब्दी के अंत और २०-वीं शताब्दी के प्रारम्भ में स्लोवीनिया के साहित्य में आधुनिकता का उदय हुआ। यह काल ऐसा था जब साम्राज्यवाद का उत्कर्ष हुआ और आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्यवादियों की सर्वेसर्वावादी भावनाएं और प्रवृत्तियां दृढ़ हुईं। इसी युग में स्लोवीनिया में श्रमिक आन्दोलनों का आरम्भ हुआ और उसकी जड़ जमी। प्रेशरेन के बाद स्लोवीन-साहित्य अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँचा।

स्लोवीन साहित्य के उन्नयन में चार व्यक्तियों का हाथ रहा : द्रागोतिन केटे, योसिप मुर्न अलेक्जांद्रोव, ओटोन जुपानचिच और इवान त्चैंकर।

वर्जिनिया उल्फ ने लिखा है : "मिथ्या और पाखंड को छोड़कर, लेखक के लिए कोई सीमाबन्ध नहीं, उसका भावाकाश अनन्त और अछोर है, वह सर्वतोगोमहान है, कोई तौर-तरीका

नहीं, कोई प्रयोग नहीं।

"सत्य का उद्‌भासन ही उसका काम है। सत्य के प्रति उसकी आस्था इतनी दृढ़ हो कि अपने अनुभवों से वह जो भी आविष्कार करे वह सत्य की साक्षात् प्रतिमा हो। सत्य को विकृत देखा जा सकता है, पर जब कोई अच्छा कलाकार या लेखक कुछ लिखता है तब उसके पास पर्याप्त साधन और क्षेत्र रहता है कि उसे पूर्ण सत्य के रूप में प्रस्तुत कर सके", ये शब्द हैं अर्नेस्ट हेमिंग्वे के।

काल, क्रम, भाषा, शैली सभी दृष्टियों से इवान त्चेंकर सत्य के उद्‌भासक रहे। औपचारिक दृष्टि से स्लोवीन-साहित्य में आधुनिकवाद १९-वीं शताब्दी के अंत और २०-वीं शताब्दी के आरम्भ में युरोप की प्रधान धारा से सम्बद्ध है। लेकिन, त्चेंकर की साहित्यिक गतिविधियों के विकास के हर सोपान में उनका विलक्षण रचनात्मक व्यक्तित्व, जो प्रतीकवादी, प्रभाववादी, और यथार्थवादी शैली में समान उद्दात्तता से अभिव्यंजित हुआ, सत्य की उसी एक विलक्षण आभा से जगमगा रहा है। यही कारण है कि उनकी रचनाओं का प्रभाव चिर-स्थायी रहता है। और उनकी रचनाएं चाहे जहाँ और चाहे जब प्रकाश में आयें, उनका प्रभाव स्थायी ही रहेगा।

त्चेंकर की तरुण भावनाएं कविता के रूप में प्रस्फुटित हुईं। उनकी कविताओं का संकलन "एरोटिका" नाम से १८९९ में प्रकाशित हुआ। कैथोलिक बिशप येगलिच ने उस संस्करण की सभी प्रतियाँ खरीद लीं और उन्हें जलवा दिया। "एरोटिका" में जिस सत्य को कवित्वपूर्ण भाषा में उपस्थित किया गया था, उससे न केवल बिशप भड़क उठा था, बल्कि

उदार प्रगतिशील मध्यम वर्गीय क्षेत्रों ने भी—त्चैंकर के शब्दों में जो "देशभक्त" थे—यह अफवाह उड़ायी कि कवि पागल हो गया है।

इस प्रकार कवि त्चैंकर ने अपनी सर्जनात्मक शक्ति का श्रीगणेश किया। "वर्ज्दनेत्स" और "ए बुक फॉर थॉटलेस पीपुल" शीर्षक से लघु कथाओं के संकलन प्रकाशित हुए। "दि स्ट्रेंजर्स ऐट दि रेवाइन", "दि हाउस ऑव मरिया पोमोचनित्सा", उपन्यास, "दि लाइफ एण्ड डेथ ऑव दि पोएट नोवल्यान", व्यंग्य रूपक "मदाम जुदित", "दि क्रॉस ऑन दि माउन्टेन", उपन्यास "मार्टिन कत्चूर", कहानी "निना", गद्य खण्ड और कहानियाँ "दि डेथ एण्ड व्यूरियल ऑव जैकब अनलकी", "मारथा", व्यंग्य "एलेस फ्राम राजोर", "पोहुइशानिये इन दि सेंट फ्लोरियन वैली", "क्रपान्स हट", "एडवेंचर्स फ्राम दि सेंटफ्लोरियन वैली", "दि व्हाइट क्रिसान्थियम", कहानियाँ "कुरेन्ट" "नेबर लुका","मिलान एण्ड मिलेना", "दि विल एण्ड दि माइट", आदि प्रकाशित हुईं। इनके अतिरिक्त इवान त्चैंकर ने "जैब रुदा", "फॉर दि गुड ऑव दि पीपुल","दि किंग एट बेताइनोवा" और "सर्वेण्ट्स" नाटक भी लिखे।

उनकी अंतिम कृति "विजन फ्राम ए ड्रीम" है। इसे उन्होंने प्रथम महायुद्ध के यातनापूर्ण किन्तु आशाप्रद दिनों में सन् १९१७ में लिखा था। उनकी इस रचना से स्पष्ट है कि त्चैंकर सामान्य जन और समूची मानवता की शांति, सामाजिक न्याय, और राष्ट्रों में समानता की आकांक्षा के प्रचारक थे।

ल्युबलियाना के कपटी बिशप और स्लोवीनिया के चतुर राष्ट्रभक्त उस सीमा से बाहर जा चुके थे, जहाँ उन्हें क्षमा

किया जा सकता था, और तभी वे इतिहास के पृष्टों में कलंक के टीके की भांति लगे हैं। लेकिन, इवान त्वेंकर ने अपने जीवन-काल में जो रचनाएं कीं वे आज भी जीवन को आलोकित कर रही हैं।

"पुराना नौकर" शीर्षक उपन्यास पहले-पहल सन् १९०७ में प्रकाशित हुआ था। मनुष्य अपने अधिकारों को मनवाने के लिए जो संघर्ष करता चला आ रहा है, उसको चित्रित करने वाली यह एक अद्वितीय कृति है।

"पुराना नौकर" सबसे पहला युगोस्लाव वांङ्मय है, जिस का हिन्दी में अनुवाद हुआ है।

अच्छा हो कि पाठक स्वयं उसको पढ़ कर निर्णय करें।

हिन्दी भाषा में अनुवाद के लिए इस पुस्तक को चुनने और कार्य को सम्पन्न करने के लिए श्री रामपालसिंह अवश्य बधाई के पात्र हैं।

—चेदोमिर मिन्दरोविच

नई दिल्ली,
३०, जनवरी, १९५६

अपनी बात

दो वर्ष पूर्व की बात है। मेरे विदेशी मित्र श्री ब्रेंकों राइच और श्री चेदोमिर मिन्दरोविच ने विदेशी साहित्य पर आपसी वार्त्तालाप के समय इवान त्वैंकर के उपन्यास "बेलिफ यर्ने एण्ड हिज जस्टिस" की चर्चा की थी। हम भारतीयों ने मुख्यतः ब्रिटिश और फ्रेंच लेखकों की कृतियाँ पढ़ी हैं। उनके बारे में हमारा ज्ञान भी विशद हो सकता है। किन्तु वह सीमित है, इसलिए कि हमारी जानकारी उन्हीं के साहित्य में बंध कर, उलझ कर रह गई है।

परन्तु विश्व विशाल है। इस रत्नगर्भा बसुन्धरा में कहाँ क्या छिपा है, इसका ज्ञान तो तभी संभव है, जब जिज्ञासु खोज करें।

हाँ, तो मेरे उपरोक्त मित्रों ने त्वैंकर के बारे में उस वार्त्तालाप के समय जो कुछ कहा था, उससे मैं प्रभावित हुए बिना न रह सका। उसके बाद जब इस उपन्यास को पढ़ने का अवसर मिला तब तो त्वैंकर के प्रति मेरी श्रद्धा और बढ़ गई जिसके परिणामस्वरूप उनका "बेलिफ यर्ने" उपन्यास हिन्दी में छप कर आपके हाथों में पहुँचा।

त्वैंकर उस काल में हुए जब युगोस्लोविया आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य का अंग था। भाषा और सांस्कृतिक वैषम्य के बावजूद वियना के शासक युगोस्लाविया के जिस भाग पर अपना लौह-चरण जमाए बैठ थे, उससे जनता का त्रस्त और उत्पीड़ित होना स्वाभाविक था।

त्वेंकर जैसे यथार्थवादी लेखक ने जनता की इस भावना को समझा और उसका उसी रूप में चित्रण किया।

इस उपन्यास का नायक "नौकर यर्ने" तत्कालीन युगोस्लाविया की जनता की भावनाओं का प्रतीक है। उन भावनाओं का प्रतिनिधि है, जो न्याय पाने और स्वतन्त्र होने को आकुल थीं, जो अपने श्रम के फलों का उपयोग स्वयं करना चाहती थीं। वह न्याय पाने के लिए, यह जानने के लिए कि "सेब के फल किसके हैं ? उसके, जिसने पेड़ लगाए, मेहनत की अथवा उसके जिसने किसी अज्ञात स्थान से आकर उनको बीन लिया ?" छोटी-बड़ी अदालतों में धक्के खाता हुआ शाही दरबार तक पहुँचने का प्रयत्न करता है। परन्तु छोटे बड़े और यहाँ तक कि वियनास्थित शाही दरबार से भी उसे न्याय नहीं मिलता। निराश होकर "नौकर" स्वयं न्याय करता है।

त्वेंकर ने इस उपन्यास के रूप में विश्व के पराधीन देशों को जो सन्देश दिया और शासक-राष्ट्रों एवं वर्गों को जो चेतावनी दी है, वह चाहे जितने वर्ष बाद और जहां भी सुनी जायगी, उसका महत्व होगा। क्योंकि "न्याय और अधिकारों की वास्तविकता पर पर्दा नहीं डाला जासकता।"

त्वेंकर ने आज से लगभग ३८ वर्ष पूर्व अपनी इहलीला समाप्त की, परन्तु उनकी कृतियों ने युगोस्लाव जनता में न्याय और अधिकारों के प्रति जैसी उद्दाम भावनाएं भरीं, उन्हीं का परिणाम है कि आज युगोस्लाविया छोटा होते हुए भी स्वतन्त्र है और अपने अस्तित्व को बनाए रखकर तेजी से प्रगति कर रहा है।

माँ भारती के चरणों में अपनी श्रद्धा और सेवा के पुष्प

अर्पित करने की जो लालसा मुझमें है, यह उसका प्रथम पुष्प है। माँ भारती के चरणों पर जो स्वर्ण पारिजात चढ़े हैं, उनकी तुलना में मेरा प्रयास नगण्य हो सकता है, पूजा-अर्चा की विधि न जानने के कारण, मेरा आयोजन दोषपूर्ण होसकता है, किन्तु माँ भारती और उसके लक्ष-लक्ष उपासक मेरी भावनाओं का तो आदर करेंगे ही, क्योंकि :

"जौ लरिका कछु अचगरि करहीं,
गुरु पितु मातु मोद मन भरहीं।"

और

"संत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि बारि बिकार।"

नई दिल्ली, —रामपालसिंह
३० जनवरी, १९५६

पुराना नौकर

एक

यह अन्याय और शोकपूर्ण घटना जैसे घटित हुई उसकी सच्ची कहानी मैं आपको ज्यों की त्यों सुना रहा हूँ। इसमें न तो कोई झूठी बात है और न कोई अदल-बदल ही की गई है।

बेताइनोवा के निवासियों ने भयभीत होकर जड़वत् अपने सर झुका लिये। एक रहस्यमयी छाया, काले प्रेत की भांति, पहाड़ी पर उठी और उसने सारी घाटी को ढक लिया, उसका मस्तक श्यामल मेघ, उसके पैर घाटी में चिनार के विशाल वृक्ष और उसके कन्धे पर एक चमकदार हँसिया था, जिसकी आभा ल्युबलियाना तक फैल गयी थी।

बूढ़ा शीतार अभी-अभी दफनाया गया है। भगवान् करे वह स्वर्ग पहुँचे। वह रईस था। शोकसूचक घंटियों का स्वर थम गया था, पादरी ने भी अपना लबादा, जिसे उसने अंत्येष्टि-क्रिया कराने के समय धारण किया था, उतार दिया और शव के साथ जो लोग आये थे, वे भी जा चुके थे। सभी स्त्रीनार सराय में एक लम्बी मेज पर जा बैठे। सभी शोक-सूचक वस्त्र पहने, गंभीर और विचार-मग्न! महिलाओं की आंखों के आँसू अभी सूखे नहीं थे। बूढ़ा नौकर बार्थोलोम्यू, जिसका कद लम्बा और बाल पक गए थे, खिड़की के पासवाली मेज पर जा बैठा। उसने लाल रुमाल से आंखें पोंछी और गहरी साँस ली : "एक न एक दिन सबको मरना है, और अब तो मेरी ही बारी है।"

नया मालिक, बूढ़े शीतार का बेटा, बोल उठा : "वाह यर्ने, तुम तो वहां आराम से ऐसे जा बैठे मानो तुम्हीं मालिक हो। उत्तराधिकारी कौन है : तुम या मैं ? यों ही सबसे पहले तुम्हीं बोल उठे, हालांकि तुम यहाँ के अगुवा नहीं और न तुम्हारा नम्बर ही पहला है।"

यर्ने मुस्कराया और उसकी ओर देखता रह गया।

"तुम सदा के शरारती हो, टौनी, और आगे भी शरारती बने रहोगे। इसीलिये तुम दुःख में न डूबो, यही उचित है। आँसू स्त्रियों के लिए, और मदिरा पुरुषों के लिए है।"

वह शराब से भरा गिलास मुंह तक ले गया, पर औरों ने उसका साथ न दिया।

इससे पूर्व कि उसके होठ लबरेज गिलास का स्पर्श करते, यर्ने ने गिलास वापस मेज पर रख दिया। अवाक् उसने मालिक और उसके परिवार के लोगों को देखा, पर वहाँ सभी के चेहरे विकृत, भावशून्य और ग़मगीन थे।

"क्या बात है ?"

सबकी आँखें मौन थीं और कोई बोल नहीं रहा था, यर्ने सिहर उठा, मानो उसके हृदय को कोई गहरी ठेस पहुँची हो।

"आखिर माजरा क्या है ? क्या मैं कंजरों या मवेशियों के सौदागरों के बीच हूँ जो सभी गुमसुम मेरी ओर ताक रहे हो ? (मैं किसी परिवार में हूँ या ऐसे बदमाशों के बीच, जो मुझे फँसाने के लिए जाल रच रहे हैं।)"

"नौकर", शीतार बोल उठा, "गाली मत बको ! शराब पी नहीं, मतवाले पहले ही हो गए।"

यर्ने ने चारों ओर नजर दौड़ाई, तीन बार, एक-एक

चेहरे को देखा, और फिर गिलास की शराब वापस बोतल में डाल दी। वह शराब धीरे-धीरे उड़ेल रहा था। उसके हाथ काँप रहे थे। वह उठ खड़ा हुआ। सर से टोपी उतार ली। उसे दोनों हाथों से पकड़े रहा। मेज के पीछे खड़ा था वह, झुका हुआ लम्बा कद, इतना लम्बा कि उसके पके बाल छत की काली कड़ियों को छूते से प्रतीत हो रहे थे। यर्ने खड़ा था, धूप से झुलसा झुर्रियोंदार चेहरा, दाढ़ी भी ढंग से नहीं बनी थी। घनी भौहों के नीचे उसकी तेज आँखें चमक रही थीं।

"मालिक और मेरे अन्य दोस्तो, जो सब मालिक के ही परिवार के हैं, आप में से किसी को भी यह शोभा नहीं देता कि क्रिया-कर्म के मौके पर मुझे शराब का एक घूंट पीने से भी वंचित करे। आपकी दावत भगवान आपको सलामत रखे, मुझे उसकी कोई शिकायत नहीं। अगर आपने नया नियम बनाया है तो मैं उसका पालन करूँगा। जवानों को रोटी, बूढ़ों को पत्थर, तन्दुरुस्तों को मछली, अस्वस्थों को सांप, समर्थों को अंडे और असमर्थों को बिच्छू ..... जिसे मालिक ने बनाया हो उसे बिगाड़ना काम नौकर का नहीं।"

शीतार गुस्से से तमक उठा।

"यर्ने, हमें तुम्हारे उपदेशों की जरूरत नहीं," उसने कहा, "अगर तुम शराब नहीं चाहते तो न सही, ठीक है : ईश्वर तुम्हें भी देखेगा।"

"यर्ने, तुम समझ रहे हो मानो मालिक के भी मालिक हो," उसकी स्त्री बोली।

"जिस घर में नौकर चिमनी के कोने पर चढ़ कर बैठे और अपने जूते मालिक की पीठ में पोंछे तो समझ लो कि उस

घर में ही कुछ खराबी है।" शीतार की सास बोली।

"जहाँ रास नौकर के हाथ हो और गाड़ी मालिक खींचे तो बस समझ लो कि गाड़ी आगे चलने के बजाय पीछे को ही ढुलकेगी," साला बोला।

"नौकर छाया में बैठे और मालिक हल चलाए तो बस समझ लो कि खेती चौपट हुई," पड़ोसी बोला।

जब सभी अपनी-अपनी कह चुके तो यर्ने ने एक बार फिर अपना सर झुका लिया।

"आप सबने समझदारी की बातें कहीं, आपकी कोई बात न्याय-विरुद्ध नहीं। भगवान आपकी दावत मुबारक रखे। मुझे सुमति दे और मेरे पापों का परिष्कार करे।"

यर्ने ने इतनी बात कही·····इतना कह कर उसने देहली के बाहर पच् से थूक दिया और चलता बना।

दो

मैदानों को पार करता हुआ वह एक नाले के किनारे से गुजरते हुए टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर बढ़ा चला जा रहा था। नाले का पानी प्रायः सूखते-सूखते कुछ दूर जाकर सफेद रेती में खो गया था। मई के दिन थे, बेहद गर्मी थी, पत्ता तक न हिलता था। पर दूर, काफी दूर, हरियाली से ढके पहाड़ों के पीछे आसमान का रंग बदल रहा था। मैदानों में, चरागाहों में पूर्ण निस्तब्धता थी, प्रकृति जैसे विनाश की आशंका से शंकित साँस रोके खड़ी थी।

दूर ढलान के नीचे यर्ने ने जब उस सफेद मकान को देखा—हरी खिड़कियाँ, छप्पर, खलिहान और खत्ती—तब उसका हृदय भर आया। मिट्टी के कण-कण पर उसके परिश्रमी हाथों की छाप, उसके पसीने की बूंदों के चिन्ह

अंकित थे। मनुष्य साल, दस साल, चालीस साल तक एक मकान में रहता है, स्वाभाविक है कि उस मकान से उसे स्नेह हो जाता है, वह उस घर को अपना भाई समझने लगता है और दोनों एक प्रेम-डोर में बँध जाते हैं। किन्तु; यदि किसी कटु आदेश को मान कर उसी व्यक्ति को किसी दूर स्थान को जाना पड़े तो वह रोयेगा उस घर के प्रति—भाई के विछोह से भी अधिक, शायद उतने से भी ज्यादा जितना कि एक बार वह अपनी माँ के लिए रोया था।

यर्ने को लगा मानो आज वे हरी खिड़कियाँ उसे चिर-परिचित संकेतों से आमंत्रित नहीं कर रहीं और जैसे उस मकान पर, उस समूचे सफेद मकान पर वैधव्य का शोक छा गया है।

शोक एक ऐसा बीज है जो हजार गुना बढ़ता है। यह बीज हृदयरूपी धरती पर पड़ते ही इतनी तेजी से उगता और फैलता है कि समूचे हृदय को ढक लेता है, ऐसा घोंटता है कि फिर आशा की लता पनप नहीं पाती। यर्ने का हृदय चोट खाकर भारी हो गया, बहुत भारी, महान् शोकातुर!

जिसने दुःख कभी नहीं देखा, न अपनी जवानी में और न अपनी ढलती उम्र में, उस बूढ़े को आखिर तुमने चोट क्यों पहुँचाई? मालिक, क्या मिला तुमको? आखिर तुमने अपमान क्यों किया, क्यों कोशिश की बुढ़ापे में चोट पहुँचाने की?

यर्ने घर नहीं गया, उसने खेतों की ओर भी नहीं देखा, सीधा खलिहान पहुँचा, पुआल पर लेट रहा और सोच-विचार में डूब गया। उसके मन में नाना प्रकार के तर्क-वितर्क उठने लगे।

मुझे यहाँ आये हुए चालीस वर्ष पूरे हो रहे हैं। चालीस साल पहले मैंने इस घर की दहलीज के भीतर कदम रखा था। तब घर की दशा बड़ी दयनीय थी, इतनी कि मालिक और नौकर दोनों को ही उस पर शर्म आती थी। परन्तु हमने पसीना बहाया और मकान बनाया, ऐसा जिस पर अब मर्दों को गर्व है और जहाँ रहकर औरतें खुश हैं। पर इसे बनाया किसने ? सभी मर गये, खत्म हो गये, अकेला मैं बाकी हूँ : मैं, आखिरी मालिक ! हमारा घर दूर-दूर तक फैले उपजाऊ खेतों से नजर आता है। पर उन खेतों को किसने तैयार किया ? किसने उनका विकास किया ? सभी चले गये, अकेला मैं बचा हूँ : मैं अन्तिम हलवाहा, अन्तिम कटवाह ! कितनी अजीब बात है। चालीस साल से सेब के दरख्त, जो बगीचे की शान हैं, जिन पर मालिक को गर्व है, फूलते फलते आ रहे हैं ····· पर सहसा एक अजनबी आता है, चाहता है कि उन पेड़ों को उजाड़ कर उन्हें दुबारा चट्टानों पर रोपे। कितनी अजीब बात है ? एक आदमी ने चालीस साल तक मेहनत की है, घर बनाया है, खेत और चरागाह उपजाऊ बनाये हैं और यह सब खून-पसीने से ! ····· पर जब घर बन गया, जब खेत और चरागाह लहलहा उठे, तब एक अजनबी आता है ····· कहाँ से आया है वह ? और कहता है, यहाँ के मालिक-मुखिया तुम नहीं, और उसको खलिहान की ओर भगा कर खुद चिमनी के पास बैठ कर अपना हुक्का गुड़गुड़ाता है !

इस प्रकार यर्ने सोच रहा था ····· वह उठा, कोट में चिपके पुआल के तिनकों को हाथ से साफ किया और घर के भीतर चला गया। घर के भीतर जाकर उसने कोट उतारा

और चूल्हे के पास बैठकर अपनी चिलम भरने लगा। उसका दुःख सहसा विलीन हो चुका था, वह मुसकराया, घनी भौहों के नीचे छिपी उसकी आँखें चमक उठीं।

नौकरानी भीतर आयी।

"अरे, यर्ने, बड़ी बेफिक्री से बैठे हो, बाहर तो देखो, अभी दिन है, सभी खेतों पर हैं, और तुम आराम से चूल्हे पर चढ़े बैठे हो।"

यर्ने मुंह से चिलम हटाते हुए नौकरानी की ओर देख कर बोला : "भाग जा डाइन ! तू किस पर हुक्म चला रही है ?"

नौकरानी धड़ से दरवाजा बन्द करती हुई बाहर चली गयी।

"इसे क्या हो गया है !" यर्ने को आश्चर्य हुआ।

संध्या का समय आसमान में श्यामता धीरे-धीरे बढ़ रही थी। द्वार खुला। शीतार बाहर छप्पर के नीचे खड़ा था, उसके पैर डगमगा रहे थे और हैट एक ओर झुक गया था। यर्ने ने उसकी ओर देखा। उसकी दृष्टि में उतना सद्भाव न था।

"कौन है ?" शीतार ने आवाज दी।

यर्ने खामोश था।

"कौन आया है ?" शीतार ने फिर कहा।

यर्ने ने आहिस्ते से मुँह से चिलम हटायी और मुसकरा उठा। "अच्छा ! पिता की अन्त्येष्टि के बाद ऐसा लगता है कि तुमने ज्यादा पी ली है। जाओ सो जाओ।"

भारी डग बढ़ाता हुआ, मानो उसके हर पदचाप से फर्श हिल रही थी, शीतार कमरे में दाखिल हुआ।

"किसे जाने को कह रहे हो, नौकर ? ज्यादा शराब पी ली है क्या ?"

यर्ने अपनी जगह से जरा भी न हिला। वह वैसे ही शांतभाव से बातें करता रहा मानो खेती-बाड़ी की बाबत कोई चर्चा चल रही हो।

"तुमको ! मैंने तुमको जाने को कहा, तुम्हें जोर का नशा है।"

शीतार क्षण भर चुप रहा, लेकिन कुछ देर बाद उसका माथा ठनका, भौहें तन गयीं, उसने अपना हैट फर्श पर फेंक दिया और चिल्लाया :

"चुप रह, नौकर ! मैंने आज एक मालिक को नहीं दफ़नाया, बल्कि दो को। नीचे उतर।"

यर्ने हँसा और चूल्हे पर से धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा, जैसे उसे खुद कोई जल्दी न थी।

"तू उतरता है या नहीं ?"

"मेरी जर्जर हड्डियों को बख्शो, टॉनी, चिमनी के कोने पर आराम करने की तुम्हारी भी बारी आयेगी, मेरे दोस्त !" यर्ने ने हँसते हुए कहा।

कांपता और लड़खड़ाता हुआ शीतार आगे बढ़ा। चूल्हे पर चढ़ गया, बैठा और तब सर घुमा कर पीछे यर्ने की ओर झुकते हुए बोला।

"मेरे जूते उतारो।"

यर्ने ने कोई जवाब न दिया। बेंच पर बैठे-बैठे वह अपनी बुझी चिलम को फिर सुलगाता रहा।

"मेरे जूते उतारो, मैं कहता हूँ !"

"भला क्या तुम्हारी मखौलबाजी अभी पूरी नहीं हुई ?" यर्ने ने धीरे से कहा। मौत की दुर्गन्ध अब भी "इस कमरे से आ रही है, बेहतर है कि तुम अब घुटने टेको और प्रार्थना करो।"

वह स्वयं उठा और क्रास पर चढ़े ईसामसीह की प्रतिमा के आगे घुटने टेक दिये। मालिक चौंधियाई आँखों से उसकी ओर देख रहा था। शीतार ने अपना पाइप सुलगाया, कमरे के पार थूक दिया, लेकिन जितनी देर यर्ने प्रार्थना में तल्लीन रहा, वह एक शब्द भी न बोला। यर्ने उठा, उसकी नजरें नीची थीं, उसने दरवाजे की कुण्डी पकड़ी, मानो बाहर जाने वाला हो।

शीतार पुकार उठा।

"यर्ने!"

यर्ने रुका।

"मैं तुम्हें साफ-साफ बता दूं, यर्ने", आवेश में शीतार के हाथ में पाइप कांप रहा था। "मैं तुम्हें बता देना चाहता हूँ कि अब तुम किसी और मालिक की तलाश कर लो।"

यर्ने के मुख पर हँसी नाच उठी, उसकी आँखें उल्लास से चमक रही थीं।

"क्या ?"

शीतार ने बेंच में जोर की ठोकर मारी।

"नौकर, क्या तू बहरा है ? किसी और मालिक की तलाश करले, मैं कह रहा हूँ। तूने मेरे घर पर बहुत मालिकाना चलाया। लेकिन अब इस घर पर हुक्म चलाना छोड़ दे।"

ठीक उसी समय बिजली आसमान को चीरती चली गयी और दूर—काफी दूर जोर की कड़कड़ाहट हुई। यर्ने ने हैट उतार

दिया और हाथों से क्रास का चिह्न बनाया।

"भगवान आपत्तियों से बचायें। पाप से डरो, नवयुवक ! परमात्मा की, अपने कुलगुरु की शरण लो !"

यर्ने ने दरवाजा खोला और खलिहान की ओर चला गया। वह खलिहान में पुआल पर जा लेटा और शीघ्र ही सो गया। उसके दिल में कोई मलाल न था।

तीन

आँसुओं से भीगे मुखवाले बच्चे की तरह तूफानी रात के बाद प्रभात मुसकरा उठा ।

यर्ने दहलोज से निकला, खलिहान के चारों ओर घूमा और खेतों की ओर ताकने लगा । ठीक उसी समय शीतार ने खिड़की खोली । उसका नींद से भरा-भभराया चेहरा नजर आया । सर के बाल बिखरे हुए थे । उसकी दृष्टि जीर्ण और जराग्रस्त यर्ने पर पड़ी, जो खेतों की ओर जा रहा था ।

"कहां जा रहा है ?"

यर्ने ने आहिस्ता से पीछे देखा ।

"खेतों को देखने !"

"किसके खेतों को ?"

"क्या ?"

"किसके खेतों को ?"

यर्ने खिलखिला उठा ।

"लगता है तुम्हें पूरी तरह नींद नहीं आयी । सर में अभी दर्द है तो जाओ सो रहो ।"

"किसके खेतों को ?" मालिक ने फिर कहा और उसका चेहरा तमतमा उठा ।

"अपने खेतों को" झुकी कमर पर दोनों हाथ रखे यर्ने ने रास्ते में ही रुक कर उत्तर दिया ।

"अपने खेतों से क्या मतलब ?"

यर्ने की भौहों पर बल पड़ गए और उसका चेहरा लाल हो गया।

"इसका मतलब है : मेरे खेत !"

शीतार हक्का-बक्का, मुंह फैलाये, आँख फाड़े यर्ने को ताकता रहा।

"अरे बूढ़े, क्या तू पागल हो गया है ?"

यर्ने घूमा और धीरे-धीरे खेतों की ओर बढ़ने लगा। शीतार की दृष्टि उसी पर टिकी थी, उसने भी कपड़े पहने और घर से निकल पड़ा। वह दूसरे रास्ते से बढ़ रहा था जिससे नौकर से उसकी भेंट न हो। दोनों धीरे-धीरे चल रहे थे, दोनों के सर झुके हुए थे और नजरें नीची थीं, फिर भी उन दोनों ने एक-दूसरे को देखा, ठीक उसी प्रकार जैसे कोई भयभीत व्यक्ति अपने मन में किसी आकृति की कल्पना करता है और ऐसा मान लेता है कि उसके पीछे कोई आहिस्ता-आहिस्ता चला आ रहा है।

यर्ने जब घर लौटा तो भोजन परोसा जा चुका था। उसकी साँस फूल रही थी। वह द्वार के पास रुका, भौहें पोंछीं और बड़े आश्चर्य से मालिक और उसके परिवारवालों को देखा। भोजन के समय यर्ने मेज के जिस किनारे पर बैठा करता था आज न तो वहाँ कुर्सी थी और न चम्मच वगैरा ही रखे गये थे।

"तुमने मुझे क्यों नहीं बुलाया ?"

"क्या पड़ोसियों ने तुझे बुलाया ?" शीतार ने उत्तर दिया, और सभी ठहाका मार कर हँस पड़े।

"अरे नौकरो और नौकरानियो ! तुम सब हँस क्यों रहे

हो ? मैं क्या हूँ ? कहीं इस घर में भाँड़ों का लश्कर तो नहीं उतर आया ?"

यर्ने अपने क्रोध को थामे हुए था, पर क्रोध और अप्रत्याशित शोक से उसका स्वर प्रकम्पित था।

शीतार की स्त्री बोल उठी। उसके स्वर में स्नेह नहीं, उपेक्षा थी :

"क्या तूने कल रात नहीं सुना ? मालिक ने तुझे बरखास्त कर दिया है·····फिर भी यदि तू भूखा है" उसने एक नौकर की ओर देखते हुए कहा, "इसके लिए एक चम्मच ला दो। हम तो किसी भिखमंगे को भी न दुत्कारें, फिर एक नौकर को, जिसने हमारे घर में काम किया हो, हमारे साथ खाना खाया हो !"

नौकरानी चम्मच ले आयी और मेज पर गड़रिये की बगल में रख दिया।

"अब किसका इन्तजार है ?" शीतार ने सर नीचा किए हुए बड़े कटु शब्दों में कहा। "हमने तेरे लिए चम्मच मँगवा दिया, क्योंकि तू भूखा है, भगवान तेरा भला करे। हम यह नही गिनने बैठे कि तूने कितने ग्रास लिये, लेकिन तेरी भूख यदि अब भी नहीं मिटी, तो चल भाग यहाँ से।"

यर्ने चुपचाप खड़ा उसकी ओर आँखें फाड़-फाड़ कर देख रहा था। शीतार ने अपना चम्मच फर्श पर फेंक दिया और उछल पड़ा।

"क्या चाहता है ! क्या तू बहरा हो गया है, क्या तेरा दिमाग कुन्द हो गया है, या कि तू समझ करके भी नासमझ बन रहा है ? मैंने कल रात को ही तुझसे नहीं कह दिया था

कि किसी और के यहाँ नौकरी खोज ले ! धरती बड़ी लम्बी-चौड़ी है और तेरे डग भी लम्बे हैं । खुदा का शुक्र ! अब इस घर पर तुझे और हुक्म चलाने की जरूरत नही ।"

यर्ने के पैर काँप रहे थे, वह बोला : किंतु दबी जबान से, बड़े आहिस्ते से, जैसे शब्द उसके गले से निकल ही नहीं रहे थे :

"हाँ, युवक ! मैंने सब-कुछ सुना और समझा । लेकिन, अगर तुम मुझसे यह कहो 'कि जाओ और घर को आग लगा दो' तो मैं सुनूंगा, समझूगा, पर वैसा करूँगा नहीं । अक्लमदी की बातें करो, तो मै सुनूगा, समझूगा और तुम्हारा कहा करूँगा । लेकिन, इसका क्या मतलब ? अगर तुम मुझसे कहो कि बोरिया-बिस्तर उठाओ और भाग जाओ, तो यह कहाँ तक ठीक है ? अन्त्येष्टि-क्रिया के बाद अगर तुम मेरे सामने घुटने टेकते, तो तुम्हारे पैर न घिस जाते, क्योंकि इस घर का आखिरी मालिक मैं हूँ, और एक सच्चे मसीही का धर्म यही है । और तब मैं तुमसे कहता : "यह तुम्हारा घर है, इसके मालिक अब तुम हो, ये तुम्हारे खेत हैं, तुम्हारे चरागाह है, ये सब मेरे खून-पसीने से लहलहा रहे है, इनमें मेहनत करते-करते मेरी कमर टूट गयी है, शरीर झुक गया है, मेरे हाथ शिथिल हो गये हैं और पैर काँपने लगे हैं : इस सबको सम्हालो ! और मैं, बूढ़ा और थका आदमी, इस सबका मालिक, अब अपनी चिलम सुलगा कर एक कोने में जा बैठूंगा ।' यही बात मैं तुमसे कहता और इसे सुनकर भगवान और इंसान दोनों खुश होते ।"

शीतार के ओठों पर घृणा थी, उसकी जिज्ञासापूर्ण दृष्टि चारों ओर दौड़ गयी ।

"इसे देखते हो : मैं इसके आगे घुटने टेकूं ?"

उत्तर में सभी जोर से ठठा कर हँस पड़े।

शीतार यर्ने की ओर घूम पड़ा, काफी देर तक उसे देखने के बाद बोला :

"अच्छा तो तू यह समझता है कि मैंने तुझे घर से बाहर इसलिये निकाला था कि मैं शराब के नशे में और बदहवास था, या यह कि पिता की अन्त्येष्टि के बाद मुझे मजाक सूझ रहा था ? नहीं, मुझे पिता की मृत्यु का शोक जरूर था ; पर मेरा दिमाग ठिकाने था ; शोक के साथ धीरज न खोने का माद्दा था। मैं पहले यहाँ का मालिक नहीं था। अन्य अनेक छोटे-छोटे लोग यहाँ रहते थे और उनमें सबसे छोटे की नाई मैं था, मेरा चम्मच गड़रिये के बगल में लगाया जाता था। तू, एक नौकर, मेरा मालिक बना बैठा था, पर वह गलत था। तेरी दृष्टि ही नियन्त्रण और तेरा शब्द ही आदेश था। लेकिन, मन-ही मन मैं यह समझता था कि एक दिन तू मेरी चौपाल में खड़ा होगा, भीख मांगेगा, और यह विचार मात्र ही काफी सुखद था। आप लोग चाहें तो मालिक का भी मालिक बननेवाले नौकर से अपना बदला चुका लें ! गड़रिया, दरवाजा खोल कर इसे घर से बाहर कर दे।"

गड़रिये के लड़के ने आज्ञा का पालन किया, पर यर्ने हिला नहीं, जड़वत खड़ा रहा।

"लकड़ी की भवानी की तरह खड़े मत रहो, चलते बनो।"

यर्ने जैसे किसी दुःस्वप्न से चौंक कर जग गया हो, उसका चेहरा गम्भीर था, फिर भी वह मुसकराया।

"शीतार, ईश्वर ने एक नियम बनाया है, जिसे तुम तोड़

नहीं सकते। जो मेहनत मैंने की है वह मेरी है, यही ईश्वरी न्याय है। मैंने जो बिस्तर खुद लगाया है, उस पर लेटने की इजाजत क्यों माँगूं, जिस रोटी को खुद कमाया और पकाया है, उसकी भीख क्यों माँगूं ? मैं बगैर पूछे ही बिस्तर पर लेटूंगा और बिना माँगे रोटी खाऊँगा। यही कानून है, यही न्याय है·····और तुम अपना चम्मच उठाओ और खाओ। जो कुछ खा रहे हो वह कायदे से तुम्हारा नहीं, फिर भी शर्माओ मत, खाओ। जो सचमुच मालिक है वह सब कुछ बरदाश्त कर लेगा। उसके मन में मलाल नहीं, क्योंकि कानून और न्याय उसके साथ हैं।"

यर्ने कह रहा था। सब खामोश उसको घूर-घूर कर देख रहे थे, शीतार का चेहरा फक पड़ गया, उसने गुस्से में भर कर फौरन कहा :

"अब आगे एक भी शब्द कहे बगैर फौरन यहाँ से निकल जा, दरवाजा खुला है।"

यर्ने एक बार फिर घूमा। उसने बारी-बारी से हर एक को देखा, लेकिन उन सबके सर झुके हुए थे। किसीने उसकी ओर नहीं देखा। उसके दिल को बड़ी ठेस पहुँची।

"मजे करो, मेरे दोस्तो ! घर खुला है, भंडार और खत्तियाँ भी खुली हैं ! सब कुछ ले लो और मजे करो ! मैं अपने अधिकार-पत्र पर दस्तखत करवा कर उसे सील बन्द लिफाफे में लेकर आऊँगा, क्योंकि भगवान तो झूठा नहीं, उसका कानून तो झूठा नहीं·····और मेरे दोस्तो ! तब तुममें दोस्ती की भावना और मसीहियों की भावना जागेगी।"

यह कहता हुआ वह बाहर चला गया।

चार

यर्ने मेयर से भेंट करने चल पड़ा। मेयर दोलिना की एक सराय का मालिक था। रास्ते में उसकी एक व्यक्ति से भेंट हुई, जो देखने में न तो भलामानस जान पड़ता था, न विद्वान और न मज़दूर ही। वह आदमी काले कपड़े पहने था, दाढ़ी बढ़ी हुई थी, और उसे हर विषय का थोड़ा-बहुत ज्ञान था। संक्षेप में वह बेमतलब का आदमी और आवारागर्द था, जिसका न कोई संगी था न साथी, न कहीं घर था न बार। यदाकदा बेताइनोवा में उसकी शक्ल दिख जाती थी, क्योंकि वह यहीं पैदा हुआ था, और फिर अचानक वह लापता भी हो जाता। राम जाने कहाँ जाता था। धर्म पर उसकी आस्था नहीं थी और गिरजाघर के सामने से गुजरते समय उसने अपनी श्रद्धा-भक्ति प्रकट करने के लिए सर से टोपी कभी नहीं उतारी।

"मैं इस नास्तिक से पूछता हूँ" यर्ने ने सोचा ; और उसको रोक लिया।

"नमस्कार, गोश्ताच !"

"नमस्कार, यर्ने !"

"तुम पढ़े-लिखे हो और कानून समझते हो, मुझे यह बताओ : मैंने चालीस वर्ष तक मेहनत की, एक घर बनाया, मेरे पसीने से भीगने के बाद ही खेतों और चरागाहों में जान आयी, तो इन सबका मालिक कौन हुआ ?"

काले कपड़े पहने उस विद्वान ने नजर ऊँची की पर कोई जवाब न दिया।

"मेरी बात ध्यान से सुनो। मैने अपने घर में चालीस साल तक मेहनत की। अगर तुम वहाँ झुककर देखो, अगर तुम जमीन को गौर से देखो तो पाओगे कि वह मेरी है, तुम समझ सकोगे कि वह मेरे खून-पसीने से तर है। अगर तुम उस घर को देखो तो तुम्हें पता चलेगा कि उसके हरे जंगले मेरा नाम ले-ले कर तुम्हारा स्वागत कर रहे हैं—अब कहो तुम्हारी क्या राय है ?"

विद्वान ने फिर यर्ने की ओर देखा पर बोला नहीं।

यर्ने थोड़ा और झुक गया, भौहों को सिकोड़ते हुए उसने अंगुलियों के पोरों को एक-दूसरे पर इस प्रकार रखना शुरू किया मानो वह जो कुछ कह रहा था उसे और अधिक स्पष्ट करना चाहता था।

"चालीस साल बीत गये जब मैं यहाँ आया था," उसने कहा "मैं रेशिये से यहाँ आया। मेरे घर में कई प्राणी थे, इसलिये मुझे घर छोड़ना पड़ा। अर्सा हुआ, इतने वर्ष बीत गये—अपनी माँ या भाइयों की याद कभी नहीं की, और अब यदि रास्ते में मेरी उनसे कहीं भेंट हो जाय तो भी मैं उन्हें पहचान नहीं सकता। तो मैं आया। आकर एक घर बनाया—उस ढलान में !"

बड़े आश्चर्य से विद्वान ने उसकी ओर देखा और बोला :

"पर वह तो शीतार का घर है।"

"कौन शीतार ? इतने अर्से तक तुम कहाँ भटकते रहे कि तुम्हें इतना भी मालूम नहीं। शीतार मर चुका है, हमने

कल ही तो उसे दफनाया है। अब मैं ही अकेला बच रहा हूँ, मैं, आखिरी मालिक !"

"तो शीतार के बेटे का क्या हुआ ?"

"उधर देखो। वह खड़ा है, घर के ठीक सामने। वही है। मैं दूर से ही देख कर उसे पहचान सकता हूँ। वही है। भगवान न करे कि मैं उसकी बुराई करूँ। वह बुरा तो नहीं। हाँ, पीता बहुत है और गुस्से से बेकाबू हो जाता है। मैं उसे घर से बाहर न निकालूंगा। वह अभी बच्चा है, वह अब भी नेक आदमी बन सकता है।"

"लेकिन वही तो अपने पिता के खेत-पात का उत्तराधिकारी और असली मालिक है। तुम उसे घर से निकाल भी कैसे सकते हो ?"

यर्ने को संतोष न हुआ। उसने सर हिलाकर हाथ मटकाते हुए कहा :

"क्या बात कहते हो, धेले की अक्ल नहीं। मैंने यह जानने के लिए तुम्हें सड़क पर नहीं रोका। हाँ ! अपने बाप के खेत-पात का उत्तराधिकारी वही है और रीति-रिवाज या संभव है कि कानूनी तौर पर भी पिता के बाद मालिक भी वही हो। लेकिन सच्ची बात क्या है सो राम ही जाने। यह एक बात हुई, मगर मैं जो कुछ तुम्हें बता रहा हूँ वह एक जुदा बात है : यर्ने ने चालीस साल तक मेहनत की, चालीस साल तक यर्ने ने बनाया—भगवान उसकी मेहनत से प्रसन्न हुआ, उसका अच्छा फल मिला। मेहनत किसने की, फल किसको मिले ? इस बात का जवाब दो, क्या इन्सानी कानून और दैवी इच्छा यही है कि हालांकि मैंने इतनी घास काटी, इतने खेत काटे

कि उसका अम्बार उस पहाड़ के बराबर लग गया, पर मेरे लिए कहीं ठौर-ठिकाना न रहे ? हालांकि मैंने गेहूँ और राई से खत्तियाँ-की-खत्तियाँ भर दी हैं, पर मुझे खुद खाने को रोटी का एक टुकड़ा भी नसीब न हो ? अब जवाब दो।"

विद्वान सारी बात समझ गया और खूब ठठा कर हँसा।

"यर्ने ! इन्सान का कानून तो यह है : यर्ने घर बनाये और जब घर बन कर तैयार हो जाय तो मालिक आराम से उसमें रहे और यर्ने को बाहर का रास्ता दिखा दिया जाय। यर्ने हल जोते, बोये, काटे पर फसल पर मालिक का अधिकार हो और यर्ने को पत्थर मिलें। यर्ने काटे, मांड़े, पुआल और भूसा जमा करे और जब अनाज और भूसे से सारा घर भर जाय तो मालिक गद्दे पर सुख की नींद सोये और यर्ने सड़क पर रात गुजारे। दोनों जब बूढ़े हो चलें तो मालिक चिमनी के कोने में आराम से बैठ कर अपना हुक्का गुड़गुड़ाये और ऊँघे, पर यर्ने खलिहान में बैठे और सड़ी घास पर कढ़िल घसिट कर मर जाय ··· यही है इन्सान का कानून और भगवान की मर्जी ! कहा है : "अन्याय बर्दाश्त करो, यर्ने, अगर तुम्हारा पड़ोसी तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे तो बायाँ गाल भी उसके सामने कर दो, अगर वह तुम्हारा कोट उतरवाये तो अपनी कमीज भी उतार कर उसे दे दो।"

"झूठे कहीं के !" यर्ने बोला। "अन्याय परमात्मा की देन नहीं।"

इस बार उस विद्वान को शायद यर्ने पर दया आयी, और वह हँसा नहीं।

"यर्ने, अधिकार और अन्याय, मनुष्य के कानन और

ईश्वर की मर्जी जैसी बातों को लेकर झगड़ा न करो। मैंने यही किया और देखो आज न तो मेरा कोई साथी है और न कहीं घर-बार। मैंने कोशिश की कि लोगों को दुनिया के अन्यायों और उसके नियमों को समझाऊँ, पर उन लोगों ने ही मुझे बाग़ी कह कर निकाल बाहर किया। अन्याय को विष का घूँट मान कर पी लो, यर्ने, और उसे हमेशा के लिए भुला दो। अपने मालिक की शरण में जाओ, उसके आगे घुटने टेको, हाथ जोड़ो और उससे बिनती करो कि जिस घर को तुमने बनाया है उसी घर के एक कोने में वह तुमको सर छिपाने का ठौर दे और जिस भोजन की सामग्री तुमने जुटाई है उसीमें से वह रोटी का एक टुकड़ा तुमको भी दे। यही करो और तभी तुम दुनिया के नियमों और परमात्मा की इच्छा का पालन कर सकोगे।"

यर्ने सिर हिलाता हुआ बोला :

"तुमने अन्याय सहा है, उसकी गहरी छाप तुम्हारे दिल पर पड़ी है। शायद इसी वजह से तुम नास्तिकों और पागलों जैसी बातें कर रहे हो। पर चूँकि तुम दुःखी हो, इसलिये जब भूख लगे और थक जाओ तो मेरे घर आजाना, वहाँ तुम्हारे लिए

भोजन और सोने के लिए खाट हमेशा तैयार होगी।"

यर्ने ने बस इतना ही कहा। वह दुखी था और उसका हृदय भर आया। दोनों ने एक-दूसरे से बिदा ली और अपने-अपने रस्ते चल पड़े।

पाँच

मेयर कमीज की बाहें ऊपर को समेटे हंसमुख मुद्रा में सराय के द्वार पर खड़ा था।

"कहाँ जा रहे हो यर्ने ?"

"कुछ काम से मैं आपके ही पास आया हूँ, मेयर महोदय !"

दोनों सराय के भीतर चले गये। मेयर बड़ी शान से एक कुर्सी पर जा विराजा और यर्ने खड़ा रहा।

"सुनिये, मेयर, अब मैं आपको अपनी दास्तान सुना रहा हूँ, और तब आप देखिये कि न्याय क्या कहता है और क्या उचित है। शीतार का बेटा, मुझ से कहता है : 'भाग जाओ और किसी और के यहाँ काम तलाश करो।' वह कहता है : 'तुमने अपनी जवानी खपायी मैंने सब कुछ लिया। मेरा घर अब भरा-पूरा है, तुम भाग जाओ, इस बुढ़ापे में जहाँ कहीं ठौर मिले वहाँ जाओ। मैंने न जोता, न बोया, न काटा, पर अब तुम्हारे परिश्रम का लाभ मैं उठाऊँगा, चिकनी और साफ रोटियाँ मैं खाऊँगा और तुम अपना पेट भरने के लिए मेरी चौपाल के इर्द-गिर्द फेंके गये टुकड़े बीनो। तुमने भोजन तैयार किया, पीने की सामग्री जुटायी, तुमने हमारे लिए थाल लगाया, और अब तुम फर्श पर झुक-झुक कर जूठन बटोरो !"....उसने बिना किसी हया-शर्म के इस किस्म की बात की। "मेयर, अब आप ही विचार करें। मुझे बतायें, क्या यह उचित है ? कानून कहाँ गया ?"

मेयर ने भौहें सिकोड़ीं : उसकी आँखों में खुशी या सहानुभूति न थी ।

"इतनी देर से अपनी बात कह रहे हो, हालाँकि तुम इसी को कुछ चन्द शब्दों में इस प्रकार कह सकते थे : 'शीतार ने तुम्हें नौकरी से अलग कर दिया है' ।"

यर्ने ने अपना हैट मेयर के सामने रख दिया और दोनों मुट्ठियाँ मेज पर रखते हुए झुक कर बोला :

"क्या ? नौकरी से अलग कर दिया ? क्या नौकर मालिक को बरखास्त कर सकता है ? वह मकान, जो इस शक्ल में नजर आ रहा है और अब जिसकी कुछ कीमत है, किसने बनाया, उसने या मैंने ? धरती को अपने श्रम के पसीने से किसने सींचा, उसनें या मैंने ? दूर-दूर घाटियों तक फैले खेत और चरागाहों को, पहाड़ों जैसे ऊँचे पेड़ों को किसने लगाया, बनाया, उसने या मैंने ? अपनी मेहनत से सारी सम्पत्ति किसने बनायी, मैंने, जो खेतों में खुली पीठ लिये पसीने से सराबोर होता रहा, या कि उसने, जो माँस-पिंड की भाँति कपड़ों में लिपटा कें-कें करता था ? बताओ हममें से यह कहने का अधिकारी कौन है : अपना बोरिया-बिस्तर उठाओ और भाग जाओ मैं या कि वह ? मुझे समझाओ ! मेरा हक कहाँ गया, मेयर ? बोलो कानून क्या कहता है ?"

मेयर बेंच से पीठ टेकते हुए शून्य दृष्टि से उसकी ओर देख रहा था ।

"साफ-साफ कहो, अब तुम चाहते क्या हो ! तुम मेरे पास क्यों आये, यर्ने ?"

यर्ने को आश्चर्य हुआ । वह अकड़ कर खड़ा हो गया ।

"मैं आपके पास न्याय कराने आया हूँ, मैं आपके पास रोटी का एक टुकड़ा या सोने के लिए चार हाथ जगह माँगने नहीं आया। आप मुझे समझाएँ कि कानून क्या कहता है; न्याय क्या है, 'हाँ' या 'न' में अपना फैसला सुना दीजिये। बस, इसीलिये आपके पास आया हूँ।"

"आखिर तुम चाहते क्या हो ?"

"वही जो मैंने आपसे कहा।"

"क्या तुम्हारे मालिक ने तुम्हें बरखास्त कर दिया है ?"

"कैसा मालिक ? किसको किसने बरखास्त किया ?"

"बकवास मत करो। मैं तुम्हें माफ करता हूँ, यर्ने, हालाँकि तुम इतने बूढ़े हो पर हो अव्वल नम्बर के मूर्ख·····शीतार ने तुम्हें नौकरी से क्यों अलग किया ?"

"अरे मुझे निकाला किसने ? और कहाँ से ?"

"अच्छा बस करो यर्ने ! अगर तुम्हें सही बात को सुनना और समझना मंजूर नहीं तो बेहतर है कि तुम यहाँ से जाकर अपनी कहानी गड़रियों के लड़कों-बच्चों को सुनाओ। अब मैं अधिक सुनना नहीं चाहता, पर एक बात का जवाब दो : अब तुम्हारा कोई ठिकाना नहीं और न किसी के यहाँ काम से लगे हो, तो अब तुम जाओगे कहाँ ?"

"कहाँ जाऊँगा ?" यर्ने ने आँखें फाड़-फाड़ कर मेयर की ओर देखते हुए प्रश्न किया।

"हाँ, हाँ। मुझे आँखें फाड़-फाड़ कर न देखो बल्कि कान खोलकर सुनो। शीतार ने तुम्हें बरखास्त कर दिया है : अब न तुम्हारा कहीं घर है और न कोई मालिक। तुम कहाँ जाओगे ?"

कुछ देर तक खामोश खड़े रहने के बाद यर्ने ने पूछा :

"क्या ? यही मेरा अधिकार है ? क्या यही न्याय है ?"

मेयर को क्रोध आ गया।

"तुझसे अधिकारों और न्याय की बात ही कौन करता है। नौकर का इन सबसे वास्ता ही क्या ? उसके लिए इनका महत्त्व क्या ? मैं तो अब यह पूछ रहा हूँ : कि इस बूढ़ी काया को किधर घसीट कर ले जाने का विचार है ?"

यर्ने कुछ देर तक निर्निमेष नयनों से मेयर की ओर देखता रहा और फिर सर झुका लिया।

"तब", यर्ने बोला, "कानून क्या यही है ? नौकर का न तो कोई अधिकार है और न न्याय ?"

"मैंने यह तो नहीं कहा कि ऐसा कहीं लिखा ही नहीं है। मेरी बात को तोड़ने-मरोड़ने की कोशिश मत करो। फिर भी मालिक तो मालिक ही है और नौकर नौकर। अगर मालिक अपने नौकर से कहे : 'बोरिया-बिस्तर बाँधो और भाग जाओ', तो नौकर को यही चाहिए कि वहाँ से चल दे। हमेशा से यही होता आया है और आगे भी ऐसा ही होता रहेगा, क्योंकि इसके सिवाय और कुछ हो भी नहीं सकता·····क्या तुम्हें खुद शर्म नहीं आती कि मैं तुम जैसे साठ साल के बूढ़े को ये सब बातें बच्चे की तरह समझाऊँ।"

यर्ने नजर नीची किये खड़ा रहा। आखिरकार वह बोला, मानो जोर-जोर से सोच रहा था :

"मतलब यह कि मैं अपना बोरिया-बिस्तर लेकर चल दूँ ?"

"हाँ, तुम्हें चल देना चाहिए।"

"क्या यही न्याय है ?"

"उचित तो यही है।"

"आप पढ़े लिखे हैं मेयर, मुझे इतना और बता दीजिए कि मैं अपनी मेहनत को, चालीस साल के परिश्रम को, बिस्तर में कैसे लपेटूं ? इतना और समझा दीजिए, बस फिर मैं चल दूंगा !"

यह सुन कर मेयर क्रोध से बौखला उठा। उसने मेज पर जोर से हाथ पटका।

"तू मुझे बेवकूफ बनाने आया है ? चल भाग ! सड़क पर कुछ लफंगों और मूर्ख छोकरों को इकट्ठा करके उन्हें अपनी दास्तान सुना। तब देखेगा कि वे तेरी किस तरह से हँसी उड़ाते हैं, किस तरह से तुझे जीभ दिखाते हैं और तेरा कोट पकड़ कर खींचते हैं……जो लोग किसी बात को गम्भीरता से सोचते हैं उनके बीच तेरे जैसों को ठौर नहीं : बातूनी औरतों के बीच भी नहीं।" यर्ने जड़वत खड़ा सब सुनता रहा।

"मेयर", वह बोला, "अभी कल ही आप दूसरे ढंग से बातें कर रहे थे। आपके मिलने-जुलने का ढंग कुछ और था, और मुझे ऐसा लगता है कि आपका चेहरा भी कुछ और था……कितनी अजीब बात है ! एक आदमी देखते-ही-देखते कितना बदल जाता है ! यहाँ कल जो व्यक्ति था आज वह नहीं, उसकी जगह कोई दूसरा ही आदमी नजर आ रहा है… आखिर मैंने आपका क्या बिगाड़ा है कि कल जो आप मुझसे एक भाई की तरह बातें कर रहे थे, आज दुत्कार रहे हैं….?

"नौकर तुम्हें अब मैं कोई जवाब नहीं दे सकता। जाओ, अपना बोरिया-बिस्तर उठाकर चल दो और मेरे या इस बस्ती के लिए मुसीबत का बाइस न बनो।"

इतना कह कर मेयर ने कुर्सी छोड़ दी।

छः

मेयर और यर्ने की बातचीत अभी खत्म नहीं हुई थी कि सराय में और कई किसान आ पहुँचे। मेयर की बातों से यर्ने का हृदय बिंध चुका था। वह उन किसानों से बोला :

"भलेमानसो, आपने हमारी बातें सुनीं। अब आप लोग ही फैसला करें। मेरी आप सबसे प्रार्थना है। कृपा करके कुछ कहें। आप सभी मुझे जानते हैं, मैं जिन दिनों खेत जोतता और फसल काटता था उन दिनों आप सब लड़के थे, पर आज बड़े और जवान हो गए हैं। जब आप लोग पैदा भी नहीं हुए थे तब मैंने घर बनाया और खेतों को अपने पसीने से हरा-भरा किया·····पहाड़ी की ढलान में वह घर मौजूद है, नाले से पहाड़ी तक फैले सभी खेत मेरे हैं, वे बड़े चरागाह और पहाड़ी

के पास का घना जंगल भी ! अगर यर्ने की मेहनत का नहीं तो फिर वह किसकी मेहनत का फल है, जिससे आज वहाँ की चट्टान भी सोना उगलने लगी है, वह बरगद के छोटे बीज की तरह बढ़ कर छायादार विशाल वृक्ष जैसी हो गयी है ? उस जमीन को उपजाऊ बनाने के लिए परमात्मा से प्रार्थना किसने को ? बोलिए अगर यह सब मेरी मेहनत का नहीं तो किसके परिश्रम का फल है ? आज उस घटना को, जब मैंने इस जमीन पर काम करना आरम्भ किया था, चालीस वर्ष बीत गए हैं, हर चीज ठीक ठिकाने से लग गयी है। घर धन-दौलत से भरा है और यर्ने से कहा जाता है—'तुम्हारा काम खत्म हुआ, बोरिया-बिस्तर बाँधो और चल दो।' मेरे साथ यही हुआ है। हे भलेमानसो, अब आप ही न्याय करो ; विचार करो और अपना फैसला दो।"

किसानों ने एक दूसरे की ओर देखा, उनमें से कुछ हँस पड़े, पर बोला कोई नहीं। यर्ने ने एक के बाद दूसरे के मुँह को देखा, वह मन-ही-मन काँप उठा :

"आप सब खामोश क्यों हैं ? आप लोग मेरी ओर इस प्रकार क्यों देख रहे हैं जैसे मैं कोई आवारा या थका-मांदा और निराश भिखारी हूँ ? अरे, मसीही भाइयो ! चुप रहो : बोलने के लिए अधीर न हो, जल्दबाजी में फैसला न करो। बैठ जाओ, मेरे मुसाफिरो, मेरे निष्पक्ष पंचो, मैंने अपनी पूरी राम-कहानी कह डाली, छिपाया कुछ नहीं, कोई बात छोड़ी नहीं, इस पर बार-बार सोचो, सत्य का निर्णय करो, और फिर उसका एलान कर दो।"

वियाच ठठाकर हँस पड़ा और बोला : "यर्ने, क्या तुम

पागल हो गए हो ?"

यर्ने की समझ में बात न आयी और वह बोलनेवाले को घूर-घूर कर देखने लगा।

"क्या बात करते हो ? मैंने यह तो नहीं कहा कि तुम मेरे दिमाग की जाँच करो। मैंने तो तुमसे सिर्फ अधिकारों के बारे में पूछा है। और मान लो कि मैं पागल हूँ, अगर मैंने कोई ऐसा काम किया जिस पर तुम्हें हँसी आती हो, या दरअसल तुम्हें शर्म आती हो, तो भी मेरे अधिकार तो ज्यों-के-त्यों रहेंगे ही और पागल आदमी के भी तो कुछ अधिकार होते हैं !"

"अच्छा," सलान्दर बोला, "बताओ तो कि हुआ क्या ! अगर उसका दिमाग खराब हो गया है तो इसका भी कुछ कारण है।"

मेयर ने तत्काल सलान्दर की बात काटते हुए कहा :

"अरे इसे हो भी क्या सकता है ? शीतार ने इसे बरखास्त कर दिया है ; मालिक ने नौकर को हटा दिया, बस इतनी सी बात है।"

"उसने बरखास्त कर दिया यर्ने को ! क्या सचमुच ?" सलान्दर ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा। "उसको नौकरी से अलग करना, मालिक की भारी भूल है, और खास कर ऐसे समय में जब वह बूढ़ा हो चला है। चिमनी के पास बैठने और भोजन पाने का तो वह अधिकारी है ही। आदमी को तो क्या मैं तो बूढ़े और अंधे घोड़े को भी अस्तबल से न भगाऊँ !"

यर्ने की घनी भौहें ऊपर को उठ गयीं।

"क्या कहा तुमने ; अंधा घोड़ा ? अरे दया या दान का सवाल ही नहीं ; यहाँ तो न्याय की बात है । प्रश्न यह है कि क्या इन्सान का कानून और परमात्मा की मर्जी यही है कि मुझसे कहा जाय, तुम्हें जिन्दगी में जो काम करना था वह पूरा हो चुका, तुम्हारे जीवन का संध्याकाल है, इसलिए अब तुम अपना बोरिया-बिस्तर उठा कर जहाँ चाहो जा सकते हो । मैं तो सिर्फ इस बात को जानना चाहता हूँ !"

किसानों ने फिर एक दूसरे का मुँह ताका, पर बोला कोई नहीं ।

"बोलो, सलान्दर ! मुझे बताओ ! क्या इंसान का कानून और दैवी न्याय यही है ?"

"अच्छा ! अब तुम सबने उसकी बातें सुन ली", मेयर हंसते हुए बोला, "उसे जवाब दो ।"

और सलान्दर बोला :

"माना इंसान का कानून और ईश्वरी आदेश यही है कि नौकर अपने मालिक की आज्ञा का पालन करे । लेकिन, साथ ही यह नियम भी है कि मालिक ऐसे नौकर को, जिसने आखिर दम तक उसकी सेवा की हो और जो बूढ़ा और शिथिल हो, घर से न निकाले·····हालांकि, यह नियम कहीं लिखा नहीं है, पर इसे जानते सब हैं और प्रभु ईसा की मर्जी भी यही है····· यर्ने शीतार के पास वापस जाओ, उसे यह बात समझाओ, वह तुम पर रहम करेगा ही ।"

यर्ने का अन्तर विरोध और क्रोध की भावना से जल उठा :

"रहम ! मैं दया की भीख नहीं माँगता, बल्कि न्याय का द्वार खटखटाता हूँ, ताकि वह मेरे लिए भी खुल जाय ।

जिसने एक फारम की देख-रेख चालीस साल तक की हो वह कोई भिखारी या आवारा नहीं, जिसने अपने हाथों से घर बनाया हो वह बेपनाह नहीं, जिसने जमीन के काफी लम्बे-चौड़े टुकड़े को जोता-बोया हो, उसको टुकड़े माँगने की जरूरत नहीं। अगर तुमने मेहनत की है, तो वह मेहनत तुम्हारी है; यही कानून है! यही न्याय है! मैं न्याय की खोज करूँगा, और खुद न्याय करूँगा। न्याय करनेवाले मूर्खो, अगर तुम अन्यायी हो, तो ऐसे लोग भी हैं जो मेरी बात का मुद्दा समझेंगे; धरती अनन्त और अछोर है, तुमसे भी ऊपर ऐसे लोग हैं जो न्याय करना जानते हैं और सबके ऊपर ईश्वर है।"

मेयर ठठाकर हंस पड़ा और किसान उदासीन हो गये।

"यर्ने!" सलान्दर कह रहा था, "भावावेश में न आओ, और हठ न करो। अगर नये मालिक से तुम्हारा झगड़ा हो गया है और अगर वह तुम पर रहम नहीं खाता, तो मैं कहता हूँ कि हम लोग तुम्हें अनाथ आश्रम में रखवा देंगे। हालांकि तुम इस बस्ती के निवासी नहीं हो फिर भी तुम्हें यहाँ रहते अर्सा हो गया और हम तुम्हें सड़कों पर नहीं मरने देंगे।"

यर्ने का वृद्ध और झुका शरीर गुस्से से काँप उठा।

"उसने मुझे घर से निकाला पर तुम मुझे बेहया बना रहे हो। मैं न्याय की तलाश करने चला हूँ, और न्याय करने वाले मेरा उपहास करते हैं। अनाथालयों में भेजो उन शराबियों को, जिन्होंने शराब पीने में ही सारी धन-दौलत गंवा दी; चोरों को, जो बूढ़े हो गये हैं और सेंध लगाने में असमर्थ हैं। अनाथालयों को जेलों में बदल दो, जहाँ कानून भंग करनेवाले और न्याय का उपहास करनेवाले रखे जांय, और उन्हें

रखा जाय जिन्होंने किसी बूढ़े का सम्मान करने के बजाय उसका मखौल उड़ाया हो।"

यर्ने का इतना कहना था कि किसान गुस्से से तिलमिला उठे :

"बस चुप रह, गुलाम कहीं का !"

"पागल है !" कुछ लोग बोले।

"इस बागी को जेल भेजो !" एक ने कहा।

"चल भाग यहाँ से !" दूसरा बोला।

कुछ किसान बड़बड़ाये : "इस गुलाम को भागने के लिए दरवाजा खोल दो।" "दरवाजा खोल दो !" सब एक स्वर में बोले।

मेयर यर्ने के पास आकर बोला : "देखो, यर्ने, अब चूं तक न करना।" यर्ने ने चारों ओर देखा : उसका चेहरा शांत था, कंपन था बस स्वर में : "मैं तुम सबको माफ करता हूँ, अन्यायी पंचो, ठीक उसी तरह जैसे ईसा ने अपने हत्यारों को क्षमा कर दिया था।"

उसने अपना सर झुका लिया, आहिस्ता से दरवाजा खोला और उसे चुपके से बन्द करके बाहर चला गया।

सात

यर्ने सराय से बाहर आ गया था। उसने सोचा : "मेयर ने मुझसे कहा, "सड़क पर गंवार लड़कों को जमा करके उन्हें अपनी कहानी सुनाओ, वे तुम पर हँसेंगे और तुम्हारा कोट नोचेंगे·····फिर भी इस बात में अक्लमन्दी है। यद्यपि यह बात घृणावश ही कही गयी, तथापि जिस बात को सांसारिक अन्याय से कठोर बने प्रौढ़ हृदय समझने में असमर्थ हैं, बच्चों के निश्छल हृदय, जहाँ दैवी दया और आशीर्वचन भरे हैं, उसको समझ सकेंगे।"

यर्ने यह विचार करके आगे बढ़ा। रास्ते के बच्चों को इकट्ठा किया। उसके चारों ओर लड़कों की भारी भीड़ जमा हो गयी। कोई शोर करता, कोई शरारत करने में मशगूल था, तो कोई हू-हा करने में ही। यर्ने ने अपनी कहानी सुनानी आरम्भ की :

"बच्चो, पहाड़ी की ढाल पर मेरा घर है। देखो वह हरी-हरी खिड़कियों वाला मकान। उन्होंने वह मकान मुझसे छीन लिया है। वर्षों की मेहनत के बाद मैंने वह घर बनाया, अब मैं बूढ़ा हो चला हूँ, काम नहीं कर सकता, और जब मैंने काम समाप्त कर लिया, तब वे मेरे पास आकर बोले : 'यर्ने, अब तुम जाओ !' प्यारे बच्चो, मेरे खेत भी हैं। वे सभी खेत ! देखो, नाले से पहाड़ी तक विस्तृत खेत, वे सभी मेरे थे; और अब वे खेत भी मुझसे छीन लिये गये हैं। शुरू

में घर के पीछे थोड़ी-सी जमीन थी। जोत गोड़ कर मैंने खेत तैयार किये और अब, जब मेरा काम खत्म हो गया, तब वे मुझसे बोले, 'यर्ने अब जायदाद की हदबन्दी हो चुकी, तुम जाओ!·····बच्चो, निश्छल और निष्कपट बच्चो, मुझे बताओ, क्या यह उचित और न्यायसंगत है।"

थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद सभी बच्चे जोर से हँस पड़े।

"यर्ने, हमें एक पैसा दो।" एक लड़के ने, जिसके पैरों में जूते नहीं थे, मांग की।

"यह लो पैसा, डरो मत! लो, और मेरे सवाल का जवाब दो।"

उस बच्चे ने शर्माते हुए हाथ बढ़ाया और पैसा लेकर नौ-दो-ग्यारह हो गया।

"भगवान भला करे तुम्हारा बच्चू!" यर्ने हँस पड़ा। "पर तुम, जो मेरी ओर इतनी गम्भीरता से देखते हो, बताओ—मैंने जो कहा उसे तुमने सुना, अब तुम्हारा निष्कपट हृदय जो कहता हो सो बोलो।"

"मुझे भी एक पैसा दो!" धीमे किन्तु गम्भीर स्वर में दूसरा बच्चा बोला।

"हाँ, मैं तुम्हें एक क्या दो पैसे दूंगा; यर्ने धनवान है, क्योंकि उसने चालीस साल तक मेहनत की है·····पर मैंने जो कुछ पूछा, उसका जवाब दो।"

बच्चे ने दोनों पैसे ले लिये, एक कदम पीछे हटा, और उसी मन्द तथा गम्भीर स्वर में बोला: 'शराबी!' यह कह कर वह भी नौ-दो-ग्यारह हो गया। भागते समय वह बीच-बीच में पीछे फिर कर देख लेता था कि कहीं यर्ने उसका पीछा तो

नहीं कर रहा।

"अच्छा, तुम भी ले भागे! तुम निरे बच्चे हो, विचार-हीन, भगवान तुम्हारे गुनाहों को क्षमा करेगा," यर्ने हताश होकर बोला।

उसके चारों ओर बच्चों की भारी भीड़ थी। भीड़ ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती थी त्यों-त्यों और बच्चे आकर उसमें शामिल होते जाते थे, शोर-गुल भी बढ़ता जाता था।

"आओ, बच्चो, उस व्यक्ति के साथ हो लो, जो धनी होकर भी रंक है, ध्यान से उसकी कहानी सुनो। तुम्हारे बाल-हृदय उस उर्वरा भूमि के सदृश हैं, जिसे कृष्योपयोगी बनाया गया है, यही कामना है कि उसमें ऐसा बीज पड़े, जिसका फल मधुर हो। अगर तुम हँसते और शोर मचाते हो, या कि तुम उस व्यक्ति से भय खाते हो, जिसकी दृष्टि गम्भीर और गति मंद है, तो इससे मेरा क्या वास्ता। मैं समझता हूँ। मैं भी उछलता था, नाचता था। लोग मुझे देख कर खुश होते थे, लड़कियाँ मेरी तारीफ के पुल बाँधती थीं, लड़के मुझसे डरते थे, और तब, मैंने अपने अधिकारों की रक्षा घूंसे के बल से की होती।"

बच्चे एक स्वर से चिल्ला उठे : "यर्ने, नाचो!"

और सहसा, प्रसन्न चित्त बच्चों की उस भीड़ के बीच, जो उसके चारों ओर एकत्र हो गयी थी, यर्ने को ऐसा लगा जैसे उसके पैरों में जवानी आ गयी हो, उसके पैर और कमर थिरक उठी।

"यर्ने नाच रहा है, यर्ने ने शराब पी है!" बच्चे चिल्ला उठे : और वे भी उसके आगे-पीछे नाचने लगे, कुछ नाचते-

नाचते यर्ने के ऊपर ही गिरने लगे।

आस्तीन से भौहों का पसीना पोंछते हुए यर्ने बीच सड़क पर रुक कर बच्चों की ओर घूमा :

"हो चुका, मेरे दोस्तो ! काफी हिमाकत हो चुकी। भगवान तुम लोगों का कल्याण करे। तुम भलाई या बुराई कुछ नहीं समझते, क्योंकि तुम्हारे हृदय शुद्ध और साफ हैं, जीवन की कटुता ने उन्हें कठोर नहीं बनाया। अन्याय किसे कहते हैं यह मैं जवानी ढलने तक नहीं समझ सका, लेकिन आज वह मेरे ऊपर आ पड़ा है और मुझे दर-दर भटक कर ऐसा स्थान खोजने की सजा मिली है, जहाँ मैं इस बोझ को उतार सकूं। बच्चो, भगवान तुम्हें वह दिन न दिखाये जब कि तुम्हें भी यह पूछना पड़े कि इन्सान का न्याय और खुदा का पैगाम क्या है ! परमात्मा तुम्हें अधिकारों की बात जानने से बचाये, क्योंकि तब तुम समझने लगोगे कि अन्याय क्या है।"

एक लड़के ने धक्का दिया और यर्ने धड़ाम से धरती पर गिर पड़ा। उसका टोप धूल में लुढ़कता हुआ दूर जा पड़ा। बच्चे खिलखिलाकर हँस पड़े।

यर्ने उठा और झुक कर अपना टोप उठाने से पहले बच्चों की ओर घूमा।

"बच्चो, तुम्हें ऐसा नहीं चाहिए," उसने कहा। "मैं बूढ़ा हूँ ; इतना बूढ़ा कि तुम्हारी तरह उछल-कूद नहीं सकता।"

यर्ने अभी अपना टोप उठाने के लिए झुका ही था कि घुटनों के बल धरती पर पुनः जा गिरा। उसके दोनों हाथ धरती पर जा टिके। लड़कों की भीड़ बिखर कर सड़क के किनारे जा खड़ी हुई। यर्ने धीरे-धीरे उठा। घुटनों की धूल झाड़ी।

उसके चेहरे पर भय और वेदना थी।

"भगवान तुम्हें क्षमा करे, बच्चो! मैं भी तुम्हें क्षमा करता हूँ। तुम अन्याय को समझो भी तो कैसे, क्योंकि तुम पर खुद नहीं बीती? भगवान तुम्हारी मदद करे।"

"यर्ने गिर पड़ा! शराबी धूल में गुलाटे खा गया!" बच्चे चिल्ला उठे।

शून्य को चीरता हुआ एक पत्थर खट से यर्ने के घुटने पर आ लगा।

बूढ़ा घूम पड़ा और बड़े दुःख से बोला, "भगवान क्षमा करे, बच्चो! यह क्या कर रहे हो?" और एक पत्थर यर्ने के जबड़े में लगा, खाल निकल गयी; खून निकल आया। भय से कांपते हुए यर्ने ने हाथ फैलाया।

"बच्चो, प्यारे बच्चो, भला मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

"खून!" भय से बच्चे पुकार उठे और नाली फाँद कर खेतों की ओर भाग खड़े हुए।

अब एक ही बच्चा बच रहा, जो सबसे छोटा था, जिसके बाल घुँघराले थे और जिसके पैरों में जूते भी न थे। डगमग पग बढ़ाते और रोते-सिसकते हुए यह बच्चा यर्ने के घुटनों से आ लिपटा। यर्ने ने उसके घुंघराले बालों को सहलाया, गालों थपथपाया। आँसुओं से उसका चेहरा गीला था। बच्चे ने यर्ने की ओर देखा, उसकी आँखें चमक रही थीं।

"अकेले तुम आये, एक तुम्हीं ने मुझे समझा, बोलो, तुम्हीं मेरे निष्पक्ष जज बनो।"

कांपते हुए बच्चे ने पुकारा:

"माँ! माँ! माँ!"

एक औरत दौड़ी हुई आयी उसने बच्चे को गोद में उठा लिया।

"उन्होंने मेरे बच्चे के साथ क्या किया ?" उस स्त्री ने पूछा।

"अकेले इसने महसूस किया है कि अन्याय हो रहा है," यर्ने ने कहा। "मेरे दयालु जज, भगवान की कृपादृष्टि तुम पर हो।"

बच्चे ने अपना सर माँ के सीने में छिपा लिया। वह अब भी सिसक कर कह रहा था।

"माँ ! माँ !"

आठ

यर्ने अपना सामान उठाने वापस घर लौटा। दरवाजे पर ही शीतार से उसकी भेंट हुई, पर न तो उसने शीतार की ओर देखा और न ही शीतार ने यर्ने को देखा।

"मैं सिर्फ अपना सामान लेने आया हूँ," यर्ने ने सामने देखते हुए कहा। जान पड़ता था कि वह शीतार से नहीं मकान से बातें कर रहा था। "मैं और कुछ न लूंगा; और न घर में या बखार में ताला ही डालूंगा।"

वह बीचवाले बड़े कमरे में पहुँचा और सीढ़ियाँ चढ़ कर उस कमरे में दाखिल हुआ, जिसमें वह अर्से से रहता था और जिसे उसने अपनी इच्छानुकूल सजा रखा था। कमरे में बिस्तर था और दीवाल पर क्रास पर चढ़े ईसा मसीह की मूर्ति और माला टंगी थी। इतवार के दिन पहनने के विशेष कपड़े खूंटी पर टँगे थे, बेंच के नीचे एक टोकरी में यर्ने के दूसरे कपड़े थे। बिस्तर पर फूलदार चादर बिछी थी, जिसे उसका स्वर्गीय मित्र मार्टिन तुर्की की लड़ाई से लाया था और जिसे उसने यर्ने को भेंट में दिया था।

उसी चद्दर पर यर्ने ने पहले अपने वे कपड़े रखे, जिन्हें वह रविवार को पहनता था, इसके बाद दूसरे कपड़े रखे। उसने चादर को लपेट कर उसे एक रस्सी से बाँध दिया। सामान बाँध चुकने के बाद उसे दुःख हुआ, हृदय में विचित्र भाव उठे, ऐसे जैसे पहले कभी न आये थे। उसे ऐसा लगा

मानो किसी ने उसके हृदय को दबोच लिया हो और गला घोंट रहा हो। यर्ने ने क्रास के सामने घुटने टेक दिये, छाती पर क्रास का चिह्न बनाया और सर को इतना झुकाया कि माथा तकिये पर जा टिका। वह प्रार्थना कर रहा था।

"परमात्मा, तू बैकुंठ-लोक में निवास करता है·····मैं उस अधिकार की माँग करता हूँ, जिसे तूने इस लोकवासियों के लिए निश्चित किया है। तूने जो कहा, उसकी पुष्टि भी करेगा, जो लिखा, उसे मिटायेगा नहीं! मुझे मनुष्यों पर अब अधिक विश्वास नहीं,

मुझे अब इस बात पर यकीन नहीं रहा कि मेरे भी कुछ अधिकार हैं, हालांकि मुझे तेरे शब्दों पर भरोसा है····जगद्पिता, तू स्वर्गलोक में वास करता है····तेरी कृपा असीम है, दीनों पर दयालु हो, मजदूर को उसकी मजदूरी दे। उस नौकर की बात पर कान दे जो तेरे न्याय का भूखा है, उसकी भूख-प्यास

शांत कर। तेरे कहने भर की देर है और तेरे शब्द अमर रहेंगे, वे लोगों के दिलों में बैठ जायंगे और फिर वे समझेंगे कि न्याय क्या है ··· स्वर्गलोक में वास करनेवाले हे परम-पिता ··· लोगों की और अधिक परीक्षा न ले, अपनी अँगुलियों से उनके नेत्रों का स्पर्श कर, जिससे उन्हें दिव्य दृष्टि प्राप्त हो। अपने इस गुलाम की और अधिक परीक्षा न ले, क्योंकि मैं बूढ़ा और शक्तिहीन हूँ, मुझे आराम दे, मैं कमजोर हूँ और मेरा दिल टूट चुका है ··· !"

और ईश्वर ने उसे शान्ति दी। हृदय का सारा विषाद जैसे दूर हो गया और वह एक बार फिर शान्त हो गया।

यर्ने उठा। गठरी उठा कर कन्धे पर रख ली, जूते भी कन्धे पर टाँग लिये, और गाँठों वाली एक लाठी हाथ में थामे बाहर निकला। दहलीज में आकर एक बार फिर उसने क्रास का चिह्न बनाया।

"किस्मत तुम्हारा साथ दे, यर्ने !" उसने मन-ही-मन कहा। "अगर भगवान की मर्जी यही है तो इस घर को छोड़ दे और मन को शान्त कर !"

उसने देखा कि दूर चरागाह के पास युवक शीतार खड़ा था।

"भगवान उसे क्षमा करे", यर्ने ने मन-ही-मन फिर प्रार्थना की और चलते समय बन्दगी कर लेने के उद्देश्य से अपना हाथ उठा दिया।

"बिना किसी घृणा या ईर्ष्या के मैं जा रहा हूँ", उसने सोचा, क्योंकि दुःख से ईर्ष्या कहीं अधिक बोझल होती है, बिना किसी घृणा के मैं फिर लौटूंगा और तब उस बेटे की

भाँति, जिसने कि भूल की हो, हाथ पकड़ कर उसे घर के भीतर ले जाऊँगा।"

यर्ने एक बार फिर घूमा, उसकी दृष्टि घर पर पड़ी, खेतों पर पड़ी, चरागाह पर, मैदानों पर, दूर के ज़खीरों पर और फिर घाटी की ओर बढ़ गयी।

× × ×

दोलिना की अदालत की इमारत, जो एक स्क्वायर में बनी है, बड़ी सुन्दर है। इस इमारत में चारों ओर खिड़कियाँ हैं और सिंहद्वार पर गरुड़ पक्षी अंकित है, जो राज-मुद्रा का प्रतीक है।

यर्ने इस न्यायालय के विशाल कक्ष में प्रविष्ट हुआ। एक अजीब और विचित्र भावना उसके हृदय को आच्छादित कर रही थी। वह इस स्थान से भयभीत था। यह स्थान आक्रोश और अभिशाप, बड़े-बड़े मुकदमों, अन्यायों और मिथ्या-भाषणों से भरा था।

एक दुबला-पतला बूढ़ा क्लर्क, जिसकी कमर झुकी हुई थी, पीले कागजों का बंडल बग़ल में दबाये उसकी ओर बढ़ा आ रहा था।

"नमस्कार!" यर्ने ने अपना टोप उतारते हुए कहा।

"क्या चाहते हो?" कठोर और भावशून्य दृष्टि से यर्ने की ओर देखते हुए उसने पूछा।

"मैं क्या चाहता हूँ।" यर्ने, लम्बे कदवाला यर्ने, जिसका सर छत को छूता-सा जान पड़ता था, उस कर्मचारी की ओर देख कर हँसा, "ओह, यकीन करो, मैं नहीं चाहता कि किसी को फाँसी दी जाय। यदि संभव हो और बस चले तो मैं किसी को दुःख क्यों दूं? दूसरे लोग अगर चाहें तो कस्में

उठाएं, मुकदमे दायर करें, एक-दूसरे को कोसें, पर यर्ने ऐसा कभी नहीं करेगा ; वह तो सिर्फ यह चाहता है कि उसकी बात सुनी जाय, और बिना किसी क्रोध, रोष या दुर्भावना से न्याय किया जाय।"

आश्चर्य चकित क्लर्क ने कुछ मुँह बिचका कर यर्ने की ओर देखा।

"तुम कैसी बातें कर रहे हो ? खैर, तुम किसकी तलाश में हो ?"

"न्यायी जज की !"

क्लर्क ने गुस्से से भर कर अपनी तर्जनी से सीढ़ियों की ओर इशारा किया और फिर अपने रस्ते चला गया।

गट्ठर और बड़े बूट कंधे पर लादे तथा हाथ में लाठी लिये यर्ने धीरे-धीरे उस अंधियारे जीने की सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। एक किसान, जिसका कद छोटा, हट्टा-कट्टा शरीर, क्रोध से मुँह फुलाये हुए, जीने से नीचे उतर रहा था। वह अपने हाथ इधर-उधर हवा में उठाते हुए जोर-जोर से कह रहा था :

"डाकू ! लुटेरे ! डाकू !"

यर्ने ने उसके इन शब्दों से काफी क्षुब्ध होकर पूछा :

"ये लुटेरे कौन हैं ?"

यर्ने के प्रश्न की ओर कोई ध्यान दिये बगैर ही वह किसान आगे बढ़ गया।

"वह गुस्से से पागल है," यर्ने ने सर हिलाते हुए सोचा। "यह कैसी बात है कि जहाँ वह जजों की तलाश में आया वहीं उसे लुटेरों से भेंट हो ?"

यर्ने अब एक बरामदे में आ पहुँचा। इसी असमंजस में

पड़ा था कि किस द्वार को खटखटाये। सहसा एक द्वार खुला। लम्बा कद, दुबला शरीर, बकरे जैसी दाढ़ी वाला, काले कपड़े

पहने एक व्यक्ति बाहर निकला और द्वार को आधा खुला छोड़ कर यर्ने के सामने से निकल गया। टोप हाथ में लिये, शर्माते हुए, किन्तु जिज्ञासा के साथ यर्ने इस कमरे में दाखल हुआ। लकड़ी के सीखचों के पीछे, एक बड़ी मेज के साथ, जिस पर कागजों का भारी बोझ रखा था, जज विराजमान था। जज महोदय मोटे थे। उनका सर गंजा और मूंछें लम्बी थीं। चेहरे से चिड़चिड़ापन झलक रहा था। एक युवा क्लर्क दूसरी मेज पर बैठा था। जज ने सर उठाया और कनखियों से यर्ने की ओर देखा।

"क्या माजरा है ? वह क्या चाहता है ?"

धीरे से यर्ने ने एक डग आगे बढ़ाया।

"मैं सत्य की खोज में हूँ, अन्याय के खिलाफ दावा दायर करता हूँ," उसने कहा, "और मेरा खयाल है कि मैं ठीक जगह

पर आ गया हूँ।"

नौजवान क्लर्क ने देखा और मुसकराया, जज को क्रोध आया।

"अच्छा, जल्दी कहो।"

यर्ने ने अपना गट्ठर और जूते एक कुर्सी पर रख दिये, कठघरे के पास आया और दोनों हाथ टेककर खड़ा हो गया।

"जज साहब," उसने कहा, "मैं बुरा आदमी नहीं, मुझे किसी व्यक्ति से—यहाँ तक कि उन लोगों से भी, जिन्होंने मेरा अहित किया है, कोई ईर्ष्या-द्वेष नहीं। मैं चाहता हूँ कि मेरे साथ न्याय हो, पर इसका यह अर्थ नहीं कि मैं औरों के साथ अन्याय करूँ या बुराई का बदला बुराई से दूं। मैं समझता हूँ कि ईश्वर भी मेरी बात का समर्थन करेगा; यही कारण है कि मैं यह नहीं चाहता कि शीतार को बोरिया-बिस्तर बाँध कर और जूते कन्धे पर रख कर फार्म से उसी प्रकार निकाला जाय जैसा कि मेरे साथ किया गया है। यह तो मैं चाहता ही नहीं कि उसे पहले हथकड़ी और बेड़ी पहना कर सारे गाँव में घुमाया जाय और फिर कैद कर दिया जाय। मैं यह भी नहीं चाहता कि उसको औरों के सामने शर्मिन्दा किया जाय। बेहतर है कि वह अपने-आप ही प्रायश्चित्त करले। मैं चाहता हूँ कि जो न्याय का अधिकारी है उसके साथ न्याय हो और दूसरों के साथ दया और क्षमा-शीलता का व्यवहार किया जाय।"

जज और क्लर्क ने आँखें फाड़ कर देखा।

"क्या तुम पागल हो?" जज ने जोर से कहा। "क्या तुम पहाड़ी के निकट रहने वाले शीतार के नौकर यर्ने हो?"

"हाँ, मैं वही हूँ," यर्ने ने फौरन उत्तर दिया, "कम-से-कम पिछले चालीस वर्ष से तो मैं वही हूँ : "पहाड़ी के निकट रहनेवाले शीतार का यर्ने ! लेकिन, कल, युवक शीतार के दिमाग में एक नयी सूझ उपजी। मेरा खयाल है, जज साहब, कि उसने या तो मुझसे मजाक करना या फिर मुझे परेशान करना चाहा हो अथवा हो सकता है कि धृष्टतावश ही उसने ऐसा किया हो। खैर, 'देखो, यर्ने', उस युवक शीतार ने मुझसे कहा, 'अपना बोरिया-बिस्तर बाँधो, अपनी लाठी लो और चलते बनो, बैल खरीदने नहीं, घास बेचने नहीं। अब तुम्हारा जहाँ जी चाहे वहाँ जाओ, यहाँ वापस न आना। तुम बूढ़े हो गये, तुम्हारे पैर काँपते हैं, कमर झुक गयी है, इसीलिये जाओ।' उसने यही कहा। अब, जजसाहब आप कानून की पोथी खोलें और मेरे साथ न्याय करें।"

क्लर्क अपने कागजों पर सर झुकाये बैठा था। मारे हँसी के उसके कंधे उछले जा रहे थे। जज रुष्ट था।

"आखिर तुम मुझसे चाहते क्या हो ? तुम यहाँ क्यों आये हो ?"

यर्ने का मुँह तो खुला, पर शब्द एक भी बाहर न निकला।

"तुम यहाँ क्यों आये ?" जज ने कठोर शब्दों में कहा। उसका स्वर कुछ ऐसा था मानो वह आदेश दे रहा हो। यर्ने और अधिक झुक कर पीछे हट गया।

"पर मैंने आपको सारी बात बता दी, मैंने कुछ भी झूठ नहीं कहा, और न ही मैंने सचाई को तोड़ा-मरोड़ा है, सारी घटना ठीक उसी प्रकार घटित हुई जैसी कि मैंने आपको

सुनाई है, किसी और प्रकार से नहीं। मैं अधिक क्या कहूँ ? मैं आपको बता भी क्या सकता हूँ ? अब तो आप ही कुछ कहें, फैसला करें; अब मुझे कुछ नहीं कहना। आप डाक्टर हैं, मैंने आपको अपना जख्म दिखा दिया, आप ही उसे अच्छा करें।"

जज की परेशानी बढ़ रही थी, उसकी दृष्टि कठोर से कठोरतम होती जा रही थी और वह नौवजान क्लर्क जोर-जोर से हँस रहा था।

"भले आदमी तुम मुझे जो कुछ बता रहे हो वह छूछा-पछोरने की भाँति है, मेरे पास ऐसी बकवाद सुनने को समय नहीं। अगर तुम्हें कुछ कहना ही है तो उसे अभी कहो, वरना भाग जाओ।"

यर्ने इस बात को न समझ सका। उसने अपने पैरों का आसन बदला, कान खुजलाये, पर यह न सोच सका कि अब क्या कहा जाय।

"आखिर आपकी बात का अर्थ क्या है, जज साहब ? अच्छा अगर मैं किसी दुकानदार के पास तम्बाकू खरीदने जाऊँ तो क्या वह मुझे तम्बाकू के बदले में नमक देगा ? मैं आपके पास न्याय के लिए आया,और आप मुझसे कहते हैं, 'तुम क्या बकते हो ?'.....अरे साहब, मैं नमक लेने नहीं आया.....मुझे तम्बाकू चाहिए।"

दुबला-पतला और चिड़चिड़ी मुखाकृति वाला क्लर्क कागजों का और भारी पोथा बगल में दबाए कमरे में दाखिल हुआ। जज ने उसकी ओर देखा :

"देखो, कुचनिक, इस आदमी का हाथ पकड़कर जीने

से नीचे उतार दो और न्यायालय-भवन से बाहर कर दो।"

उसने यर्ने का हाथ पकड़ लिया और उसे इतने जोर से दबाया कि वह चीख उठा। तब, जज को सम्बोधित करते हुए यर्ने ने कहा :

"अन्यायी जज, तुझसे भी ऊपर कई जज हैं, और सबसे ऊपर ईश्वर है।"

यर्ने ने अपना बोरिया-बिस्तर और जूते कंधे पर रखे, लाठी हाथ में ली और चल पड़ा। कमरे से बाहर होने से पूर्व वह रुका, घूमा और लम्बे डग भरते हुए पुनः जज के निकट आ पहुँचा।

"अब समझा, अरे अन्यायी जज, आते समय जिस किसान से मेरी भेंट हुई थी और उसने जो कुछ कहा था, उसका मतलब अब मैं समझ गया, ईश्वर ने उसे सब कुछ जता दिया था।···यह न्यायालय नहीं, यह नरक है, शर्मनाक मुकदमों और जालसाज़ियों का घर..."

यर्ने की भाव-भंगिमा कुछ ऐसी थी मानो वह कुछ और कहना चाहता था, पर उस व्यक्ति ने यर्ने को धक्का देकर कमरे से बाहर कर दिया।

नौ

सूर्यास्त हो चुका था। यर्ने इसी चिन्ता में था कि रात कहाँ गुजारे। आसमान साफ था, गर्मी थी और मन्द-मन्द बयार चल रही थी, जिससे घास का पत्ता-पत्ता हिल रहा था और वन-विटपों से मर्मर स्वर मुखरित हो रहा था। यर्ने को लगा कि पहाड़ी की तलहटी में खड़ा सदाबहार के वृक्षों का छोटा-सा वन उसे बुला रहा है। उसके उसी पाँव वन की ओर उठ चले, जो निराश प्रेमियों और गृहविहीनों का स्वर्ग था। खेतों और चरागाहों से होकर एक टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी उस हरे ढाल तक पहुँचती थी। यर्ने धीरे-धीरे चल रहा था। वह थका हुआ था और उसका हृदय भी दुःख से बोझल था। दुःख भी तो असीम था, उस दुर्निवार कटुता की भांति जो एक बार आदि-पुरुष मनु पर व्यापी थी और जब मनु में यह ज्ञान भी शेष न रह गया था कि वह अपना सर किस कोने में छिपाये।

यर्ने बड़बड़ाने लगा, "अरे, तुम लोग जो इस धरती पर बेघरबार जहाँ-तहाँ घूम रहे हो, यदि मुझसे कभी तुम्हारी भर्त्सना हो गई हो तो भी मुझसे घृणा मत करना। ओ, अभागे और निराश्रित घुमक्कड़ो, जो लम्बे रस्ते की थकान से कहीं अधिक इस दुनिया के अन्यायों से थके हैं, यदि मैंने कभी तुमको घर से निकाला हो तो अब मुझे श्राप मत देना। जिस बोझ से तुम दबे जा रहे हो, मैंने तो उसे अभी उठाया

ही है, पर देखो ! मेरे घुटने जवाब दे रहे हैं और मेरी खोपड़ी झुक कर नाभि को चूम रही है। और जब एक दिन, मैं इस बोझ को उतार फेंकूंगा, जब एक न्यायपरायण व्यक्ति ईश्वरीय दंड से मुक्त हो जायगा, तब आना। अरे तुम सब, जो दुखों और अन्यायों को झेल कर पवित्र हो गये हो, तब मेरे पास आना : भंडार खुले होंगे, मेज सजायी जायगी और तुम्हारे स्वागत का प्रबन्ध किया जायगा।"

जंगल के किनारे पहुँच कर यर्ने ने अपनी गठरी जमीन पर पटक दी और घास पर लेट गया। उस सुन्दर घाटी में अँधेरा छा गया था और पहाड़ी के नीचे सिकुड़ा–सिमटा बेताइनोवा ग्राम भी सोया पड़ा था। सेब के पेड़ों की ओट से शीतार का सफेदी से पुता हुआ मकान झांक रहा था। यर्ने को लगा मानो घर उसे इशारों से बुला रहा हो और बड़े गर्व के साथ उसका स्वागत कर रहा हो।

"तुम भी सुख से सो जाओ" यर्ने बोला। "सो जाओ। अन्याय से ख्वाब में भी भेंट न हो। मेरा स्वागत करने के लिए तैयार रहो, अपनी पूरी सजधज के साथ एक दिन मेरा स्वागत करने के लिए ! हमें एक दूसरे से शिकायत न हो। हम एक दूसरे को कटु शब्द कह कर या घृणा-पूर्ण दृष्टि से देखकर जुदा न हों ! ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे !"

यर्ने के विचार उच्च और उदार थे; पर उसके हृदय में शोक का पारावार न था। उसके चारों ओर नीरवता छा गयी। रात भीग रही थी। सदाबहार के पेड़ों का मर्मर स्वर सुनाई पड़ रहा था, मानो रात में विहार करनेवाली कोई आत्मा आहिस्ता-आहिस्ता कुछ कह रही हो।

"ईश्वर तुम्हें शांति और चिरस्थायी सुख प्रदान करे !" यर्ने ने प्रार्थना की : "वह दयालु है, वह न्यायी है, वह घड़ी आयगी जब तुम उसकी शान को देखोगे, और वह घड़ी मेरे लिए भी आयगी, मुझ जैसे गरीब पातकी के लिए भी ।"

वह उदार विद्वान, जिससे यर्ने की सबेरे भेंट हुई थी, पगडंडी पकड़े आ रहा था, और ज्योंही उसने यर्ने को देखा सीधा उसके पास आ पहुँचा ।

"अरे, यर्ने" हंसते हुए उसने कहा, "कहो घुमक्कड़ों जैसी लाठी लिये हुए तुम्हें कैसा लगता है ?"

"ईश्वर ही जाने कि उसने मुझ पर इतना भारी बोझ क्यों डाला । पर मैं उसकी इच्छा का विरोध भी कैसे करूँ ?" यर्ने ने उत्तर दिया ।

वह विद्वान यर्ने के पास ही घास पर लेट गया ।

"जानते हो कि यह मेरा घर है ?" वह हँसा·····"काफी बड़ा घर है, देखते हो, न कोई दीवाल, न कोई हद ! यहां ऐसा नहीं कि पड़ोसी को जगह देने के लिए तुम्हें सिकुड़ना पड़े, यहाँ तो सभी के लिए पर्याप्त स्थान है और छत भी इतनी ऊँची कि चाहे जो जितना लम्बा हो, झुकने की जरूरत नहीं । देखो यह विशाल सम्पत्ति, न किराया देने की जरूरत और न कर चुकाने की ।·····यर्ने ! हमें किसी बात की शिकायत नहीं । जब लोग अन्यायी हों तो फिर एकमात्र ईश्वर का ही आसरा है । लोग हमें लाठी पकड़ाकर एक ऐसे रास्ते पर डाल देते हैं, जिस पर चलने की हमारी कभी इच्छा नहीं होती । पर ईश्वर ने हमारे लिए इतना विशाल भरापूरा घर खोल दिया है, वह इसे आवारागर्दों और घुमक्कड़ों के लिए ही बनाये

हुए हैं।"

यर्ने ने उस विद्वान की ओर दयार्द्र दृष्टि से देखा।

"तुमको जिस अन्याय का सामना करना पड़ा वह अवश्य ही भीषण रहा होगा, तुम्हारे हृदय में जो जख्म है वह भी बड़ा गहरा होगा, नहीं तो अपनी ही हँसी उड़ाने के लिए तुम ऐसी बात क्यों कहते, और उस ईश्वर का नाम भी कैसे लेते, जिस पर तुम खुद यकीन नहीं करते ?"

विद्वान उत्तरोत्तर काले पड़ते आकाश की ओर देखता हुआ कुछ क्षण मौन रहा और फिर हँसते हुए बोला :

"यर्ने, ईश्वर की कृपा तुम्हारी अपेक्षा मुझ पर अधिक रही। उसने मुझे आरम्भ में ही अन्याय दिखा दिया। पर उसने तुम्हारे साथ तो अन्त तक अन्याय किया है। मैं मुश्किल से आध घंटे ही अन्धकार में रहा, पर तुम इन तमाम चालीस वर्षों में भूल करते रहे। इससे पूर्व कि मैं अपनी मूर्खता का और अधिक परिचय देता लोगों ने मुझे बुद्धिमानी का रास्ता दिखा दिया। पर तुम चालीस वर्ष तक अन्धकार में भटकते रहे···यर्ने इतनी दूर आकर फिर पीछे लौटना बड़ा कठिन होता है। मैंने आँखें खोली ही थीं, निरा बच्चा था, कि तभी से लोगों ने मुझे ठुकराना शुरू किया। जहाँ भी मैं गया वहीं कोई-न-कोई ठोकर लगाता रहा। पर इन ठोकरों से ही मैं यह समझ सका कि वस्तुस्थिति क्या है। यर्ने, उन्होंने जबरन मुझे यह सिखाया कि अधिकार सिर्फ उनके लिए है, जिन्होंने उन्हें बनाया है ····· तब फिर अभियोग लगाने या दावा दायर करने, ईश्वर और मनुष्य से झगड़ा करने की भी क्या जरूरत ? सत्य, यदि वह तुम्हारे अन्तराल में कुंठित हो चुका

है तो भी अमूल्य निधि है ····· पर अब करना क्या चाहते हो यर्ने ?"

"मैं किसी अच्छे और प्रसिद्ध जज की तलाश करूँगा, कल बड़े सवेरे मैं रवाना हो जाऊँगा, और अब तो मैं सोने जा रहा हूँ।"

"अच्छा, सो जाओ, नमस्कार ! पर इतना तो बता दो कि ऐसे जज की खोज कहाँ करोगे ?"

"मैं उनके पास जाऊँगा, जिनके जीवन का लक्ष्य ही न्याय और कानून की रूह से फैसला करना है। ईश्वर ने न्याय को धरती पर भेजा है और वह यह नहीं चाहता कि लोग उसे किसी गुप्त स्थान पर छिपा रखें। ईश्वर इसकी इजाजत नहीं देता कि लोग उसके आदेशों का उल्लंघन करें। ईश्वर न्यायी है, वह यर्ने की परीक्षा, ऐसे नौकर की परीक्षा अन्त तक नहीं लेगा, जिसका उद्देश्य ईश्वरी मर्यादा का पालन करना ही रहा है।"

"यर्ने, तुम्हारा विश्वास दृढ़ है, और तुम्हें उससे वंचित करनेवाले महान् पाप के भागी होंगे। मैं लौटने तक तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा। मैं उस दृश्य को देखने का इच्छुक हूँ जब बूढ़ा यर्ने, फटे हाल और नंगे सर बीच सड़क पर खड़ा होकर कोसेगा और कस्म उठायगा और लोगों के आश्चर्य और बच्चों के खिलवाड़ का साधन बनेगा। यर्ने, अच्छा मान लो कि ईश्वर अथवा बादशाह के यहाँ से भी जब तुम्हें न्याय न प्राप्त होगा तब लौटकर क्या करोगे ?"

"अरे अविश्वासी, यदि आकाश का अस्तित्व मिट जाय, और वें तारे जो हमारी ओर ताक रहे हैं, न रह जांय और

हम-तुम भी बाकी न रहें, तो फिर तुम क्या करोगे ? अरे तुम कितने बड़े ईश्वर-निन्दक हो, अन्याय ने तुम्हारा क्या हाल कर डाला है । प्रार्थना करो !···मैं भी भगवद्भजन करने जा रहा हूँ ।"

दोनों व्यक्ति आँखें फाड़े आकाश की ओर ताक रहे थे । घाटी में अन्धकार फैल रहा था । परन्तु आकाश शनैः-शनैः आलोकित होने लगा था । लोहित पूर्व में नवोदित पूर्ण-चन्द्र की आभा से तारों की टिमटिमाहट क्षीण हो चली थी ।

दस

यर्ने ल्युब्लियान की ओर चल पड़ा। जेब के पैसे गिने, उसे लगा मानो वह धनी है, क्योंकि उसने हर साल लगभग एक फ्लोरिन बचाया था। रवाना होने से पहले उसने घाटी के चारों ओर दृष्टि दौड़ाई, टोप उतार दिया और क्रास का चिह्न बनाया। अभी रात बाकी थी, सूर्योदय नहीं हुआ था, घास ओस-कणों से भरी थी और घाटी में ठंड के साथ-साथ कुहासा छा रहा था। यर्ने को ठंड लगी, उसका चेहरा और कपड़े ओस से गीले थे, मानो पानी में भीगे हों।

"उस विद्वान की तरह" यर्ने ने सोचा, "ओस-कणों से भरे बिस्तर और इस नीलाकाश के नीचे रहने का आदी अभी मैं नहीं हुआ।"

उसने अपनी गठरी काँधे पर रख ली और खेतों तथा मैदानों को पार करता हुआ अपने रास्ते पर बढ़ चला। उसको लगा मानो थकान मिट चुकी है और चाल में भी भारीपन नहीं है। उसका चित्त भी शान्त और प्रसन्न था।

"गाड़ी पर मैं रकम क्यों खर्च करूँ," उसने मन-ही-मन सोचा। "जब-तक ये बूढ़े पैर इस काया को ढो सकते हैं, तब तक सुस्ती दिखाना या याचना करना पाप है। पर हाँ, अगर कोई मसीही पास आकर यह कहेगा कि "यर्ने, गाड़ी पर बैठ जा, दो आदमियों के बैठने के लिए जगह है और घोड़ी भी नयी है, तो भगवान का नाम लेकर मैं उसमें बैठ

जाऊँगा।"

यर्ने के मस्तिष्क में चलनेवाली यह विचार शृंखला अभी समाप्त हुई ही थी कि पीछे से घड़-घड़ करती हुई एक गाड़ी आ पहुँची। गाड़ी को हाँकनेवाले किसान ने यर्ने के निकट आकर घोड़े की रास खींची।

"कहाँ जा रहे हो?"

"ल्युबलियाना!"

"चाहो तो गाड़ी पर बैठ लो गोस्चेवी में उतर जाना। पर ल्युबलियाना किस काम से जा रहे हो?"

"न्याय की तलाश में।"

किसान का कद नाटा और कन्धे चौड़े थे। उसने संदेह भरी दृष्टि से यर्ने की ओर देखा।

"तुम हो कौन ?" उसने प्रश्न किया।

"यर्ने, बेताइनोवा में रहता हूँ।"

किसान कुछ क्षण सोचता रहा।

"बेताइनोवा में तो मैं इस नाम के किसी व्यक्ति को नहीं जानता। कौन यर्ने ?"

"नौकर यर्ने ; कल तक मैं शीतार के यहाँ था।"

"और अब तुम उस पर दावा दायर करने ल्युबलियाना जा रहे हो ?"

"नहीं, मेरा मतलब है···· मैं यह नहीं चाहता कि उसे जेल में डाल दिया जाय या फाँसी दे दी जाय। मैं तो केवल यह चाहता हूँ कि मेरे साथ न्याय हो।"

"शीतार ने तुम्हारे साथ क्या किया ?"

"मैंने उसके यहाँ चालीस वर्ष काम किया; और अब उसने मुझसे कह दिया कि "भाग जाओ।"

किसान की मुद्रा कुछ कठोर हुई, उसने घोड़े के चाबुक मारी।

"अच्छा तो अब तुम उसके खिलाफ मुकदमा दायर करने जा रहे हो ?"

"मुकदमा दायर करने ! तुम्हारा तात्पर्य क्या है ? अरे मैं तो जज के सामने सिर्फ अपना मामला रख दूंगा। मैं चाहता हूँ कि मेरे साथ और दूसरों के साथ भी न्याय हो। किसी के साथ अन्याय हो, मैं यह नहीं चाहता।"

"लेकिन, क्या तुम्हारा खयाल है कि तुम सफल होगे ?"

"अवश्य ! हो सकता है कि दुनिया में जज सैंकड़ों हों, पर कानून तो सर्वत्र समान है।

"तुम्हें कायाबी हासिल नहीं होगी, मैं बतलाता हूँ।"

यह कहते हुए किसान सहसा यर्ने की ओर इस प्रकार घूमा कि घोड़ा प्रायः खड़ा हो गया।

"सुनो, नौकर, मैं तुमको कुछ अच्छी सलाह दे रहा हूँ। गाड़ी से फौरन उतर पड़ो और जहाँ से आये हो वहीं लौट जाओ। आज तक नौकर मालिक के खिलाफ मुकदमा चला कर न तो कभी कामयाब हुआ है, और न आगे ही होगा, और यदि कहीं मालिक सच्चा हुआ तब तो नौकर के जीतने की और भी आशा नहीं। तुम बूढ़े हो चले हो, तुम्हें तो ये बातें भली-भाँति समझ लेनी चाहिएँ। जानते हो क्या," किसान कह रहा था, "अगर कोई नौकर सही या गलत मुझ पर मुकदमा चला दे तो मैं क्या करूँगा ? मैं दूसरे नौकरों को एक-एक मजबूत लाठी देकर कहूँगा 'इसें इतना पीटो कि आगे के लिये यह समझ जाय कि कौन मालिक है और कौन नौकर' ·· वह सराय नजर आ रही है न ? मुझे उससे आगे नहीं जाना।"

यह कह कर उसने अपनी चाबुक से मैदान की ओर इशारा किया, कोई भी मकान नजर नहीं आ रहा था।

यर्ने इस इशारे को समझ गया। अपने बूट और गठरी लेकर वह गाड़ी से नीचे कूद पड़ा और लुढ़कता हुआ सड़क के किनारे की खाई में जा गिरा। किसान ने चाबुक घुमायी गाड़ी खड़खड़ाती हुई धूल के बादलों में छिप गयी। यर्ने कातर दृष्टि से उसकी ओर ताकता रह गया।

"यह आदमी निरा बच्चा है" उसने सोचा, "उसको खाने को रोटी और पीने को बढ़िया किस्म की शराब मिल रही है, वह क्या जाने भूख किसे कहते हैं, अन्याय तो कभी देखा सुना नहीं, वह यह भी नहीं जानता कि सचाई क्या है। पर ईश्वर उसका फैसला भी अपने नियमों के अनुसार और कृपालु होकर करेगा।"

सूर्य तेजी से आसमान में चढ़ता चला आ रहा था। प्रखर किरणें यर्ने को भूनने लगीं। गर्मी के कारण वह जल्दी ही थक गया। एक घंटे चला, दो घंटे चला, पर अब पैर मानो अकड़े जा रहे थे। दूर किसी गिरजे में बजनेवाली दोपहर की घंटियाँ सुनायी दे रही थीं। यर्ने भूखा था, पर उसे न तो अर्से तक इन्तजार करना पड़ा और न देर तक तलाश ही करनी पड़ी, क्योंकि सड़क के किनारे उसे एक सफेद सराय नजर आयी।

सराय की बैठक में सिर्फ दो व्यक्ति थे। एक नौजवान किसान, जो अलस्सुबह से शराब पीकर मस्त रहता और तमाम दिन काहिली के साथ गुजारता था। दूसरा दुबला-पतला छोटे कद का एक बूढ़ा व्यक्ति था। उसके बाल पक गये थे, चीथड़ों से तन ढंके हुए यह वृद्ध अकार्दियन बजाते हुए मदिरापान सम्बन्धी गीत गा रहा था। उन दोनों को देखकर यर्ने का जी भारी हो गया। उसने सर्व-प्रथम उनसे बन्दगी की और फिर फर्श पर बैठ गया।

"यहाँ आओ," नौजवान किसान ने यर्ने को बुलाया।

यर्ने ने जान-बूझकर उसके बुलावे की ओर ध्यान नहीं दिया, वह उनके पास बैठा तक नहीं। दूसरी मेज पर जा

बैठा।

"तो क्या हम बदमाश हैं जो तुम्हे हमारे पास बैठना तक पसन्द नहीं ?" किसान ने अपनी मुद्रा शांत और संयत बनाने का प्रयत्न करते हुए पूछा ···· "और जा कहां रहे हो, चाचा ?"

"ल्युबलियाना।"

"क्या अदालत को ?"

"हाँ, मुकदमा दायर करने।"

"आप सफल हों। किन्तु आप दावा किस पर दायर करने जा रहे हैं ?"

"अपने मालिक पर !"

"क्या ?"

"अपने मालिक पर, जैसा कि लोग कहते हैं, उस किसान पर, जिसने मुझे यह कहने पर गाड़ी से उतार दिया, और मेयर पर भी।"

"तुम क्या कह रहे हो ? तुम उस पर क्या आरोप लगा रहे हो ?" उस नौजवान किसान ने लड़खड़ाती हुई जबान से फौरन कहा। इस युवक को इतना प्रसन्न देख कर यर्ने को आश्चर्य हुआ।

"क्या ? अरे मैंने अर्से तक काम किया। एक दिन था कि मैं जवान था, अब मैं बूढ़ा हूँ, और इसीलिये अब उसने मुझ से कह दिया कि, भाग जा !"

"हा ! हा !" किसान जोर से हँस पड़ा और उसने बूढ़े गायक के कन्धे पर जोर का हाथ मारते हुए कहा :

"सुन रहे हो, एंड्रू, सुना तुमने ? नौकर मालिक पर

मुकदमा दायर करने जा रहा है।"

बूढ़े ने घुटनों के बीच अकार्दियन को जोर से दबाया, बाजे से जोर की चीख निकली और वह बूढ़ा इस प्रकार ठठाकर हँसा कि उसकी आँखों से आँसू बह निकले। मारे हँसी के साँस फूलने लगी, किसान खाँसने लगा और गायक की ओर अंगुली से संकेत करते हुए बोला :

"उसे देखो ! उसके दिमाग में यह बात कभी नहीं आयी कि मुझ पर दावा दायर करे, क्योंकि वह समझदार है, जानता है कि क्या सही है और क्या गलत। कुछ साल पहले मैंने उसे नौकरी से निकाल दिया—सदा के लिये भगा दिया—इसलिये कि मुझे ऐसा ही जंचा और वह अब खुश है, उसे मुझसे कोई शिकायत नहीं, मैं उसके साथ जो चाहूँ करूँ, मैं उस पर हँस सकता हूँ, और चाहूँ तो चुटकी भी काट सकता हूँ।"

यह कहते हुए उसने उस बूढ़े की बाँह में इतने जोर से चुटकी काटी कि वह बच्चे की भांति चीख उठा, मुँह चुचियाते हुए घुटने ठोड़ी से लगा दिये ··· फिर दोनों जोर से हँस पड़े।

शराब का गिलास पकड़े हुए यर्ने के हाथ बराबर काँप रहे थे। शराब खत्म हुई।

"अरे नास्तिको, तुमने अपने को गिराने के साथ-साथ ईश्वर की मूर्ति को भी गन्दा कर दिया।"

यर्ने तुरन्त चल देने को तैयार हुआ। गट्ठर कन्धे पर रख कर वह बाहर हो गया। खुली खिड़की से होकर आने-वाला उन शराबियों का ठहाका उसे अब भी सुनायी दे रहा था ···

अब सड़क चौड़ी थी। दूर, सामने यर्ने को नगर पर छाये

'धूल के बादल' दिखायी दे रहे थे। एक औरत गोदी में एक बच्चे को चिपकाये यर्ने की ओर आ रही थी। उसके पैर सीधे नहीं पड़ रहे थे, जैसे वह नशे में हो। औरत जोर-जोर से रो रही थी, बच्चा भी, दोनों हाथ माँ की गर्दन में डाले रो रहा था। उस महिला ने यर्ने को अपनी सूजी हुई आँखों से देखा और चीखने लगी।

"भले आदमी, चाहे तुम कोई भी हो, मुझे समझाओ! क्या यही न्याय है ?"

उसने अपने बच्चे को संभाला और उसका मुँह उठा कर यर्ने को दिखलाया। बच्चा खूबसूरत था पर उसकी आँखें सुर्ख थीं, ज्योति हीन।

"भले आदमी", उसने रोते हुए कहा, "न्याय कहीं नहीं, ईश्वर के यहाँ भी नहीं। क्या मेरे बच्चे ने ईश्वर के सामने, उसके भक्तों के सामने कोई अपराध किया था, जिसके कारण उसे अपने माँ-बाप को भी देखने से वंचित किया गया। जिन हाथों ने मेरे निर्दोष बच्चे को अन्धा बनाया वे नष्ट हो जाँय। मेरा बच्चा, इतना निश्छल, फिर भी इतना शापित! बोलो भले आदमी! क्या स्वर्ग में या इस पृथ्वी पर कहीं न्याय नहीं ?"

उसने बच्चे को फिर अपनी छाती से चिपका लिया, रोने लगी और अपने रास्ते चली गयी।

यर्ने ने अपना सर झुका लिया।

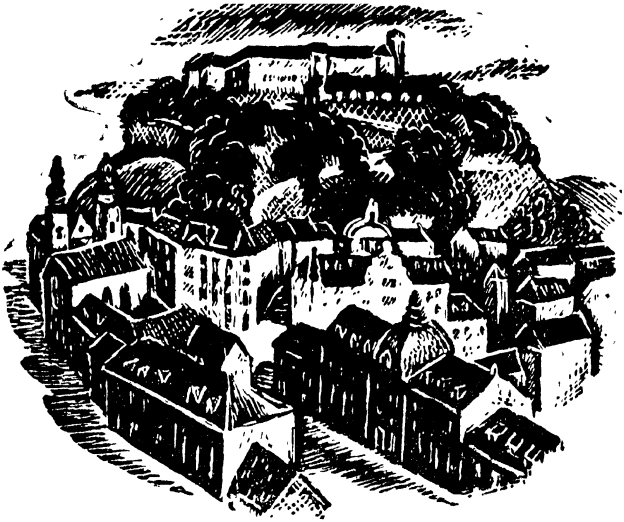

ग्यारह

ल्युबलियाना काफ़ी बड़ा नगर है। ऊँचे-ऊँचे मकान हैं, जो सीधी कतार में, एक दूसरे से सटे इस तरह बने हुए हैं कि दो मकानों के बीच जरा भी जगह नहीं छूटी। सड़कें लोगों से खचाखच भरी रहती हैं और ऐसा जान पड़ता है मानो लोगों की भारी भीड़ गिरजे में आयोजित किसी बड़ी प्रार्थना में भाग लेने जा रही हो, अथवा कोई बड़ा जलूस निकल रहा हो। पादरियों की संख्या तो इतनी अधिक है कि अगर सबसे सलाम करने लगें तो सारा दिन टोप हाथ में लिये-लिये ही गुजर जाय। सुबह से शाम तक गिरजों की घंटियाँ बजती रहती हैं। ऐसा जान पड़ता है मानो मेला लगा हो, सारे दृश्य को देख कर आदमी भौंचक-सा रह

जाता है; क्या देखे क्या न देखे, कहाँ जाय कहाँ न जाय और किससे बात करे अथवा किससे नहीं। इस विचित्र नगर को आँखें फाड़-फाड़ कर देर तक देखता हुआ यर्ने सड़कों पर घूमता रहा। इसके बाद वह एक गिरजे में गया, किनारे की एक वेदी के आगे घुटने टेक कर बैठ गया और बड़े भक्ति-भाव से प्रार्थना की। गिरजे में पूर्ण अन्धकार था। यर्ने को लगा जैसे वह इस एकान्त में ईश्वर के सामने खड़ा उससे बातें कर रहा है। उसकी प्रार्थना पूरी हुई। एक बार फिर उसका आत्म-विश्वास दृढ़ हो गया।

"मार्ग भले ही लम्बा हो", उसने सोचा, "रास्ता भले ही कठोर और कंटकाकीर्ण हो, पर एक-न-एक दिन उसका अन्त तो होगा ही, एक दिन ऐसा आयगा जब द्वार खुलेंगे। ईश्वरी न्याय कंजूस के धन की भाँति गुप्त नहीं। हो सकता है कि मैं सौ दरवाजे खटखटाऊँ और मेरा परिश्रम व्यर्थ जाय पर एक द्वार ऐसा होगा जो खटखटाते ही खुल जायगा।"

यर्ने फिर बाहर सड़क पर आगया। बगल से गुजरते हुए एक नागरिक से उसने पूछा :

"यहाँ जज लोग कहाँ बैठते हैं, जिससे मैं उनके आगे अपना मुकदमा पेश कर सकूं ?"

उस व्यक्ति ने बड़े आश्चर्य से यर्ने की ओर देखा और फिर मुसकराते हुए बोला :

"बाबा, अच्छा हो कि तुम किसी वकील की तलाश करो जो तुम्हारी पैरवी कर सके।"

"मेरे अधिकारों की बात जब इतनी खुलासा है कि उसे अंधा भी देख सकता है और बहरा भी सुन सकता है तब

भला वकील की क्या दरकार ? मैं किसी भेड़ या गलियारे के झगड़े को लेकर दावा दायर करने नहीं आया, मैं किसी को धोका देना नहीं चाहता। तब मैं वकील क्यों करूँ ? मैं कोई कानूनी मुकदमा दायर करना नहीं चाहता; मैं तो सिर्फ न्याय की खोज में आया हूँ।"

"मेरे दोस्त, न्याय पाने में तुम्हें काफी अर्सा लगेगा। न्याय की खोज करने के लिए अनेकों निकले···अनेकों लोग थे और सभी बीच में ही गिर गये और यहाँ तक की ईसा मसीह को भी अन्यायी जजों के कारण क्रास में लटकना पड़ा।"

इतना कह कर वह व्यक्ति मुसकराता हुआ आगे बढ़ गया।

"इस व्यक्ति को भी अन्याय का सामना करना पड़ा है", यर्ने ने सोचा, "क्योंकि उसने हँस करके अपनी रुलाई को छिपाया है।"

काफी अर्से तक वह लोगों से पूछता-जाँचता सड़कों पर घूमता रहा। आखिरकार उसे जिस चीज़ की तालाश थी, वह मिल गयी।

काफी बड़ा और ऊँचा भवन था, ऐसा विशाल भवन यर्ने ने अपने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था। डर-डर कर कदम बढ़ाते हुए वह उस भवन में दाखिल हुआ। लोग बड़े कमरे में से आ जा रहे थे, इधर उधर, कोई ज़ीना चढ़ता तो कोई उतरता, शहर के लोग और किसान, औरत-मर्द सभी। यर्ने की समझ में नहीं आ रहा था कि किस ओर जाय—दायें, बायें, सामने या ऊपर। एक व्यक्ति उसकी ओर आ रहा था। यर्ने ने पहले तो उसे सलाम किया और फिर पूछा कि जज कहाँ बैठते हैं। उस आदमी ने यर्ने की ओर

देखा तक नहीं। कन्धे मटका कर आगे बढ़ गया। यर्ने टोप हाथ में लिये बड़े हाल में ही खड़ा रहा। समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। सहसा ज़ीने के ऊपर एक स्वर सुनाई पड़ा। पुरुष का स्वर गंभीर था और स्त्री चीख-सी रही थी।

"डाकू ! बदमाश !"

लम्बे डग बढ़ाते हुए एक पुरुष और एक स्त्री ज़ीने से नीचे आ रहे थी। क्रोध से उनके चेहरे तमतमा रहे थे। औरत अच्छे कपड़े पहने हुए थी। रुमाल में बँधी एक पोटली उसके हाथ में थी। पुरुष के हाथ में गाँठदार छड़ी थी जिसे वह पत्थर की सीढ़ियों पर टेकता हुआ नीचे उतर रहा था। ज़ीने के ऊपर कहीं से एक स्वर सुनाई पड़ रहा था। वह किसी भद्र पुरुष की आवाज़ थी, क्योंकि काफी मधुर और नम्र थी। वह कह रहा था :

"संभल कर बात बोलो, कहीं बाद में पछताना न पड़े !"

यर्ने का हृदय किसी अज्ञात भय से भर गया। वह धीरे-धीरे, जैसे किसी भारी बोझ से दबा जा रहा हो, ज़ीने की ओर बढ़ा—किसान की छड़ी टेकने की आवाज़ अब उसके कानों में पड़ रही थी।

"उसने भी तो कहा था", यर्ने ने विचार किया, "कि जज खोजने निकला पर बदमाशों के बीच में आ फँसा।"

ज़ीने की ऊपरी सीढ़ी पर पहुँचकर यर्ने रुक गया। उसे यह पता न था कि अब किधर जाय। इन्तज़ार करने लगा कि शायद कोई आकर यह पूछेगा ही कि आखिर वह यहाँ क्यों आया। दर असल, बगल से गुज़रते हुए एक नौजवान ने यर्ने को घूर कर देखा। यर्ने गठरी और जूते हाथ में लिये

खड़ा था। युवक ने ठिठक कर पूछा :

"क्या चाहते हो ?"

"बताता हूँ। मुझे ज्ञात नहीं कि अब किस ओर जाना है। न्यायालय इतना विशाल है। भला जज कहाँ मिलेंगे ?"

युवक हँसने लगा।

"बाबा, यहां कई जज हैं",वह बोला, "आप किस जज से और क्यों मिलना चाहते हैं ?"

"मैं न्यायी जज से मिलना चाहता हूँ, मुझे उसके नाम या शक्ल से कोई मतलब नहीं 'मैंने चालीस साल काम किया, मकान बनाया, घर-गृहस्थी जुटाई। अब, मुझे बताओ —सेब के पेड़ किसके हैं। उस आदमी के, जिसने कि उन्हें लगाया और कलम बांधी, या कि उस आदमी के जिसने राह चलते हुए पके सेब चुन लिये हों ?·····क्योंकि मुझसे कहा गया है, तुमने चालीस साल काम किया, तुमने घर बनाया, घर-गृहस्थी जुटायी, अब जाओ दुनिया देखो और अपने अधिकारों की खोज करो। मैं निराश नहीं हुआ, अपने अधिकारों की तलाश में निकला, और इसीलिए यहाँ आया हूँ। दोस्त, मैं कहाँ जाऊँ ? बताओ, मैं कौन-सा द्वार खट-खटाऊँ, यहाँ अनेकों द्वार हैं ?"

यर्ने के पास अब अकेला वह युवक ही नहीं बल्कि दो और आ गये थे। सभी हँस रहे थे।

यर्ने को उनकी हँसी बुरी लगी, बड़े तीखे शब्दों में बोला :

"तुम इतने आदमी मेरे सामने खड़े हो, सभी पढ़े-लिखे हो, मैंने जो कुछ पूछा उसका जवाब दो न !"

एक दुबले-पतले क्लर्क ने, जिसके दाढ़ी थी और जो चश्मा लगाये हुए था, अपनी दाढ़ी खुजलाई और हँसा।

"क्या तुम्हारे नाम सम्मन जारी किया गया है ?"

"सम्मन ? नहीं ! मैं अपनी मर्जी से अपने अधिकारों की तलाश में आया हूँ। जब इस मामले को और कोई जानता ही नहीं तब फिर मेरे नाम सम्मन कैसे जारी किया जा सकता है ? मैं पहले बताऊँगा तब तो बाद में वे फैसला करेंगे।"

"क्या अर्जी दावा तैयार कर लिया है ?"

"किसलिये ? मैं किसी पर कोई अभियोग तो नहीं लगाता, मै चाहता हूँ कि मेरे साथ न्याय हो, पर किसी के साथ अन्याय हो यह भी नहीं चाहता। चाहे किसी ने कितना बड़ा गुनाह क्यों न किया हो, पर मैं यह नहीं चाहता कि मेरी वजह से किसी को फांसी दी जाय या जेल में डाला जाय। मुझे ऐसे वकील की भी दरकार नहीं, जो विवेकशून्य होकर मेरा अर्जीदावा तैयार करे। जज पढ़ सकते हैं। हाँ, उनके कान भी हैं और सुन भी सकते हैं। बताओ मैं किधर जाऊँ ?"

उन्होंने हास पूर्ण दृष्टि से एक दूसरे को देखा। दाढ़ी वाला क्लर्क फिर हँसा।

"मेरे साथ आओ," उसने कहा, "मैं तुम्हें न्यायी जज तक पहुँचाये देता हूँ।"

यर्ने उसके साथ चल पड़ा। दूसरे भी, जो बातें सुन रहे थे, उनके पीछे हो लिये।

बारह

वे एक द्वार के पास पहुँचे। द्वार खुला हुआ था। कमरे में, बड़ी मेज के पीछे, एक युवक विराजमान था। उसकी मूछें सुन्दर थीं और आँखों से प्रसन्नता झलक रही थी। उसने नजरें ऊँची कीं। लम्बे कदवाले यर्ने और उसके मार्ग-दर्शकों को देख कर उसे आश्चर्य हुआ। दाढ़ीवाले क्लर्क ने अपने कन्धे तक हाथ उठा कर अँगूठे से यर्ने की ओर संकेत करते हुए आँख दबा कर हँसते हुए कहा :

"कोशिर, तुम मजाकिया व्यक्ति हो। यह व्यक्ति, इस विशाल विश्व में निष्पक्ष जज की तलाश कर रहा है। मैं इसे तुम्हारे पास लाया हूँ। इसे समझाओ कि सेब का पेड़ किसका है—जिसने लगाया उसका, या जिसने उसके फल बीने ?"

इस प्रकार उसने दैवी न्याय का उपहास उड़ाने का साहस किया।

युवक जज हँसा नहीं, इसके प्रतिकूल उसने अपनी सुन्दर भौंहें सिकोड़ लीं।

"यह कैसा मज़ाक ? भले आदमी तुम कौन हो और किससे मिलना चाहते हो ?"

यर्ने करीब आ गया।

"मैं बेताइनोवा में रहता हूँ। मेरा नाम यर्ने है। मेरे साथ बड़ा अन्याय हुआ है। मैं उस न्याय की तलाश में दुनिया भर में भटक रहा हूँ, जिसे ईश्वर ने इस दुनिया के लिए बनाया है और जो जजों की किताबों में लिखा है।"

"तुम्हारे साथ क्या हुआ ? तुम किसके खिलाफ मुकदमा दायर करनेवाले हो और क्यों ?"

मैं किसी के खिलाफ दावा दायर नहीं कर रहा, उसकी कोई जरूरत भी नहीं, और न मैं यही चाहता हूँ कि किसी को दुःख पहुँचा कर मुझे मेरे अधिकार दिलाये जायं। मैं यह भी नहीं चाहता कि दूसरे सिर्फ इसलिए भूखे मरें, जिससे कि मुझे खाना मिल सके ··· अब मैं सारी घटना ज्यों-की-त्यों आपका सुनाता हूँ—बात इतनी सीधी-सादी है कि एक बच्चा भी आसानी से उसे समझ सकता है। फिर आपके लिए, जो विद्वान हैं और कानून जानते हैं, यह बात और भी आसान है ····· मैंने बेताइनोवा में चालीस साल तक काम किया, वहाँ के खेतों या चरागाहों में चप्पा भर भी जमीन बाकी नहीं, जो मेरे खून-पसीने से तर न हो। इन लम्बे चालीस वर्षों तक मैंने काम किया और ईश्वर ने मेरी मेहनत सफल की ····· तब, बूढ़ा शीतार, पुराना मालिक मर गया और अब उसका बेटा बदमाश, नशे में चूर आकर अपमान भरे शब्दों में कहता है, 'यर्ने अब इस सब का एक मात्र मालिक मैं हूँ; अपना बोरिया-बिस्तर बाँध कर इस घर को छोड़ दो। तुम्हारा काम हो चुका, तुम बूढ़े हो गये, मरने के करीब हो, इसलिए अब मैं तुमको अधिक समय तक रखना नहीं चाहता। जिस घर को तुमने बनाया, हर आपदा से जिसे बचाया, उसी घर में अब तुम्हारे लिए ठौर नहीं। जो रोटियाँ तुमने पकाई, उनमें से अब मैं एक टुकड़ा भी तुमको नहीं दे सकता, हाथ में लाठी थाम लो और जहाँ जी चाहे जाओ!' उसने इस ढंग से बात की

और इस प्रकार उसने यह कह कर कि सेव के पेड़ उसके हैं, जिसने फल बटोरे न कि उसके हैं जिसने पौधे लगा कर कलम तैयार की, न्याय और नियम के खिलाफ काम किया। यही कारण है कि मैं उस न्याय की खोज में निकल पड़ा जिसे ईश्वर ने इस धरती पर भेजा है और जिसे कोई भी इंसानी ताकत रोक नहीं सकती। अब फैसला कीजिए!"

यर्ने ने सचाई को बिना तोड़े-मरोड़े बड़ी दृढ़ता के साथ और आहिस्ते से अपनी बात कही थी। युवक जज ने सब कुछ सुना और फिर शोक भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा।

"बेताइनोवा लौट जाओ", आखिरकार जज ने कहा, "उस कठोर और अन्यायी मालिक के पास जाओ, और उससे कहो, 'न्याय करो, दया करो, अपने घर में मुझे ठौर दो, और चूंकि अब मैं बूढ़ा हो गया, हूँ इसलिये रोटी का एक टुकड़ा मुझे भी दो।' इस प्रकार उससे कहो। निस्सन्देह, वह अपने किये पर पश्चात्ताप करेगा और यह महसूस करके कि उसने कितनी बड़ी भूल की है तुम्हारी प्रार्थना को स्वीकार कर लेगा।"

यर्ने इन शब्दों को सुनकर स्तब्ध रह गया। काफी देर तक चुप रहने के बाद उसने पूछा :

"क्या ? आप जज हैं ?"

"हाँ, मैं जज हूँ।"

"और क्या आपने दैवी कानून के अनुसार ही फैसला किया है ?"

"हाँ !"

यर्ने का झुका हुआ शरीर अकड़ कर सीधा हो गया—

जज और द्वार पर खड़े उन काहिल नोजवानों के कद से उसका कद ऊँचा हो गया था।

"और मैं आपको बताता हूँ जज महोदय", वह चिल्ला उठा, "आपने दैवी या इंसानी न्याय के अनुकूल बात नहीं कही। क्या ईश्वर का न्याय यही है कि जिस बिस्तर को मुलायम और आरामदेह बनाने में मुझे चालीस साल लगे उस पर कोई काहिल आकर लेटे ? क्या ईश्वरी आदेश यही है कि वह यर्ने, जिसने सुन्दर मकान बनाया हो, अब सड़क के किनारे किसी खाई में गिर कर मरे! अपनी पोथियाँ खोलो! मैं पढ़ तो नहीं सकता, पर मैं उन काले अक्षरों को देखना चाहता हूँ, जिनमें ईश्वर का यह आदेश लिखा गया है। मुझे वे किताबें दिखाओ, मैं उनकी काली जिल्दें देखना चाहता हूँ। मुझे बताओ क्या उनमें यही लिखा है कि, 'तुमने मेहनत की, अपने खून से तुमने धरती को उपजाऊ बनाया, जिससे उसमें काफी अनाज पैदा हो, हरी-भरी घास उगे लेकिन अब चूंकि तुम्हारे शरीर में खून बाकी नहीं रहा, इसलिये भाग जाओ।' क्या यही लिखा है कि 'मैं, जिसने अपने परिश्रम से अनाज के भंडार भर दिये, अब गाँव-गाँव में भटकूं, एक के बाद दूसरा दरवाजा खटखटाता फिरूँ, गाँववालों के लिए सर दर्द बन जाऊँ, घरों की रखवाली करनेवाले कुत्ते मुझे देख कर भूकें, और मैं रोटी का एक-एक टुकड़ा माँगता घूमूं ?' मुझे यह समझाइये! और यह भी कि : मेरे उस परिश्रम का क्या हो, उसे कहाँ रखू ? वह धरती में कई हाथ नीचे गड़ा है। उसे कैसे खोदूं ? और यदि खोद भी सकूं तो उसे लपेट कर गठरी बना कर कंधे पर रख कर कैसे ले जाऊँ ?

अपना चालीस साल का परिश्रम, मैं उसे कैसे रखूँ कि वह मेरे इस बुढ़ापे में काम आये ? इस गठरी को देखो—बस इसी में मेरे तमाम कपड़े और कुछ अन्य वस्तुएँ हैं । चालीस साल ! क्या आप महसूस कर सकते हैं कि कितने हफ्ते और कितने घंटे हुए ? मेरा दिमाग कुन्द हो गया है, मैं जल्दी में हिसाब तो नहीं लगा सकता, पर मुझे समझायें, क्या इन वर्षों के इतने ही घंटे और दिन बने कि रविवार को पहनने के लिए एक जोड़ी कपड़े और कुछ मोटी कमीजें ही उस मेहनत का वाजिब पुरस्कार मानी जायँ ? अगर आप यह कहते कि "अच्छे काम की अच्छी मजूरी' तो मैं अवश्य कहता कि आप वैसे ही जज हैं, जैसे जजों को ईश्वर पसन्द करता है ।"

तरुण जज पर यर्ने की बात का गहरा असर हुआ । उसका हृदय भर आया और उसने यर्ने के धूप से काले और झुर्रियोंदार चेहरे, धूल भरे जूते और गन्दे कपड़ों पर नजर डाली ।

"न्याय का विरोध न करो, चाहे वह कैसा भी क्यों न हो", जज ने कहा । "मनुष्य ने ही उसे बनाया है, मनुष्य ने ही उसे शक्ति और अधिकार दिया है । यदि वह तुम्हें कोड़े भी लगाता है तो उसके सामने पीठ ही रखो और ईश्वर पर भरोसा करो, यदि कभी उसका स्वरूप ऐसा विकृत हो जाय कि तुम न्याय और अन्याय में कोई फर्क न कर सको, तो भी मुँह फेर लो और उसका रास्ता बचा जाओ । इस बात पर पुनः विचार करके मैंने जैसे कहा है वैसा ही करो । भगवान तुम्हारा भला करेगा !"

यर्ने यद्यपि भयभीत था तथापि उसने बड़े आश्चर्य से जज की ओर देखा।

"तो क्या न्याय कहीं नहीं ? आपने भी उसे त्याग दिया क्या ?"

जज खामोश था।

"अब समझा", यर्ने बोला "तुमने न्याय को इस इमारत में कैद कर रखा है, जिससे वह दुनिया में फैल न सके। तुमने उसे दुहरे किवाड़ों के भीतर डाल रखा है, दुहरे ताले लगा रखे हैं, जिससे मैं उस तक पहुँच न सकूं। तुमने उसे चुरा कर अपने लिबास के भीतर छिपा रखा है, ताकि जो आँखें उसे ढूंढ़ रही हैं वे उसे देख न सकें ····· पर तुम यर्ने को भी नहीं जानते। मैं उसकी तलाश करूँगा चाहे वह धरती में उतनी ही गहराई में क्यों न दफना दिया गया हो, जितनी गहराई में मेरी मेहनत दबी पड़ी है, मैं फावड़ा लूंगा, तबतक धरती को खोदता रहूँगा जबतक मेरे ये बूढ़े हाथ ही जवाब नहीं दे देते ···· दोलिना में मेरी भेंट एक किसान से हुई थी। उसने कहा था कि तुम 'लुटेरे' हो। अपनी मूर्खतावश मैंने यही सोचा था कि "वह गलत कहता होगा। जज भले होते हैं, किसान ने ही गलत सुना या देखा होगा। तब मैंने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया था। अपने रास्ते चला आया ···· दुबारा आज यहीं मैंने एक मर्द और एक औरत की बातें सुनीं, जो तुम्हें "लुटेरे" कह रहे थे और मैंने फिर सोचा : "वे लुटेरे कैसे हो सकते हैं, यह तो न्याय और कानून का घर है ? पर कितनी बड़ी भूल थी मेरी। नहीं, यह न्यायालय नहीं, यह उस झूठ, पाखंड और डकैतियों का

अड्डा है, जिसकी रचना तुमने की है। तुम ईश्वर के शब्दों और नियमों के नहीं, शैतान, और उसके अन्याय के चाकर हो। मैंने बड़ी भूल की जो अबतक गलत रास्ते पर ही चलता रहा, पर अब सही रास्ता सूझने ही वाला है।"

यर्ने का स्वर तेज होता गया, बेकार बैठे क्लर्कों की भारी भीड़ जमा हो गयी थी। एक गजा बूढ़ा और नाटे कद का व्यक्ति, जो वहाँ से गुजर रहा था, दरवाजे के सामने आकर ठिठका और कठोर शब्दों में बोला :

"जैसे गड़रिया खेतों में शोर मचाता है, यहाँ कौन चिल्ला रहा है ?"

यर्ने, उसकी बात की ओर कोई ध्यान दिये बिना ही कहता रहा : "मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से किसी के साथ अन्याय हो, पर मैं अपनी शिकायत तो अब करूँगा। अब बोलूंगा, अब कहूँगा कि तुम लोग जज नहीं बदमाश हो, कहूँगा कि यह न्यायालय नहीं बल्कि पाखंड का अड्डा है। कहूँगा कि तुमने अपने अत्याचारों से इसे भ्रष्ट कर दिया है··· इसके लिए तुम्हें फांसी तो नहीं दी जायगी, पर हाँ, तुम्हें यहाँ से भगा दिया जायगा, अपना बोरिया बिस्तर काँधे पर लाद कर और लाठी हाथ में लेकर तुम निकल जाओगे, इस भ्रष्ट अड्डे को इस प्रकार ढहा दिया जायगा, चौरस कर दिया जायगा कि पत्थर के ऊपर पत्थर भी रखा नजर न आयेगा।"

यर्ने इस इस प्रकार कहता जा रहा था। मारे क्रोध के उसका सारा शरीर काँप रहा था।

तेरह

और तब यर्ने के साथ जो अन्याय हुआ वह अभूतपूर्व था। बड़ी मूछोंवाला एक व्यक्ति उसके पास पहुँचा और उसकी बाँह पकड़ ली।

"मेरा हाथ क्यों पकड़ते हो ?" यर्ने ने पूछा।

"विरोध मत करो, यर्ने, न्याय जैसा कहता है वैसा करो", उस तरुण जज ने कहा।

छोटे कद वाला गंजा आदमी द्वेषपूर्ण दृष्टि से देख रहा था। वह अधीर हो रहा था और उसके चेहरे पर शिकन पड़ गयी थी।

"उसके साथ इतनी हिमायत क्यों ?" वह चिल्ला उठा। "क्या उसे देखते नहीं, उसकी बातें नहीं सुन रहे ?"

हाँफते हुए, यर्ने ने एक भी शब्द नहीं कहा और चुपचाप उस व्यक्ति के पीछे हो लिया। बरामदा पार करके ज़ीने के रास्ते वे सब नीचे चले गये। न्यायालय के बाहर आकर यर्ने रुका और जो व्यक्ति उसे पकड़े लिये जा रहा था उसकी ओर घूम कर बोला :

"डाकुओं के अड्डे से तो हम बाहर आ गये, सच-सच बताइये, आपका इरादा क्या है, मुझे क्या करेंगे ?"

सबने उसकी ओर कठोरता से देखा पर, किसी ने उत्तर न दिया। ऐसा अन्याय देख कर यर्ने का हृदय भर आया और जब वह भवन के द्वार से गुजर रहा था तब सहसा उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह और बूढ़ा हो गया है : बूढ़ा

और कमर झुकी हुई।

"भले ही आप बदमाश और गये-गुजरे किस्म के लोग हों," उसने बड़ी नम्रता से कहा, "बोलिये ! बतलाइये भला मेरा इस तरह से अपमान क्यों कर रहे हैं ; न्याय के बारे में डाकू के भी अपने विचार हो सकते हैं, और कानून भी हो सकता है। वह अकारण न तो किसी को जान से मारता है और न किसी को लूटता है। मैंने आप लोगों का क्या बिगाड़ा ?"

उन्होंने उसकी ओर बड़ी कठोरता से देखा पर कोई उत्तर न दिया।

"सुनो, बदमाशो, भले ही तुम जवान और ताकतवर हो, यर्ने बूढ़ा और कमजोर है, पर तुमको इस चौगान में भुट्टे की तरह बिछा सकता है और घूसे के जोर से अपने अधिकारों की रक्षा कर सकता है। पर न्याय उस पके फल की तरह नहीं कि पत्थर मार कर गिराया जा सके। ईश्वर ने मेरे लिए जो रास्ता बनाया है वह लम्बा है, उसने मुझ पर जो बोझ लाद दिया है वह भारी है, पर मैं अपने ही रास्ते जाऊँगा, उस बोझ को ठिकाने तक पहुँचाऊँगा।"

यर्ने की इस बात में उतना ही आत्मविश्वास भरा था, जितना अपार कि उसका शोक था !

यर्ने को जो लोग लिये जा रहे थे, उन्होंने एक दरवाजे का ताला खोला। यर्ने को उस कोठरी में धकेल कर द्वार का ताला फिर बन्द कर दिया गया। यर्ने अब एक अंधेरे कमरे में था। उसमें ऊबड़-खाबड़-सी एक मेज, दो छोटी चारपाइयाँ और दो चौड़े बेंच पड़े थे। दीवालों पर भी कोई

सजावट न थी। वह बिल्कुल शून्य, अन्धे के नेत्रों की भांति प्रतीत हो रही थीं। कोने में क्रास पर चढ़ी ईसा मसीह की

कोई मूर्ति भी न थी। दरवाजे में लोहे की मोटी छड़ें लगी हुई थीं।

एक खाट पर चीथड़ों में लिपटा हुआ एक व्यक्ति बैठा था—बूढ़ा था या जवान, राम जाने। उसके छितरे बाल इधर-उधर बिखर रहे थे। उसके चेहरे पर, बकरे के मुँह की भांति, बाल थे जो बढ़ कर ठोढ़ी के नीचे छोटी दाढ़ी के रूप में लटक रहे थे। उसने आँखे मटकाते हुए बड़ी प्रसन्नता से यर्ने का स्वागत किया।

"नमस्कार, आगन्तुक ! भला तुमने क्या चुराया ?"

घूर कर बड़ी शोकसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए यर्ने दूसरी चारपाई की ओर बढ़ गया। अपनी गठरी, बड़े बूट

और टोपी खाट पर रखदी और लाठी को कोने में खड़ा कर दिया।

चीथड़ों में लिपटा हुआ वह व्यक्ति बराबर हँस रहा था और यर्ने से काफी घुलता-मिलता, उसका नजदीकी-सा बनता जा रहा था। लेकिन, था वह ऐसा वाहियात व्यक्ति कि शायद रास्ता चलते समय उससे मिलना भी कोई पसन्द न करता।

"अरे, बूढ़े बाबा ! बोलते भी नहीं। अगर हमें अपने पापों का फल भुगतना पड़ रहा है तो यह न्याय है, हमें उस न्याय से खुश होना चाहिये, फिर चाहे, वह मीठा हो या कड़वा, और जजों की तारीफ के गीत गाने चाहिएँ !"

यर्ने दूसरी खाट पर घुटनों पर दोनों कुहनियां टेक और हथेलियों पर मुँह रख कर बैठ गया।

"तुम्हारे साथ कौन-सा अन्याय हुआ है ?" यर्ने ने पूछा। बदमाश जोर से हँस पड़ा।

"कैसा अन्याय ? बिल्कुल नहीं, मैंने चोरी की, पकड़ा गया, और यहाँ लाकर बन्द कर दिया गया। सब ठीक है और होना भी यही चाहिये। तुम्हारा क्या ख्याल है कि अगर मैंने रुपया चुराया हो तो वे मुझे ऐसा करने के लिए और रुपये इनाम में देते ? यही काफी है कि उन्होंने मुझे खाना और पानी दिया—हालांकि खाना बहुत अच्छा नहीं, बिस्तर भी गुदगुदा नहीं, लेकिन, जब मैं अवारागर्दों की तरह घूमता और चोरी करता था तो हालत इससे भी पतली थी। इसलिये मैंने सारी स्थिति पर बार-बार विचार किया और अब मैं अपने हाल पर खुश हूँ। पर तुम्हारा क्या हाल है ? क्या

तुमने हाल में ही, इस बुढ़ापे में, हाथ आजमाना शुरू किया है, जो इतना मुँह बिचकाते हो ?"

यर्ने सर नीचा किये बैठा रहा। कोई उत्तर न दिया। बदमाश अपनी मस्ती में ही कहता जा रहा था :

"पाप का भारी बोझ आत्मा को दबोचे रहता है, उस बोझ को वहीं पड़ा रहने दो, दफनाया हुआ और बन्द ! पश्चात्ताप, हाँ, चाहो, तो करो, पर चिन्ता न करो, कभी नहीं। मुझे देखो ! मैं दुष्ट, दुःखी प्राणी, ईमानदार लोगों के रास्ते की एक अड़चन ! लेकिन, मैं कभी चिन्तित नहीं होता; कल और परसों मेरा क्या होगा ? कल वे मुझे सजा सुनायंगे, अगले दिन जेल में बन्द कर देंगे, और जब छूटूगा तब वे मुझे कहाँ भेजेंगे ? वहाँ भेजेंगे, दुनिया में किसी ऐसी जगह, जहाँ मेरे जाने की कोई आवश्यकता नहीं। उस गाँव में जो चारों ओर से पहाड़ों से घिरा होने के कारण उन्हींके बीच में ओझल हो गया होगा, उस गाँव में जहाँ ईश्वर ने खिलवाड़-खिलवाड़ में ही मुझे रच डाला था·····मेरे पिता, माता, भाई या पड़ोसी कौन और कहाँ हैं ? नहीं कोई नहीं। वहाँ सभी लोग जंगली हैं, जो मेरे प्रति शहरवालों की अपेक्षा कहीं अधिक निर्दयी हैं।·····उनके बारे में किसी को क्या पता ? उनकी बोली भी कौन समझता है ?·····वे मुझे वहीं भेज देंगे, इस बहाने से कि जैसे मेरी जन्मभूमि है, मैं यह जानना चाहूँगा ? केवल ईश्वर ही बता सकता है। परन्तु वे कह सकते हैं, 'तुम उसी दूरस्थ इंडीज के निवासी हो और हमेशा वहीं रहो।'·····पर मैं ल्युबलियाना का ही निवासी बना रहना चाहता हूँ·····मेरे लिए ल्युबलियाना ही उचित स्थान है।

और तुम ? तुम्हें कहाँ भेज रहे हैं ?"

"भेज रहे हैं, मुझे ?" यर्ने बोल उठा। "कहीं नहीं। मेरा घर है और मेरे अधिकार भी।"

उस बदमाश ने पैर उठाये और फिर टांग-पर-टांग चढ़ा कर खूब जोर से हँसा।

"तो फिर तुमने चोरी क्यों की ?"

"चुराया, क्या ?"

यर्ने तन कर बैठ गया, दोनों हाथ घुटनों पर रख लिये। "मैंने कुछ नहीं चुराया। मैं न्याय की तलाश में हूँ, और मुझे मिलेगा भी। बदमाशों ने उसे छिपा रखा है, और मुझे यहाँ लाकर कैद कर दिया है। पर समय आयगा जब द्वार खुलेंगे।"

इधर वह बदमाश यर्ने की बातों पर इस प्रकार हँस रहा था जैसे कोई बूढ़ा किसी बच्चे की बात पर हँसता है।

"और उन्होंने तुम्हें कैद कर रखा है, और द्वार खुलेगा ?"

वह व्यक्ति बराबर हँस रहा था, हँसी के मारे उसका सारा शरीर हिला जा रहा था। यद्यपि उसका मुँह खुला हुआ था तथापि ठहाके का एक भी स्वर बाहर नहीं निकल रहा था।

"अच्छा मुझे यकीन है कि तुमने चोरी नहीं की, जो न्याय पर भरोसा रखता है वह न तो चोरी ही करेगा और न हत्या ही। पर तुम्हारा दुर्भाग्य, कि तुम, निर्दोष होते हुए भी, न्याय के रास्ते में आये। न्याय की देवी बड़ी कठोर और यथार्थवादी है। तुम उसकी इच्छा के विरुद्ध काम करो यह उसे पसन्द नहीं। यद्यपि निर्दोष हो तुम, तथापि यदि न्याय की देवी तुम पर हत्या का आरोप लगाती

है, तो तुमने हत्या की है : इसमें सन्देह नहीं, अगर वह तुम पर चोरी का आरोप लगाती है तो तुमने दोनों हाथों चोरी की है। तुम कसमें उठा सकते हो कि तुमने न तो हत्या की है और न कुछ चुराया ही है, तो भी तुम्हें संकट झेलने पड़ेंगे। बुद्धिमानी इसी में है कि अपराध स्वीकार करलो ; किसी मिथ्या अपराध को—किसी काल्पनिक डकैती को भी स्वीकार कर लो क्योंकि ऐसा करके ही तुम यह साबित कर सकोगे कि तुम बड़े नम्र हो और किये पर पश्चात्ताप करते हो·····न्याय की देवी ऐसे लोगों को पसन्द करती है, फिर चाहे वे कितने ही बड़े पातकी क्यों न हों। मेरी बात सुनो और जैसा मैंने किया वैसा ही करो। मैं न्याय के साथ बड़ी अक्लमन्दी से निर्वाह करता हूँ, हम दोनों की पड़ोसियों की भांति निभती है, जो कभी-कभी झगड़ते भी हैं। ठीक है, पर दोनों में एक दूसरे के प्रति सद्भावना रहती है। आज न्याय मुझे दुख दे रहा है, कल मेरी बारी आयेगी, और इस प्रकार हम दोनों ही संतुष्ट रहते हैं। मैंने चाहे कोई गलती न भी की हो, पर यदि न्याय की गिरफ्त में आ जाता है तो न्याय के निर्णय को मान कर फौरन ही उसको गिरफ्त में आ जाता हूँ। इस प्रकार हम दोनों का पिंड एक दूसरे से छूट जाता है। हम बुद्धिमानों का न्याय के साथ निभने का यही तरीका है। न्याय की देवी से चाहे तुम निर्दोष ही क्यों न हो, झगड़ा मत करो ····· अब बताओ तुम्हारे साथ क्या हुआ। संभव है कि मैं तुम्हें कोई सलाह दे सकू।"

यर्ने ने आपबीती कह सुनायी। वह बदमाश इतना

हँसा कि उसकी आँखों से आँसू बह चले । आँखें ढोर-ढोर कर वह यर्ने की ओर आश्चर्य से इस प्रकार देख रहा था मानो किसी तमाशे में उसे कोई हब्शी दिख गया हो । वह झूम रहा था और घुटनों पर हथेली से ताल दे रहा था ।

"अच्छा यर्ने जब वे तुम्हें रिहा करदें तो मेरे साथ आ जाना । मैं तुम्हें दुनिया दिखाऊँगा, हम मेलों में जायँगे, गाँव के त्यौहारों के दृश्य देखेंगे, और मैं तुम्हें गिरजाघरों के द्वार पर भी लोगों को दिखाऊँगा । हम जीवन के बाकी दिन गुजारेंगे और उसी बीच संभव है कि जिस न्याय को तुम खोज रहे हो वह भी तुम्हें मिल जाय । न्याय की देवी भी हमारे साथ होगी, वह भी हमारे साथ मेलों-ठेलों की सैर करेगी । तब, बंजारों को अपनी सिरकी उठा कर भागना पड़ेगा, मदारी को अपने बंदर-बंदरिया को लेकर दूर जाना पड़ेगा, ऊँटों की कोई बात भी न पूछेगा और लोग भालू से घृणा करेंगे । हम तीनों—तुम, न्याय की देवी और चतुर आदमी मैं—खूब पैसा कमायेंगे और खूब हँसी-खुशी से रहेंगे ।

यर्ने पत्थर की तरह शांत और निश्चल था । हाँ, उसके चेहरे पर गंभीर्य और शोक के चिह्न अंकित थे ।

"ईश्वर को लालच मत दो," यर्ने बोला, "उसने तुम्हारे कन्धे पर जो बोझ डाला है वह भारी हो सकता है, तुम्हारा दिल इतना कठोर हो गया है कि बिना विचारे तुम ईश्वर की निन्दा में ऐसे शब्द कहते हो । तुमने अन्याय ही देखा है, न्याय कभी जाना ही नहीं और इसीलिये तुम न्याय पर यकीन ही नहीं करते । तुमको रोटी के बदले पत्थर मिले ।

शायद इसीलिये तुम यह मान बैठें कि दुनिया में रोटी नाम की कोई चीज़ ही नहीं। ईश्वर ने न्याय बनाया है। उसके शब्द उस बारिश की उस फुहार की तरह नहीं जो आकाश से धरती पर पड़ते ही सूख जाती है। ईश्वर के शब्द पहले की तरह आज भी गूंज रहे हैं और तुमको अगर उन शब्दों पर भरोसा है तो उनकी भनक तुम्हारे कानों में पड़ेगी और तुम्हारे सारे दुःख दूर हो जायँगे।"

उस बदमाश की हँसी बन्द थी और वह आँखें फाड़े यर्ने की ओर मन्त्र-मुग्ध सा देख रहा था।

"दोस्त, तुम मेरे साथी बनने के काबिल नहीं। ऐसे उचक्कों की काली छाया में भी दर्शन न हों, इस आशय से मैं रात में भी अपना मुँह दीवाल की ओर फेर लूंगा···लेकिन, एक बात कह दूं कि तुम्हारी बातों से मुझे सांत्वना नहीं मिली। अगर तुम्हारी बात मैं सुनता और अगर तुम्हारे ही सिद्धान्त को मैं भी अपना लेता तो, मेरे दोस्त, जानते हो मैं क्या करता? मैं सीधा जाता और सबसे पहले, जितने जज हैं, उनको, और कानून-कायदे चलाने में इन जजों की मदद करने वाले सभी लोगों को कत्ल कर देता। इनके साथ ही कुछ ऐसे लोगों को भी मौत के घाट उतार देता जो जन्म से ही मेरे दुश्मन रहे हैं। इसके बाद मैं घर में भी आग लगा देता और कहता : देखो! ईश्वरी न्याय धरती पर आ गया है, मैंने उसके शब्द सुने हैं, उसकी आज्ञा का पालन किया है।·····तुम्हारे सिद्धान्तों पर अगर चलता तो मुझे विवश होकर यही करना पड़ता। लेकिन, ईश्वर ने मुझे अपना दूत बनाकर नहीं भेजा : मैं तो भिखारी बना रहना ही अच्छा समझता हूँ। अगर न्याय

मुझे मारता है तो मैं उसका उपहास करूँगा। बस इतना ही! अच्छा बन्दगी! भगवान एक दिन तुम पर भी रहम करेगा। तुम भी घुटने टेकोगे और रोओगे, यर्ने बोला····· "दिल को हँसने के बजाय रोने से कहीं अधिक शांति और सान्त्वना मिलती है। आँसुओं की धार में सारे पाप, सारे अन्याय धुल जाते हैं।"

रात हो चली थी। यर्ने और उसके साथी की बातचीत बन्द हो गई। उस बदमाश ने, हताश होकर, दीवाल की ओर मुँह फेर लिया। यर्ने बिस्तर के आगे घुटने टेक कर बैठ गया और काफी देर तक भगवद्-भजन करता रहा। थकान से वह चूर-चूर था, अन्तर के बोझ से वह झुककर धरती से जा लगा था, पर उसका विश्वास अटल था।

चौदह

दूसरे दिन प्रातःकाल यर्ने ने अभी आँखें खोली ही थीं कि वे लोग उसे लेने आ पहुँचे। यर्ने को यह भी पता न था कि वे उसे कहाँ ले जायंगे।

"बोलो, पैगम्बर, बोलो!" बदमाश ने सींखचों के भीतर से आवाज दी। यर्ने कोठरी से बाहर हो चुका था। कोठरी का द्वार बन्द हो गया। उसने बदमाश की बात पर ध्यान न दिया। आदेशानुसार सर झुकाये हुए यर्ने खामोश चला जा रहा था।

"तुम मुझे कहाँ लिये जा रहे हो? भगवान के लिए इतना तो बता दो।"

यर्ने को कोई उत्तर न मिला। जो लोग उसे लिये जा रहे थे उन्होंने गुस्से से उसकी ओर देखा, उसी भाँति जैसे ईसा के पहरेदारों ने ईसा को देखा था।

यर्ने डरा तो नहीं पर उसका दिल किसी अपशकुन की आशंका से और दिमाग दुःखद विचारों से भर गया। उसको लगा मानो रात भर में ही उसका मन दुर्बल हो गया है और आँखों की रोशनी तथा सुनने की शक्ति भी क्षीण हो गयी है। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर उसने उन बदमाशों का, जिनको वह जानता-पहचानता तक नहीं, क्या बिगाड़ा है वे उसके साथ ऐसा दुर्व्यवहार क्यों कर रहे हैं, उसे एक जगह से दूसरी जगह क्यों घसीटते फिरते हैं? वह इस

बात की भी कल्पना न कर सका कि आखिर इतनी निर्दयता पूर्वक, एक शब्द भी कहे बिना, वे उसे कहाँ लिये जा रहे हैं। वह न्याय का भूखा था। वह यह भी न जान पाया कि आखिर वे उसके साथ करना क्या चाहते हैं।

"क्यों", वह सोच रहा था, "आखिर मैं इस अनजाने नगर में आया ही क्यों, ऐसे लोगों के बीच में क्यों आ पड़ा, जिनकी भाषा, जिनके कानून-कायदे मैं खुद नहीं समझता? इनसे कोई बात पूछो उसका जवाब न देंगे, इनका अभिवादन करो, कोई जवाब न देंगे, इनका न्याय तुम्हारे न्याय जैसा नहीं··· लेकिन यर्ने बराबर सोच रहा था, "ईश्वर की मरजी के बगैर कुछ नहीं होता·····न्याय की गली काफी ढालू और कंकरीली-पथरीली है।" अपने इसी विश्वास को लिए यर्ने अपने उत्पोड़कों के पीछे सर झुकाये चला जा रहा था। उसे यकीन था कि एक दिन उसके दुखों का अन्त होगा। ईश्वर अपने स्वामिभक्त नौकर की ओर से हमेशा के लिए आँख फेर कर बैठा नहीं रहेगा।

लोग उसे लिये जा रहे थे। उसे एक के बाद दूसरे जज के पास ले जाया गया, ठीक उसी तरह जैसे लोगों ने ईसा को एक के बाद दूसरे धर्म-गुरु के पास घुमाया था। उन्होंने उससे सवाल किये, उसने सवालों का जवाब दिया। हर बार बिना किसी तरह की धृष्टता या गुस्से के उसने सच बात ही कही। अदालतों के कई अफसरों और जजों को उसने देखा, उन्होंने भी उसकी ओर कठोरता से देखा, रुखाई से बात की और उसे भगा दिया। लोग उसे एक के बाद दूसरे द्वार तक घसीटते रहे। उसने कोई उज्र न किया, किसी तरह की धमकी

भी न दी। उसका दिल साफ और विश्वास अटल था। उन्होंने जब उसके साथ ऐसा बर्ताव किया जैसा कि लोग बेवकूफों या बच्चों के साथ करते हैं, तब भी उसने कोई विरोध नहीं किया। न्याय की खातिर उसने उपहास और घृणा बर्दाश्त की, कोई आपत्ति न की। जब यह कहा गया कि उसका दिमाग खराब है और वह जाहिल बच्चे की तरह है, तब भी उसने कोई शिकायत नहीं की।

"ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि देगा और क्षमा करेगा", यर्ने ने सोचा। "जब मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लूंगा, जब न्याय मिल जायगा, तब वे एक दूसरे को देखकर अपने किये पर खुद शर्मिन्दा होंगे, अपनी भूल स्वीकार करेंगे। ईश्वर ने और किसी सत्य पर पर्दा नहीं डाल रखा। उसने अकेले न्याय को छिपा रखा है। निस्सन्देह ईश्वर की इच्छा भी है कि ज्ञान का प्रकाश फैलने तक ये लोग जड़ता के अंधकार में भटकें।"

उसको आशा थी। केवल शरीर से वह बूढ़ा और कमजोर था। अन्याय के बोझ से उसकी कमर झुक गई थी। यर्ने को अन्त में जब एक जज के सामने पेश किया गया तो उसकी गर्दन और कमर दोनों झुकी हुई थीं, हाथ कांप रहे थे, घुटने भी जवाब दे रहे थे, और वह बोझ, जिसे अब तक उसने कभी महसूस न किया था, असह्य प्रतीत हो रहा था·····नौ दिन तक वे उसे एक अदालत से दूसरी अदालत तक दौड़ाते रहे, एक जज के बाद दूसरे जज के सामने पेश करते रहे और उसे एक अन्याय के बाद दूसरे अन्याय के दर्शन होते रहे। नावें दिन, उन्होंने उसे खूब तंग किया था और लुटेरों तथा बदमाशों के साथ बन्द कर दिया था।

यर्ने को एक अधीर, बूढ़े और कठोर जज की अदालत में पेश किया गया था। जज को देखने मात्र से डर लगता था।

"भगवान के नाम पर तुम यहाँ से चले जाओ, और याद रखो तुम्हारी शक्ल दुबारा दिखाई न दे" जज ने कहा। यर्ने हिले-डुले बगैर पत्थर की मूर्ति-सा सीधा खड़ा था। जज की ओर वह भयभीत-सा ताक रहा था।

"क्या ? मेरी दुःखद यात्रा का अन्त यही है ? आपका अंतिम फैसला क्या यही है ?" यर्ने ने पूछा। उसकी आवाज में कम्पन था, मानो कोई घोर पापी ईश्वर के सामने खड़ा हो "तब, श्रीमान्, मुझे यह सब कष्ट क्यों ? आपने मेरा क्या किया ?"

"तुम्हें खुद शर्म आनी चाहिए कि बुढ़ापे में इस तरह आवारागर्दी करते घूमते हो और शहर के रहने वालों तथा किसानों को तंग करते रहो। अपने घर लौट जाओ, भगवान का भजन करो और मौत का इन्तजार करो।"

यर्ने, आँखें फाड़े हुए, उस कठोर जज के और पास जाकर धीमे तथा विनीत स्वर में बोला :

"शायद मैंने आपकी बात ठीक से नहीं सुनी····या, हो सकता है कि मैं उसे समझ नहीं सका, क्योंकि मैं बूढ़ा हूँ। साफ सुन नहीं सकता और बातें याद नहीं रहतीं। क्या आपने आखिरी बात बस यही कही कि "भाग जाओ और यहाँ दुबारा शक्ल न दिखाना ? और आप कहते हैं कि यह फैसला आप ईश्वर और बादशाह के नाम पर सुना रहे हैं।····और यही सुनाने के लिए आपने मुझे चोरों और लुटेरों के साथ बन्द रखा। इतने दिन तक सोच-विचार करने के बाद क्या इसी

बुद्धिमानी का परिचय देने के लिए·····मैं दुखी होकर, पर बड़ी उम्मीद के साथ इन्तजार करता रहा और आप अपने कमरे में बैठे मेरे सीधेपन की हँसी उड़ाते रहे·····क्या सचमुच मैंने आपकी बात ठीक से नही सुनी ? आप इतना अन्याय तो नहीं कर सकते : जज, आपका न्याय ऐसा तो नहीं हो सकता।"

"भागो ! निकल जाओ, रास्ता नापो। न्याय से झगड़ो मत," जज बोल, "खुदा का शुक्र करो कि तुम्हें पागलखाने में न भेज करके, क्योंकि तुम्हारे लिए उपयुक्त स्थान वही है, तुम्हें एक मसीही की भांति खाट पर मरने की छूट दी जाती है।"

"तुमने एक बूढ़े का उपहास किया है," यर्ने चिल्ला उठा। जज की बात से उसे दुःख हुआ और उसका दिल बैठ गया। "ईश्वर तुम्हें क्षमा करे," यह कहते हुए वह अदालत से बाहर हो गया।

नौ दिन तक यर्ने न्याय करनेवालों के दरबार में न्याय की खोज में लगा रहा। लेकिन अब न्यायालय का अहाता पार करते हुए उसे ऐसा लगा कि उसकी कमर काफी झुक गई है, वह बूढ़ा हो गया है और उसका सर चकरा रहा है। अदालत से निकल कर जब यर्ने सड़क पर पहुँचा तो काफी दिन बाकी था। यर्ने को अजीब शक्लें नजर आयीं। ऐसा एक भी व्यक्ति न दिखाई पड़ा जिसकी सहानुभूति उसे प्राप्त हो सकती। इतना बड़ा शहर अन्यायी जजों से भरा पड़ा था। सभी ने यर्ने को बदमाश समझा, किसी ने उससे बात तक न की। किसी ने उसके साथ न्याय न किया। अपने भय और शोक में यर्ने ने यही महसूस किया कि एक ईश्वर को छोड़कर बाकी सभी उससे किनारा कर चुके हैं।

थोड़ा आराम करने और तरोताजा होने के लिए वह शराब के ठेके में घुस गया। दीवाल पर उसने एक सुन्दर तस्वीर लटकती देखी। उस तस्वीर को देखते ही उसमें हर्ष और आशा का संचार हो गया। यह तस्वीर बादशाह की थी। चेहरे से न्याय परायणता और दया टपक रही थी।

"न्याय की तलाश में गलत रास्ते पर क्यों गया ?" यर्ने ने सोचा। "निकला तो था गिरजाघर में पहुँच कर प्रार्थना करने के उद्देश्य से, पर वहाँ जाने के बजाय चोरों और लुटेरों के गिरोह में जा फँसा·····ईश्वर ने मुझे सही रास्ता दिखाया,

लेकिन मैं गलियों और पगडंडियों में चक्कर काटता रहा। मैंने उसे कोसने की धृष्टता की; मूर्ख ही जो ठहरा। प्यास से मर रहा था, लेकिन साफ चश्मे का पानी पीने के बजाय मैंने गन्दे पोखरे का पानी पिया। परन्तु अब मुझे सही रास्ते का पता चल गया, भगवान का शुक्र है।"

क्षण भर भी आराम किये बिना ही वह उठ खड़ा हुआ, गठरी कन्धे पर रखी और बादशाह से भेंट करने को चल पड़ा।

पन्द्रह

दु:खद विचरों से यर्ने का मस्तिष्क चकरा रहा था..... इतना सब होने के बाद, क्या यह सम्भव है कि सोते में भी, जो स्वच्छता का स्रोत है, साफ पानी न हो, कि सूर्य प्रकाशहीन हो, और उस स्थान पर भी, जो न्याय का आदि-स्रोत है, न्याय न हो ?"

बूढ़े और शिथिल यर्ने के लिए यह रास्ता था बहुत लम्बा। वह अपरिचित प्रदेश और अपरिचित गाँवों को पार करता हुआ पैदल यात्रा कर रहा था। सन्ध्या समय, जब द्वाभा का प्रकाश खेतों में फैल रहा था, यर्ने के पैर जवाब दे चले। वह विवश होकर सड़क के किनारे गड़े हुए मील के पत्थर पर बैठ गया। ठीक उसी समय एक युवा यात्री उसके निकट पहुँचा। इस व्यक्ति के पैरों में जूते न थे, धूल से भरा था, और शायद भूखा भी था। लेकिन उसके नेत्र उल्लास से चमक रहे थे।

"दादा, कहाँ जा रहे हो ?"

"बादशाह से मिलने।"

"ओह ! बादशाह जिस नगर में रहता है वह तो यहाँ से बहुत दूर है, और आप थक गए हैं। अगर आप रात-दिन बराबर चलते रहें तो भी वहाँ पहुँचने में कम-से-कम एक हफ्ता लगेगा।"

"मरने से पहले मुझे वहाँ पहुँचना है।"

"पर आप बादशाह से मिलने क्यों जा रहे हैं ?"

"मैं उनसे न्याय करने को कहूँगा, और कहूँगा कि जिन लोगों ने मेरा मजाक उड़ाया है उनको दंड दिया जाय और सबक सिखाया जाय।"

युवक ने उस बूढ़े, झुके हुए और दुःखी व्यक्ति की ओर देखकर अविश्वास से सर हिलाते हुए कहा :

"आप कभी सफल न होंगे, बादशाह तक पहुँचना बड़ा कठिन है।"

"कठिन ? क्यों ?" यर्ने ने आश्चर्य से कहा। "बादशाह न्याय की मूर्ति है। अगर न्याय वहाँ नहीं तो फिर और कहाँ होगा ? तुम क्या यह चाहते हो कि मैं भिखमंगों के पास भीख माँगने जाऊँ ? दरअसल अपनी बेवकूफी से ही मैंने अपना उपहास कराया। परन्तु मैं उन लोगों को दोष नहीं दे सकता। अब तो मैं उसी के पास जाऊँगा, जो गरीबों और भूखों के साथ न्याय करता है।

"दादा, उनसे तुम्हारी भेंट कभी न हो सकेगी।"

"क्यों ? क्या वह गगन चुम्बी दीवालों या पहाड़ जैसे ऊँचे अहातों के भीतर रहते हैं ?"

"सिपाही पहरा देते हैं और किसी को उनके पास पहुँचने नहीं देते।"

"क्या ? वे बादशाह से भी अधिक शक्तिशाली हैं, क्या वे मालिक के भी मालिक हैं ? अपनी अज्ञानतावश तुम यह क्या बक रहे हो ?.....न्याय की तलाश में निकला हूँ, वह मुझे बादशाह के पास ही मिलेगा। वह न्याय करता है, क्षमा करता है, पर सीखचेदार दरवाजों, दीवारों या बाढ़ के पीछे बैठकर वह ऐसा कैसे कर सकता है ? मैं चलता रहूँगा, ईश्वर

ने मुझे आशा बँधाई है कि अपने लक्ष्य तक पहुँचने से पहले मैं नहीं करूँगा ।"

यर्ने की बात सुनकर युवक गहन शोक में डूब गया ।

"दादा, रस्ता लम्बा और दुःखदायी है । यह मार्ग ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों और दूर-दूर तक फैले मैदानों में से होकर जाता है । मैं एक महीने से बराबर चल रहा हूँ, यदा-कदा थोड़ा आराम कर लेता हूँ, पर मेरे पैरों की हालत देखो । और तुम घर से अभी मुश्किल से सौ कदम ही चले होगे कि थक कर मील के पत्थर पर बैठ गये हो, मुश्किल से सौ कदम और चलोगे कि लड़खड़ा कर सड़क के किनारे की नाली में गिर पड़ोगे·····तुम्हारे पास जो पैसा है उसका उपयोग करो और रेल से सफर करो । और जब शाही नगर में पहुँच जाना तथा वहाँ जब तुम्हें जीवन का महान् दुःख देखने को मिल जाय तब मुझे याद कर लेना । संभव है कि खोज करने पर तुम्हें कुबेर का कोष मिल जाय, पर न्याय भी मिल सकेगा, इसमें सन्देह है ।"

यह कहते हुए वह नवयुवक चँलता बना । यर्ने कातर दृष्टि से उसे देखता रहा ।

"निरा बच्चा, कितना उदार", यर्ने ने सोचा, पर वह भी अन्याय के बोझ से दबा है । उसकी माँ कहाँ ? दर-दर भटक रहा है, गिरे हुए पत्ते के समान जिसकी परवाह किसी को नहीं, जिसको हर कोई ठुकरता है·····वह शायद अब भी अपनी माँ की याद करता होगा जो उसके लिए बिलख रही होगी,' क्योंकि उसने कहा : "इस संसार में, यहाँ तक कि बादशाह के यहाँ भी न्याय नहीं ।"

यर्ने जब उठ कर खड़ा हुआ तो उसे ऐसा महसूस हुआ मानो वह अस्वथ और भयभीत है। उसके पैर पत्थर की तरह जड़ हो गये थे, घुटने अकड़ गये थे और उससे चला नहीं जा रहा था।

मैं घर से खुवों तक जाता था। अभी मुश्किल से उतनी ही दूरी तय की होगी पर अब यदि मैं सौ कदम और चलूंगा तो जरूर गिर पड़ूंगा।"

यर्ने के कन्धों पर अब केवल उसकी गठरी ही नहीं वरन् अन्याय का बोझ भी था। लम्बे और कष्ट पूर्ण दिनों का भारी भरकम बोझ भी उसे पीसे डाल रहा था, इतना भारी मानो आधी दुनिया टूट कर उसी पर आ पड़ी हो।"

अन्धेरा हो चुका था। यर्ने गांव के बाहर एक सराय में पहुँचा। सराय के मालिक ने सन्देह भरी दृष्टि से उसे देखा और उसकी बीवी ने बड़ी अनमनी होकर उसका स्वागत किया। बीमार और धूल से भरा हुआ यर्ने उस भिखारी जैसा जान पड़ता था, जो इतनी रात बीते लेटने या हमेशा के के लिये सो जाने के उद्देश्य से पुआल के दो पूरे के सिवाय और कुछ न माँगता।

"मुझे इस प्रकार मत देखो, डरो मत," यर्ने ने मेज पर चाँदी के कुछ सिक्के रखते हुए कहा, "मैं यात्री हूँ। नौकरों से न्याय न पाकर अब उसके लिए मालिक के पास जा रहा हूँ।"

"तुम कहाँ जा रहे हो", सराय के मालिक ने पूछा।

"उस नगर को जहाँ बादशाह रहता है। शाही नगर वियना को खुद बादशाह के पास", यर्ने ने उत्तर दिया, "लोगों

ने मेरे अधिकारों को स्वीकार नहीं किया, उन्होंने मेरे साथ न्याय नहीं किया, बादशाह ही मेरे साथ पूरा न्याय करेगा ।"

सराय का मालिक और उसकी पत्नी एक दूसरे को देख कर कुछ मुसकरा उठे ।

यर्ने के पैरों में छाले पड़ गये । उसने जूते उतार दिये, ताकि कुछ आराम मिले । वह बैठा था । उसकी रक्तहीन सफेद झुकी हुई, सूखी, भद्दी अंगुलियाँ काँप रही थीं । मानो वह सौ साल का बूढ़ा हो और कब्र में पैर लटकाये बैठा हो ।

"मेरे लिए रोटी का एक टुकड़ा और एक गिलास शराब ला दो", उसने सराय के मालिक से कहा । "मैं यहीं इसी बेंच पर पड़ रहूँगा । हाँ कल सबेरे मुझे रेलवे स्टेशन तक पहुँचाने के लिए अपनी गाड़ी तैयार रखना ··· मैं इतना बूढ़ा और

थका हुआ हूँ कि शाही नगर तक पैदल जा सकना मेरे लिए

नामुमकिन है, ऊँचे ऊँचे पहाड़ों और विस्तृत मैदानों को पार कर सकना मेरी सामर्थ्य के बाहर है।"

उसने चटपट रोटी खाई और बेंच पर लम्बा पड़ रहा। तत्काल ही वह ऐसी प्रगाढ़ निद्रा में डूब गया मानो उसके शरीर में अब जान बाकी न हो और सारे विचार सदा के लिए शान्त हो गये हों।

× × ×

यर्ने की महान् यात्रा शुरू हुई।

दूसरे दिन सबेरा होते ही सराय का मालिक उसे घोड़ा-गाड़ी पर बिठाकर एक विचित्र नगर को ले गया। बड़े और प्रायः जन-शून्य मुसाफिर-खाने में वह प्रतीक्षा करता रहा। आखिरकार उसका नम्बर आया और वह डिब्बे में जा बैठा। रेल के उस डिब्बे में अन्धेरा था, दुर्गन्ध आ रही थी। सीटों पर अजनबी लोग बैठे थे और जोर-जोर से बातें कर रहे थे। किसी ने उसका अभिवादन नहीं किया, उन्होंने कनखियों से उसकी ओर इस प्रकार से देखा जैसे वह किसी गैर के कमरे में घुस आया हो। शर्माते हुए वह एक किनारे पर बैठ गया और गठरी को अपने घुटनों पर रखली। एक झटका लगा, पहिये लुढ़के, ब्रेकों से चूं-चूं का स्वर निकला और गाड़ी चल पड़ी। यर्ने ने सर से टोपी उतार ली और क्रास का चिह्न बनाया।

"हे भगवान्", उसने प्रार्थना शुरू की, "मेरी अन्तिम यात्रा सफल हो। मेरे अधिकार अब तुम्हारे हाथ में हैं, तुम्हीं उनकी रक्षा करना।"

"कहाँ जा रहे हो ?" यर्ने के पास बैठे यात्री ने प्रश्न किया।

"वियना"

यात्री ने यर्ने को, उसके जीर्ण-शीर्ण और धूल से भरे कपड़ों को, घुटनों पर रखी हुई गठरी को और कन्धे पर टंगे हुए जूतों को बड़े आश्चर्य से देखा।

"वियना किस लिए जा रहे हो ?"

"बादशाह से भेंट करने।"

यर्ने की इस बात से यात्री हँस पड़े।

"भाई, अपनी कहानी सुनाओ, कहो।"

और जब यर्ने ते उनको अपने अधिकारों और कष्टपूर्ण यात्रा की कहानी सुनाई तो वे सब इतने ज़ोर से हँसे मानो किसी शेखचिल्ली की कहानी सुन रहे हों।

"मैं कोई मज़ाकिया गाना नहीं गा रहा, और न नाच रहा हूँ," यर्ने गुस्से से चिल्ला उठा, पर वे सब और ज़ोर से ठहाका मार कर हँसने लगे।

"अच्छा भाई यह बताओ कि जब तुम बादशाह के सामने पहुँचोगे तब क्या करोगे ? क्या कहोगे ? बताओ। तुम्हारी बातों से थोड़ा समय ही कटेगा।"

यर्ने झुँझलाकर बोला, "तुम कैसे आदमी हो ? कहाँ पैदा हुए हो ? कहाँ के रहने वाले हो तुम, जो न्याय का इस प्रकार मजाक उड़ाते हो, मानो वह कोई शराबी हो ? किस ईश्वर की पूजा करते हो, जो उसके नियमों का ऐसा उपहास करते हो ?"

यात्रियों का कौतूहल बढ़ा और वे सब यर्ने को इस प्रकार देखने लगे मानो वह किसी नुमाइश का कोई अजीब प्राणी हो। यर्ने के पास बैठे हुए यात्री ने अपनी जेब टटोली और एक

बोतल निकाल कर यर्ने के आगे रख दी।

"लो, थोड़ी सी ब्रान्डी पी लो, जिससे बात करते-करते थको नहीं। तुम्हारे किस्से बड़े दिलचस्प हैं।"

यर्ने ने न तो ब्रान्डी की बोतल ली और न ही उसने कोई जवाब दिया। बस गुम हो रहा।

"क्या हो गया ? इस दुनिया पर रहने वालों को क्या हो गया है ?" उसने विचार किया, "क्या वे अन्याय के दास या कठपुतले हैं, जो न्याय का अपमान करते और उसकी हँसी उड़ाते हैं, क्या इन सबने इतनी मुसीबतें झेली हैं कि हताश हो चले हैं और अब ईश्वर तथा उसके आदेशों के प्रति अपनी आस्था भी खो बैठे हैं ? वे मेरी हँसी इस प्रकार उड़ा रहे हैं मानो मै उस न्याय की खोज में नहीं जा रहा हूँ, जिसे ईश्वर ने हम मनुष्यों के लिए इस धरती पर भेजा है और जिसे बादशाह ने चलाया है, बल्कि किसी परी देश की खोज में निकला हूँ।"

कुछ यात्री उतरे, दूसरी गाड़ी में सवार हुए। ये ऐसी भाषा बोल रहे थे जो यर्ने की समझ में न आयी। रात हो चली थी। यर्ने ने खिड़की के बाहर दृष्टि दौड़ाई। चन्द्रमा की किरणें एक अपरिचित प्रदेश पर अठखेलियाँ कर रही थी। सहसा उसे जान पड़ा कि उसके पैरों के नीचे डिब्बे की फर्श फट गयी, वह उसमें बेसहारा धँसा जा रहा है। वह एक अजीब भय से भयभीत हो उठा। उसने अपने पास बैठे हुए यात्री से, जो शहर का रहने वाला था और झपकियां ले रहा था, पूछा :

"शहर, शाहीनगर अभी और कितनी दूर है ?"

यात्री ने उनींदी आंखें खोलीं, यर्ने की ओर देखा, और सर हिला कर कोने की ओर और खिसक गया।

"वह मेरी बात नहीं समझता," यर्ने ने सोचा, "और अगर वह मेरे शब्दों को समझता भी हो तो भी मेरी भावना को नहीं समझ सकता। वह न्याय को भी नहीं समझ सकता, क्योंकि इस दुनिया में ऐसे भी लोग हैं, जिनके कानून-कायदे भिन्न हैं, जो किसी और ईश्वर को मानते हैं ..... हे ईश्वर! मुझ पर, एक गरीब पर दर-दर की ठोकरें खाने-वाले व्यक्ति पर जो तेरे न्याय का भूखा है, रहम कर!"

इस एकाकीपन से यर्ने भयभीत था। उसने दोनों हथेलियाँ घुटनों पर रख कर प्रार्थना शुरू कर दी, अपनी आशा को और बलवती बनाने के लिए।

सारी रात इसी प्रकार कटी। वह इतना थका हुआ था कि हाथ-पैर हिलाने में भी असमर्थ था, दृष्टि भी धुंधली हो गयी थी और गाड़ी के पहियों की खटपट भी नहीं सुनाई पड़ रही थी। उसे यह सब एक भयावने स्वप्न जैसा लग रहा था।

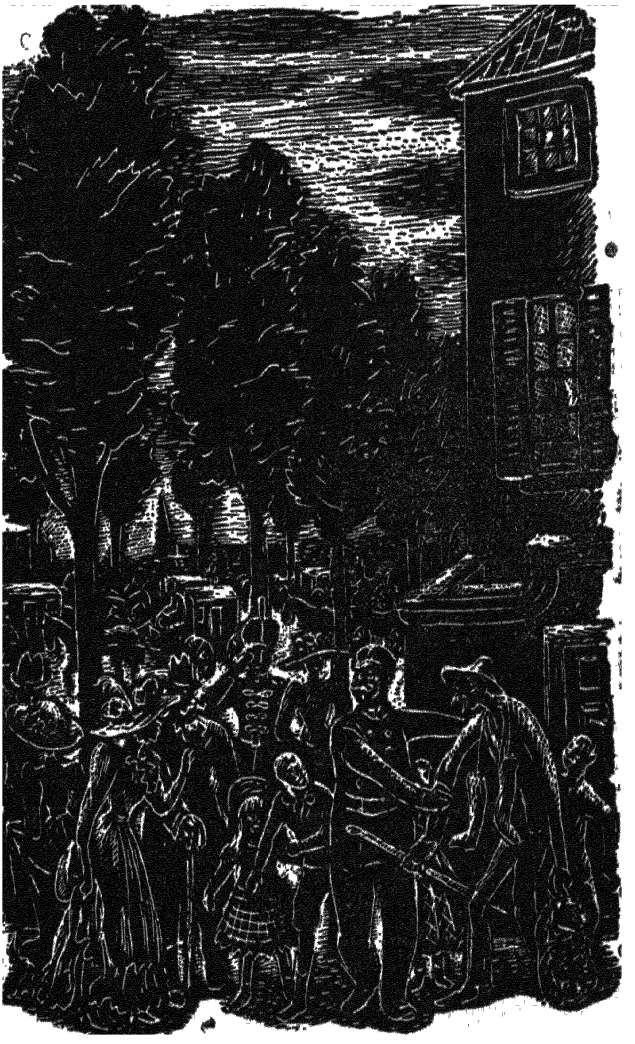

सोलह

नगर के ओर छोर का कहीं पता न था। घोर कोलाहल से आकाश गूंज रहा था, अजीब बोलियाँ और भाषाएँ सुनाई पड़ रही थीं। यह भयावनी नगरी ही वियना शहर था····· कोई कहाँ शरण ले ? कहाँ छिपे ?·····

यर्ने चौड़ी सड़कों पर भटकता रहा। सड़क के दोनों किनारों पर ऊँचे-ऊँचे महल खड़े थे, अगणित गाड़ियाँ एक दिशा से आतीं और सरसराती हुई दूसरी दिशा की ओर निकल जातीं। म्लान मुख, अपरिचित लोगों की, बाढ़ उमड़ती हुई सड़क के पार्श्व-पथ में चल रही थी, मानो दो अनादि-अनन्त जलूस मिलते और बढ़ते हुए दो दिशाओं में जा रहे हों··· वह कैसे और किससे रास्ता पूछे ? टोप हाथ में लिये हुए यर्ने उसी भीड़ में टकराता—धक्के खाता चल रहा था, उसे लगा मानो वह इस भीड़ में खो गया है और इन लोगों के बीच आकर शर्मिन्दा हो। उसे ऐसा लगा मानो प्रार्थना के समय वह गिरजे की वेदी के सामने नंगे पैर और अस्त-व्यस्त चला आया हो।

कहाँ ठहरे, कहाँ आराम करे ? उसको ऐसा लगा मानो उसने तेज शराब पी ली है और अब सारा हृदय तिरता-सा, क्षण-प्रतिक्षण बदलता-सा नजर आ रहा है। लोगों का कद भी अस्वाभाविक रूप से लम्बा जान पड़ा, वे किसी स्वांग में भाग लेने के लिए उसीके अनुकूल कपड़े पहने, लम्बे डग बढाते छाया की भाँति तेजी से गुजरते जा रहे थे। यर्ने शराब के

नशे में चूर व्यक्ति की भाँति चला जा रहा था। उसके पैर जवाब दे चले थे। वह लड़खड़ाया। थोड़ा चलता और फिर रुक जाता। हर कदम पर उसे ऐसा लगता कि मुँह के बल अब गिरा, अब गिरा।

अनन्त पथ! अपार भीड़! थकान और ऊब से परेशान यर्ने मन-ही-मन प्रार्थना के कुछ पद गुनगुना उठा, दीनता से उसका हृदय भर गया। उसने महसूस किया कि ईश्वर बहुत दूर है और संभवतया इस नगरी में की जाने वाली प्रार्थना उस तक नहीं पहुँचती। काफी देर तक चलते रहने के बाद उसे लगा मानो अब पैर नहीं उठते। एक दीवार का सहारा लेकर वह खड़ा हो गया, सर और घुटने झुक गये। पास से गुजरने वाले व्यक्ति उसे आश्चर्य से देखते। एक व्यक्ति ने, जिसका कद छोटा था और जिसने सुनहरे फ्रेम का चश्मा लगा रखा था, उसके पास आकर अपरिचित भाषा में कुछ पूछा। पर यह देखकर कि यर्ने ने उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया वह अपनी राह चला गया। सहसा अजीब ढंग के कपड़े पहने हुए लम्बे कद का एक आदमी उसके सामने आ खड़ा हुआ। उस व्यक्ति ने यर्ने की बांह पकड़ ली और उसे ले चला।

"कहो, तुम मुझे कहाँ ले चल रहे हो ?" यर्ने ने उसके साथ चलते हुए लड़खड़ाती जबान से पूछा। "मुझे फौरन बादशाह के महल में ले चलो। जल्दी करो, मैं बहुत थक गया हूँ।"

पुलिस वाले ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने केवल कन्धे हिला दिये : लोग पीछे-पीछे चल पड़े। वे यर्ने और उसकी गठरी को बड़े आश्चर्य से देख रहे थे।

यर्ने और पुलिस वाला दोनों एक बड़े भवन में घुसे : वहाँ बूढ़े आदमी से कई सवाल किये गये पर वह एक को भी न समझ सका····और जब यर्ने ने अपनी बात कहनी शुरू की तो, न तो किसी ने उसकी बात समझी और न किसी ने कोई जवाब ही दिया।

"तब हम क्यों झगड़े ? हम एक दूसरे को क्या कहें ? हम न तो एक दूसरे को जानते हैं, न एक दूसरे की बात समझते हैं। पहले कभी मिले नहीं और न इसके बाद ही कभी मिलेंगे। भगवान तुम सब का भला करे, और मुझे मेरा न्याय मिले····लम्बी यात्रा के बाद मुझे क्षण भर यहाँ आराम कर लेने दो। मैं बूढ़ा हूँ और ज्यादा चल नहीं सकता। जरा देर आराम कर लेने के बाद मैं चल दूंगा। मुझे यकीन है कि जिस लक्ष्य को पाने के लिए मैंने इतने कष्ट सहे, उसके मिलने से पहले ईश्वर मुझे शरीर में शेष पौरुष से वंचित नहीं करेगा।"

वह एक बेंच पर बैठ गया और अपनी गठरी तथा जूते फर्श पर रख दिये। अफसरों ने उसे देखा और उनके चेहरों पर अवहेलना की हँसी खिल उठी। इसके बाद वे सब यर्ने के अस्तित्व को भूलकर अपने-अपने काम में लग गये। लेकिन थोड़ी देर आराम करने के बाद जब वह नींद से भारी आँखें मूंदने ही वाला था कि उन्होंने उसे उठा दिया। उसकी गठरी, जूते और लाठी उठा ली, कोट की जेबें टटोलीं, जेब में पड़े रुपये-पैसे और एक चाकू निकाल लिया और उसे बाहर लाकर एक अजीब-सी गाड़ी में बैठा दिया। गाड़ी चारों ओर से बन्द थी। वह चलती-फिरती जेब जैसी जान पड़ती थी।

"यह क्या कर रहे हो ? कहाँ लिये जा रहे हो ?" जो व्यक्ति उसे लिये जा रहा था, उससे यर्ने ने प्रश्न किया। पर उस कर्मचारी ने कोई जवाब न दिया, यर्ने की ओर देखा तक नहीं

यर्ने डरा हुआ था और उसने मन-ही-मन प्रार्थना की।

"हे भगवान्, रक्षा करो ! बूढ़ा हूँ, बहुत बूढ़ा, पैर सूज गये हैं, तलवों में छाले पड़ गये हैं और अब ज्यादा चलने से लाचार हूँ। दुःख की भी सीमा है। तूने मेरे भाग्य में इतनी मुसीबत नहीं लिखी, जितनी मैं बरदाश्त न कर सकूं, तू गलती नहीं कर सकता। मुझे यह भी पसन्द न होगा कि तेरी इच्छा पूरी होने से पहले ही मैं मर जाऊँ। ऐसा कर कि मैं जल्दी ही तेरा हुक्म सुन सकूं और फिर सदा के लिए शान्ति से रह सकूं। हे ईश्वर ! मेरे हाथ काँपते हैं, कानों से सुनाई नहीं पड़ता, और दुःख देखते-देखते अन्धा हो चला हूँ। अपने सेवक को सांत्वना दे, जिससे मैं जल्दी ही खुशी खुशी तेरे दरबार में हाजिर हो सकूं। दया कर, हे भगवान्, और अन्धकार में भटकने वालों तथा तेरे नियमों का गलत अर्थ लगाने वालों को सत्य का प्रकाश दिखा।"

एक भवन के सामने पहुँच कर गाड़ी रुकी। यर्ने को एक कमरे में ले जाया गया। एक दुबला-पतला लम्बा आदमी आया। उसकी दाढ़ी, काली और नुकीली थी, आँखों पर चश्मा चढ़ा हुआ था। देखने से तो यह व्यक्ति वकील जान पड़ता था और यर्ने की भाषा जानता था।

"क्या बात है ?" आते ही वह चीख उठा।" कहाँ के रहने बाले हो, वियना में तुम्हारा क्या काम ? सारी बातें

संक्षेप में सिलसिलेवार कहो। लम्बी कहानी सुनाने की जरूरत नहीं।"

एक व्यक्ति को अपनी जैसी जबान बोलते सुन कर यर्ने को ढाढ़स बँधा। उसे खुशी हुई।

"महाशय, अच्छे मिले," वह बोला, "हालांकि आपने बड़े रूखेपन से बात की है फिर भी आपको धन्यवाद! और ठीक भी है एक ऐसे आदमी से, जिससे कभी भेंट नहीं हुई, और जो कोई बदमाश या बेकार किस्म का आदमी हो सकता है, उससे हाथ कौन मिलायेगा? ···· मेरा नाम यर्ने है। मै बेताइनोवा का रहने वाला हूँ। मैं यहाँ न्याय की तलाश में आया हूँ। न्याय की खोज में मै उस स्थान पर आया हूँ जहाँ भूखों और प्यासों के साथ न्याय किया जाता हो।"

वकील क्रोध से भर कर बड़े आश्चर्य से यर्ने की बात सुनता रहा। यर्ने ने शुरू से आखिर तक अपनी कथा कह सुनायी।

"देखिये! उन्होंने मुझे धोखा दिया। जिस न्याय की मुझे दरकार है, जिसके लिए मैं तड़प रहा हूं, उसको ही उन्होंने छिपा रखा है। लेकिन, मैं जानता हूँ कि जज लोग न्याय को हमेशा छिपा कर रख नहीं सकते। न्याय को छिपाने की कोशिश करना तो इतनी ही बड़ी बेवकूफी है जितनी कि सूरज को बुझाने की कोशिश करना। और इसीलिये मैंने उनकी बात नहीं मानी। मैंने ईश्वर की आवाज सुनी और बादशाह से भेंट करने के इरादे से लम्बी और कष्टपूर्ण यात्रा पर निकल पड़ा। बादशाह ही सारे न्याय का स्रोत है। मुझे उसके पास ले चलो।"

दुभाषिये ने यर्ने की ओर देखा, अजीब हँसी हँसकर जाने को उद्यत हुआ।

"भगवान के लिए जरा ठहरिये," भयभीत यर्ने बोल उठा, "आपने अभी मेरी पूरी बात नहीं सुनी, मेरी प्रार्थना अभी आपने नहीं सुनी। नरक जैसे इस नगर में मेरी मदद कौन करेगा ? अगर आप मसीहा हैं तो मेरी सहायता कीजिये, अगर आप के हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम है तो मुझे न्याय के दरबार तक पहुँचा दीजिये।"

यर्ने का गला भर आया।

"ठीक है ! हम तुम्हें न्याय के दरबार तक ले चलेंगे। तुम्हारा दिमाग भी दुरुस्त हो जायगा", वकील यह कहता हुआ चला गया।

वकील के जाते ही कुछ कर्मचारी यर्ने को बाहर ले जाने के लिए कमरे में दाखिल हुए। कुंजियाँ खनकीं, दरवाजा खुला और यर्ने को एक ऐसी कोठरी में झोंक दिया गया, जैसी जीवन में उसने पहले कभी नही देखी थी। यर्ने ने सहमी हुई दृष्टि से चारों ओर देखा। भूरी और नंगी दीवारें, सुनसान कोठरी, गन्दे कम्बलों से लदे चौड़े और छोटे तख्त; और कुछ नहीं। एक मेज़ भी नहीं। दरवाज़ा बन्द हो चुका था। तीन आदमी और थे—गन्दे, घृणास्पद चेहरे, कठोर, शैतान जैसी आँखें। ऐसी अजीब सूरतें यर्ने ने कभी नहीं देखी थीं।

"क्या ?" उसने सोचा, "क्या ? ये लोग ईश्वर को नहीं जानते ? क्या इनको कभी न्याय की ख्वाहिश नहीं हुई ? इनकी वाह्य आकृति मात्र गन्दी है या इनका अन्तर भी फरेब, पाप, क्रूरता और कुकर्म में डूबा पड़ा है ?

भय की गहन कल्पना ने जैसे उसके सारे शरीर को अपने चंगुल में दबोच लिया था और उसने महसूस किया कि उसके हृदय में भयंकर टीस जलती हुई बढ़ती जा रही थी।

"हे भगवान! न्याय देने के बदले लोगों ने मुझे इन उचक्कों, हत्यारों और लुटेरों के बीच क्यों डाल दिया?"

एक आदमी अपनी जगह से उठा, आगन्तुक की ओर अन्यमनस्क भाव से देखकर वह कुछ बोला। लेकिन यर्ने कुछ समझ न सका।

यर्ने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाये बिना ही कोठरी के सबसे किनारे वाले बेंच पर जा पहुँचा। उसके मन में घोर निराशा के सिवाय अब आशा का लेश भी बाकी न था। वह इतना दुःखी था कि प्रार्थना भी न कर सका। बेंच पर पड़ रहा, दोनों हाथों से मुँह छिपाकर खूब रोया·····

यर्ने उन लुटेरों और हत्यारों के बीच पड़ा-पड़ा तीन दिन तक घुटता रहा।

सत्रह

चौथे दिन सूर्योदय के साथ ही फाटक खोल दिया गया। यर्ने को उसकी गठरी-बूट, लाठी, चाकू और रुपये पैसे लौटा दिये गये और बिना कुछ कहे-सुने उसे कोठरी से बाहर निकाल दिया गया।

"अब कहाँ ले चले, भले मानसो ?" उसने बड़ी दीनता से पूछा, पर उन्होंने न तो उसकी ओर देखा और न कोई जवाब ही दिया। उन्होंने उसे एक गाड़ी पर बैठा दिया और लंकापुरी जैसे भयावने वियना शहर के गुल-गपाड़े और टेढ़ी-मेढ़ी चौड़ी सड़कों को चीरते हुए ले चले।

"भले मानसो, मुझे कहाँ घसीटे लिये जा रहे हो ? ईश्वर के लिए इतना तो बता दो।" यर्ने ने प्रार्थना की। वे लोग उसे चोरों और आवारागर्दों की मंडली के साथ रेल के डिब्बे में ठूंस रहे थे। यर्ने की ओर न तो किसी ने देखा और न किसी ने कोई उत्तर दिया। यह तमाम कार्यवाही, जिसकी देख-रेख में हो रही थी और इन तमाम लोगों की निगरानी के लिए जो व्यक्ति तैनात किया गया था वह एक कोने में खड़ा यर्ने को बड़ी कठोर दृष्टि से देख रहा था : इंजन ने सीटी दी और जब रेल के पहिये चले तो कैदी हँस पड़े। यर्ने ने शरमाते हुए चारों ओर दृष्टि दौड़ायी। सहसा उसकी दृष्टि एक ऐसे व्यक्ति पर पड़ी जिसकी आँखें दुःख में डूबी और आँसुओं से गीली थीं।

उसके साथ भी अन्याय हुआ है, इन लोगों ने उसे भी अनुचित ढंग से दबाया है, यर्ने ने सोचा, उसके युवा मुख से शौक ही झलक रहा है। उसका दिल काला नहीं। "कहाँ जा रहे हो दोस्त ?" यर्ने ने प्रश्न किया। युवक ने उसकी ओर देखा पर कोई उत्तर नहीं दिया। हाँ, उसकी आँखों में जो शोक उमड़ रहा था वह यर्ने के नेत्रों में समा गया, दोनों एक दूसरे को समझ गये।

इस प्रकार वे एक जगह से दूसरी जगह और एक गाड़ी से दूसरी गाड़ी पर ले जाये गये। सूरज डूबा, रात आयी, कुछ लोग रेल से उतरे और कुछ नये व्यक्ति सवार हुए।

"अब कहाँ ?" भयभीत यर्ने ने पूछा, पर किसी ने जवाब न दिया।

आखिरकार जब वह रेल से उतरा तो चारों ओर बड़े आश्चर्य से नजर दौड़ायी। कई साल पहले उसने इस इलाके को देखा था। अतीत की धुधली स्मृति उसके मस्तिष्क से स्वप्नवत् घूम गयी। वह काँप उठा और उसने पास ही खड़े एक व्यक्ति से, जो देखने में बड़ा कठोर जान पड़ता था, प्रश्न किया।

"भाई, क्या तुम मसीही हो ? यदि हाँ, तो बोलो, बताओ यह कौन सी जगह ?"

"यह तुम्हारी जन्म-भूमि है, दो घंटे में हम रेशिये पहुँच जायंगे। रास्ता लम्बा और बियाबान है, अगर तुम्हारी जेब में पैसे हों तो किराये की गाड़ी ले लो।"

"पर रेशिये किस लिए ?" यर्ने बोल उठा। "मेरा घर वहाँ तो नहीं है। मेरा न तो वहाँ कोई भाई है और न बहन !

रेशिये में मेरा क्या काम ?····· रेशिये कौन भेज रहा है ?"

पुलिस अफसर ने आहिस्ते से कन्धे हिलाये, पाइप में तम्बाकू भरी और उसे सुलगाया।

"तंग मत करो, आओ चलें। मैं तुम्हें रेशिये पहुँचा दू, उसके आगे, तुम्हारा मालिक भगवान है, फिर तुमसे मेरा कोई वास्ता नहीं।"

यर्ने कुछ न बोला। हालांकि वह दुःखी और अस्वस्थ था फिर भी लम्बे डग बढ़ाते हुए चलने लगा। चारों ओर का दृश्य बड़ा सुहाना था, खेतों में हरियाली थी और चरागाहों में बड़ी-बड़ी घास खड़ी थी। पर यर्ने को जैसे इस सबसे कोई वास्ता ही न था, वह आँखें नीची किये हुए चला जा रहा था। पलकें बन्द थीं। टेढ़ा-मेढ़ा मार्ग पहाड़ी के ढाल से होकर जाता था। दूर घाटी में आबाद एक गाँव के सफेद घर झलक रहे थे। यर्ने और उसको लाने वाला व्यक्ति दोनों मेयर के घर पहुँचे। यर्ने को देखते ही मेयर चौक पड़ा।

"हमने तुम्हें पहले कभी नहीं देखा", वह बोला, "बस्ती का कोई भी आदमी तुम्हें नहीं जानता। इस बुढ़ापे में तुम हम सब पर बोझ बनने क्यों आये ?"

"मैं भीख नहीं माँगता और न तुम पर बोझ बन कर रहूँगा," यर्ने ने जवाब दिया। "मुझे एक बोझ पुआल दे दो, जिस पर मैं लेट सकूं। मैं थका हूँ।"

वह खलिहान में जाकर सूखी घास पर लेट रहा। बड़ी देर तक उसे नींद न आयी·····वह मन-ही-मन ईश्वर से बातें करता रहा। लेकिन, अब वह ईश्वर से भी उस ढंग से बात नहीं कर रहा था, जैसे कि एक नौकर अपने मालिक से करता

है, वरन् इस दबदबे से बात कर रहा था जैसे कोई महाजन अपने कर्जदार से करता है।

"अपना वायदा अब पूरा कर। तूने इंसानों के लिए न्याय बनाया, पर इंसान ने ही उसे छिपा दिया। मैं कांस्टेबिल, जज और यहाँ तक कि बादशाह से भी न्याय न पा सका। कांस्टेबिलों ने मुझे हत्यारों के साथ कैद किया, जजों ने मेरा उपहास किया, और मुझे धोखा देकर बादशाह से मिलने से रोका गया। तू न्यायी है। तूने ही न्याय को इस लोक में भेजा है, तूने ही उसकी पुष्टि की है.....अब तू ही उसकी रक्षा कर, तेरे हुक्मों का पालन हो.....अब मेरी दृष्टि सिर्फ तुझ पर टिकी है। मैं तेरा सेवक हूँ। इस दुनिया में मेरा कोई दोस्त नहीं, दिन दहाड़े मेरे अधिकार मुझसे छीन लिये गए हैं। तेरे नियम मेरे हृदय में बसे हैं और मैंने तेरे वचनों को सुना है; अपने शब्द....हे ईश्वर, मुझे फिर सुना, जिस से मैं तुझ पर भरोसा रख सकूं। हे सर्वशक्तिमान, निष्कपट न्यायाधीश, अपना हाथ बढ़ा।"

इस प्रकार काफी रात तक यर्ने ईश्वर से बिनती करता रहा। पौ फटते ही वह उठा ओर मेयर से पूछे बिना ही रेशिये से चल पड़ा। दिन भर में तीन जगह विश्राम करके गोधूलि से पहले ही वह बेताइनोवा पहुँच गया।

"कौन ? यर्ने हो क्या ?" गाँव वालों ने देखते ही पूछा। "वह फटे हाल है, बड़ा भयावना जान पड़ता है, कमर काफी झुक गयी है, बहुत बूढ़ा हो गया है, बाल भी पक गये हैं" वह बोले।

यर्ने को गुजरता हुआ देख कर गाँव वाले बड़े आश्चर्य

स आपस में कह रहे थे, अरे क्या वह यर्ने है ?"

यर्ने ने किसी को भी आँख उठाकर नहीं देखा, न किसी से दुआ बन्दगी की और न किसी को कुछ जवाब ही दिया। जिस दिशा में उसका सफेद घर था, वह वहाँ भी नहीं गया। वह सीधा पादरी के निवास-स्थान पर पहुँचा।

गाँव के गिरजे का पादरी बड़ा भला आदमी था। उसका चेहरा लाल और शरीर मोटा था। वह सदा हँस-मुख-दिखाई देता था।

"अरे कौन, यर्ने ?" उसने पूछा। "कहाँ भटकते रहे। काफी बूढ़े और कमजोर नजर आते हो ?"

यर्ने दलहीज में खड़ा था। उसने कमर सीधी की और उसकी आँखें चमक उठीं।

"मैं बैठूंगा नहीं, आराम भी नहीं करूँगा, देर हो रही है, और में काफी थका हुआ हूँ। सारी दुनिया मथ डाली। कांस्टेबिलों से जजों तक, और जजों से बादशाह तक पहुँचा। पर मैं कहता हूँ, इस दुनिया में न्याय नहीं। उसे तो मानो जमीन में सैकड़ों हाथ नीचे दफना कर ऊपर से पहाड़ रख दिया गया है। मुझे इस धरती पर अब न्याय की खोज नहीं करनी। कांस्टेबिलों और जजों ने ईश्वर को तलाक दे दी है और उसके आदेशों को भुला दिया है। मैं तो अब एक ईश्वर से ही न्याय चाहता हूँ। वही सबसे बड़ा जज है। ईश्वर की बातें जिस पोथी में लिखी हैं उसे खोलो, तुम उस के प्रतिनिधि हो, उसके शब्द मुझे समझाओ और उसी ईश्वरी न्याय के आधार पर फैसला करो।"

पादरी यर्ने के करीब आ गया। उसे इस बूढ़े पर दया

आ गयी। यर्ने के हाथ-पर-हाथ रखते हुए बोला :

"यर्ने ऐसा मत कहो। लोगों ने तुम्हारे साथ बुरा किया। उन्होंने तुम्हारे साथ मसीहियों जैसा व्यवहार नहीं किया। उन्हें क्षमा करो। ईशु ने तो उनको भी क्षमा किया था, जिन्होंने उसे सूली पर चढ़ाया था।"

यर्ने ने पादरी के हाथ-से-हाथ छुड़ा लिया, उसकी ओर

देखा। यर्ने की आँखें ज्वर के कारण सुर्ख थीं। वह बड़े कटु शब्दों में बोल उठा। ऐसे कटु वचन कहते हुए यर्ने को कभी किसी ने नहीं सुना था :

"मैं दया या क्षमा की बातें नहीं कर रहा, बल्कि न्याय की बात कह रहा हूँ····ईश्वर के शब्दों और आदेशों के आधार पर फैसला करो। तुम उसके प्रतिनिधि हो। ईश्वर तुम्हारे ही मुंह से तुम्हारी ही जबान से बोलेगा। मुझे बताओ : ईश्वर किसके पक्ष में है ? मेरे पक्ष में या पुलिस वालों और जजों के पक्ष में ? मैं थका हुआ हूँ, अपने घर जाकर अपने बिस्तर पर आराम करना चाहता हूँ।"

"यर्ने तुम्हारे इरादे नेक नहीं," पादरी बोला।

"मैंने जो पूछा उसका उत्तर दो।"

"अन्याय भी बरदाश्त करो, ईश्वर अन्त में सब ठीक कर देगा।"

"तो क्या तुम यह कह रहे हो कि उसके न्याय का कहीं कोई छोर नहीं ?···उसका न्याय कहाँ है ? उसके न्याय के मुताबिक मेरा घर मेरा है या नहीं ? बोलो, तुम ईश्वर के दूत हो। ईश्वर के नाम पर बोलो।"

यर्ने की कड़ी दृष्टि पादरी पर गड़ी थी, उसका चेहरा पत्थर की भाँति कठोर था, हृदय में दुःख और विश्वास में संघर्ष मचा था।

"ईश्वर न्यायी है या नहीं ?"

"यर्ने, तुम ईश्वर की निन्दा कर रहे हो," डरा हुआ पादरी एक कदम पीछे हट कर बोला। "अगर तुम ईश्वर के दरबार में हो तो अकड़ कर मत बोलो बल्कि घुटने टेको,

विनती करो और गिड़गिड़ाओ ।"

मैं न तो बिनती करूँगा और न गिड़गिड़ाऊँगा । मेरा अधिकार ईश्वर का अधिकार है । उसने जो कुछ बनाया है उसे अब नष्ट नहीं कर सकता । ईश्वर मेरा कर्जदार है । मैं अब घुटने नहीं टेकता, खड़ा हूँ और हुक्म देता हूँ ।"

यर्ने का चेहरा सुर्ख हो गया, भौहें तन गयीं और ओठ काँप उठे ।

"जिसके लिए मैंने इतनी देर प्रतीक्षा की वही बात कहो क्या न्याय नाम की कोई चीज है ? क्या ईश्वर है ?"

इतना सुनते ही पादरी काँप उठा । उसके काँपते हुए हाथ उठ गये, वह दीवाल के सहारे जा खड़ा हुआ ।

"ईश्वर निन्दक, चल भाग यहाँ से ।"

यर्ने धीरे से मुड़ा और बाहर चला गया । वह लम्बे डग बढ़ाता हुआ जा रहा था, उसकी कमर अब झुकी न थी, वह अस्वस्थ भी नहीं था । उसके हृदय में अब न तो कोई आशा शेष थी और न अब वहाँ दुःख का ही लेश था ।

अठारह

रात गहरी हो चली थी, ग्रामीण और खेतों में काम करने वाले घरों को लौट रहे थे···शीतार की छत पर सहसा लाल ज्वाला उठी। जिह्वाकार लपट आकाश की ओर दौड़ चली, अस्तबल से एक और लपट उठती दृष्टिगोचर हुई, खलिहान में भी, और फिर दोनों चौबारों में भी लपटें उठती देखी गयीं। ज्वाला आकाश की ओर लपकती हुई नजर आ रही थी, जान पड़ता था कि वह धरती मे निकलकर आकाश को छू लेना चाहती थी। जलती हुई बल्लियाँ अलात्चक्र की भाँति हवा में उड़ती हुईं हरे-भरे खेतों में गिर रही थीं, जान पड़ता था कि किसी बलशाली के हाथ उन्हें उखाड़ कर फेंक रहे हों···

यर्ने ने सारे घर में आग लगा दी थी।

गाँव वाले डरे हुए से देख रहे थे। इस प्रचंड ज्वाला को कौन बुझा सकता था, हवा ने आग के बादलों से सारी घाटी को ढक दिया था। हवा के वेग से आग पक्षी की भाँति ज्वाल युक्त पंख फैलाये नक्षत्र-विहीन आकाश में उड़ रही थी। लोग भयभीत, निष्प्रभ, नंगे और खामोश खड़े थे। भीरु

मन से ईश्वर से दुआ माँग रहे थे। सहसा यर्ने, जिसका लम्बा कद, हाथ और बाल झुलसे हुए थे, उनके बीच आ खड़ा हुआ। वह जी खोलकर हँस रहा था।

"मैं अपना हुक्का लेने गया, दोस्तो हुक्का, जिसे जाते समय मैं यहीं भूल गया था। मैं नहीं चाहता कि वह भी जल जाय···शानदार दृश्य है न ? मेरा घर अच्छी तरह से जल रहा है न ? यह आग भली लगती है न ? जिनके पास हुक्का और चिलम हो सुलगा लें, आग की कोई कमी नहीं।"

उसने हुक्का मुँह में लगा लिया और दोनों हाथ कमर पर रख कर इस अग्निकाँड को देखने लगा।

जोर का हल्ला मचा।

यर्ने ने घर में आग लगा दी है।

और यर्ने की आँखों के आगे धरती जैसे घूम रही थी। वह लड़खड़ाकर गिर पड़ा। "मारो ! मारो !" लोग चिल्लाये।

उन्होंने उसे जलते हुए लट्ठों से पीटा, नालदार जूतों से उसे ठोकरें लगायीं। उसे उन्होंने पैरों तले रौंदा। रौंद रहे थे वे उसे और गा रहे थे।

"आग में फेंक दो" कोई चिल्लाया।

"आग में झोंक दो" सब चिल्ला उठे। उन्होंने झुलसे हुए और खून से लथपथ यर्ने को पकड़ लिया, कुछ दूर घसीटा, और फिर उठा कर जोर से लपटों में फेंक दिया।

लपटों से चिनगारियाँ उठीं, ऊँची, काफी ऊँची। यर्ने के हत्यारे जब लपटों से बाहर निकले तब उनके हाथ और चेहरे झुलसे हुए थे·····

और इस तरह बेताइनोवा की इस घटना का अन्त हुआ।

भगवान् यर्ने का, उसके जजों का और यहाँ तक कि सारे पापियों का भला करे।